# आओ मिलकर आगे बढ़ें।

स्व. श्री खड़क सिंह पारधी
संस्थापक ट्रस्टी, पंवार छात्रावास,बालाघाट

स्व. श्री थानसिंह बिसेन
प्रथम विधायक, वारासिवनी विधानसभा

अच्छी योजना बनाना बुद्धिमान का काम है, पर उसको ठीक से पुरा करना धैर्य और परिश्रम का काम है।

आप सभी सामाजिक बंधुओं को
**पोवारी उत्कर्ष पत्रिका**
**विमोचन व**
**दिपावली पर्व**
की हार्दिक
शुभकामनाएं।

**गौरव मोहन सिंह पारधी**
**समाजसेवी**

निवास : ग्राम अंसेरा, पो. : जरामोहगांव , तह : वारासिवनी, जि. : बालाघाट

CERTIFICATE OF NOMINATION

Presented to

C K Lac Processing Industry

For successfully being part of Nomination Phase of

INDIA 5000 BEST MSME AWARD

INDIA 5000 BEST MSME AWARDS

चक्रवर्ती सम्राट राजाभोज

स्थापना तिथि - २० जनवरी २०२०

# राष्ट्रीय पोवारी साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था

प्रधान संपादक
श्री. ऋषि बिसेन

संपादक
डॉ.शेखराम येळेकर

संपादक
सौ.छाया सुरेन्द्र पारधी

सह- संपादक
डॉ.विशाल बिसेन

सह- संपादक
सौ.वर्षा पटले रहांगडाले

सह- संपादक
सौ. स्वाती कटरे तुरकर

सह- संपादक
चि. सोनु भगत

✻ कार्यकारणी मंडल ✻

अध्यक्ष
श्री ऋषि बिसेन

उपाध्यक्ष
डॉ. शेखराम येळेकर

उपाध्यक्ष
सौ. छाया सुरेन्द्र पारधी

सचिव
चि. सोनु भगत

सदस्य
डॉ. शेखर पटेल

सदस्य
डॉ. विशाल बिसेन

सदस्य
श्री नरेश गौतम

सदस्य
सौ. वर्षा पटले रहांगडाले

सदस्य
श्री राजेश बिसेन

सदस्य
डॉ. हरगोविंद टेंभरे

सदस्य
सौ. स्वाती कटरे तुरकर

सदस्य
श्री गुलाब बिसेन

सदस्य
सौ. ज्योत्सना पटले टेंभरे

✻ प्रकाशक ✻

राष्ट्रीय पोवारी साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था

✻ मुखपृष्ठ संपादक ✻

प्रकिप (पिंटू) कोठे, तिरोडा

✻ मुखपृष्ट छवी ✻

कु. समृद्धी सुरेन्द्र पारधी

✻ मुद्रक ✻

राजु तुप्पट आर्ट, खैरलांजी रोड तिरोडा, जि.गोंदिया

९३२६८०४०७०

photographybharat76@gmail.com

**गौरीशंकर बिसेन**
विधायक
मध्यप्रदेश विधान सभा
क्षेत्र क्र.-111 बालाघाट
(पूर्व सांसद/पूर्व मंत्री म.प्र.शासन)

डी/4, 74 बंगले,
स्वामी दयानंद नगर, भोपाल
वार्ड नं.22, सर्किट हाऊस रोड
बालाघाट (म.प्र.) 481001
मोबा.: 9425139726
दूरभाष : 07632-241226
फैक्स : 07632-248900

क्रमाँक

दिनाँक : 27.09.2020

## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय पोवारी, साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था द्वारा दिपोत्सव विशेष वार्षिक सामाजिक पत्रिका "**पोवारी उत्कर्ष**" का प्रथम संस्करण दीपावली के पावन पर्व पर प्रकाशित किया जा रहा है ।

पंवार समाज ने राष्ट्र एवं प्रदेश के शिक्षा, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्व दायित्वों का निर्वहन करते हुए अपना अमूल्य योगदान लगातार देकर विशिष्ट पहचान बनाई है ।

पोवारी उत्कर्ष पत्रिका संपूर्ण समाज के विकास के लिये निश्चित रूप से एक प्रेरणादाई पत्रिका सिद्ध होगी ।

स्वजातिय बन्धुओं को दीपोत्सव एवं नूतनवर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं....................

(गौरीशंकर बिसेन)
विधायक
111–बालाघाट, (म.प्र.)

**विजय भरतलाल रहांगडाले**
आमदार
६४-तिरोडा-गोरेगांव विधानसभा

निवास : मु.खमारी, ता.तिरोडा, जि.गोंदिया,मोबा. नं.९७६४११०४८८
कार्यालय : विर सावरकर वार्ड, तिरोडा, ईमेल: vijayrahangdaletirora@gmail.com

तारीख : २९ /०९/२०२०

# शुभकामना संदेश

मोला आयकस्यानी बहुत बेस लगेव् अना बहुत खुशी भयी की, राष्ट्रीय पोवारी, साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था कनलक् दिपोत्सव वार्षिक सामाजिक पत्रिका "पोवारी उत्कर्ष" को पयलो संस्करण दिवारी को पवित्र बेरा मा प्रकाशित होय रही से.

पोवार समाज न सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक अना आर्थिक क्षेत्र मा आपरो महत्वपुर्ण योगदान देयकन आपली विशिष्ट प्रकार की अलग छाप विविध, जाग, राज्य अना राष्ट्रीयस्तर पर बनायी सेस.

पोवारी उत्कर्ष पत्रिका समाज को सर्वांगीण विकाससात मार्गदर्शक को रूप मा प्रेरणा देये.

**पोवार समाज को समस्त भाई अना बहीण ला**
**दिवारी की अना**
**आवनेवालो नवो साल की**
**बहुत बहुत शुभेच्छा !!**

(विधायक)
तिरोडा/गोरेगाव विधानसभा क्षेत्र

श्रीमती नवनित रवि राणा
सांसद
अमरावती लोकसभा

# हार्दिक शुभकामनाएँ

दि.०२/१०/२०२०

मुझे यह जानकार अपार खुशी हुई है की, वर्ष २०२० के इस प्रकाश एवं खुशीयों के **दिपावली** महापर्व पर **पोवारी उत्कर्ष** का प्रथम संस्करण प्रकाशित हो रहा है। मुझे पुर्ण आशा है की, यह वार्षिक अंक सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तरपर पोवार समाज बांधव के लिए एक नई दिक्षा प्रदान करेगा।

मै **पोवार उत्कर्ष** के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हुँ।

इस अंक के प्रकाशन पर मेरी ओर से **हार्दिक शुभकामनाएँ !**

**शुभेच्छुक**

**सौ.नवनित रवि राणा**
सांसद
अमरावती लोकसभा निर्वाचण क्षेत्र

५०, गंगा सावित्री बंगलो, शंकर नगर राजापेठ, अमरावती-444606, महाराष्ट्र
टेलीफोन : 0721 - 2579671, 2679398 मोबाईल : 09594503503 / 9969011111/9594504504
Email : yuvaswabhiman@yahoo.in / rr_group@rediffmail.com / rr.ravirana@gmail.com
Web : www.yuvaswabhiman.org.in

**रवि राणा**
**आमदार**

# शुभ संदेश

दि.०२/१०/२०२०

यह अत्यंत हर्ष का विषय है की, **पोवारी उत्कर्ष** का प्रथम संस्करण **दिपावली २०२०** के पावन पर्व पर प्रकाशित हो रहा है।

यह वार्षीक अंक समाज को नई दिक्षा प्रदान करने, तथा पोवार समाज के प्रचार एवं प्रसार मे महत्वपुर्ण भुमीका निभाएंगा। यह अंक सभी पोवार बंधुभगीनी को प्रेरीत करने मे सार्थक साबीत होगा।

पोवार उत्कर्ष के सभी सदस्योंसे यह आशा और पुर्ण विश्वास है की, आप **पोवारी भाषा** तथा **पोवार समाज** एकता को उंचे शिखर पर विराजमान करेगे।

इस अंक के प्रकाशन पर मेरी और से **हार्दिक शुभकामनाए !**

आपका

**रवि राणा**
विधायक
बडनेरा निर्वाचन क्षेत्र
जि.अमरावती

कार्यालय : युवा स्वाभिमान पार्टी, राजकमल ते राजापेठ रोड, अमरावती – ४४४ ६०५, (महाराष्ट्र)
टेलीफोन : 0721-2579671, 2679398, मो. 9969011111, 9594504504, 9049067331
Web: www.yuvaswabhiman.org.in
E-mail : yuvaswabhiman@yahoo.in / rr_group@rediffmail.com / rr.ravirana@gmail.com

नाना पटोले

अध्यक्ष
महाराष्ट्र विधानसभा
विधान भवन, मुंबई ४०० ०३२
दिनांक :

## संदेश

मुझे यह जानक प्रसन्नता है, की पोवार इतिहास, साहित्य, संस्कृति एवं उत्कर्ष परिषद द्वारा दीपोत्सव विशेष वार्षिक सामाजिक पत्रिका "पोवारी उत्कर्ष" का प्रथम संस्करण दीपावली के पावन पर्व पर प्रकाशित किया जा रहा है !

पोवार समाज ने राष्ट्र एवं प्रदेश के शिक्षा, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपुर्ण दायित्वों का निर्वहन करते हुए अपना अमूल्य योगदान लगातार देकर विशिष्ट पहचान बनाई है !

पोवारी उत्कर्ष पत्रिका संपूर्ण समाज के विकास के लिये निश्चित रूप से एक प्रेरणादायी पत्रिका सिद्ध होगी !

सभी बन्धुओं को दीपोत्सव एवं नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !

(नाना पटोले)

कार्यालय : ०२२-२२०२ ३१०१/२२०२ ३५४२, फॅक्स : ०२२-२२०२ ४३२०,
ई-मेल : speaker.maha@gmail.com

# विनोद अग्रवाल

विधानसभा सदस्य,
६५ - गोंदिया विधानसभा, महाराष्ट्र
94221 30742


जा.क्रं. २०३८ /२०२० | दि. २८/०९/२०२०

## संदेश

*o*

पोवारी उत्कर्ष का प्रथम संस्करण दीपावली के पावन पर्व पर प्रकाशित किया जा रहा है। यह जानकर मन प्रफुल्लित हुआ की, पोवार समाज का इतिहास साहित्यिक तथा संस्कृति से व्यापक समाज है।

पंवार समाज ने हमेशा राष्ट्र की रक्षा, सामाजिक, राजनैतिक, साथ ही आर्थिक दृष्टीकोण में अपना महत्पूर्ण योगदान देकर एक समाज के दायित्वो को अग्रसर रखने के हमेशा प्रयास किये है। पोवार समाज ने सामाजिक दृष्टीकोण से समाज को आगे लाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान रखा है।

**पोवारी उत्कर्ष** पत्रिका संपूर्ण समाज के विकास के साथ समाज के विकास के लिए प्रेरणा तथा गरिमामय पत्रिका सिद्ध होगी। और समाज को राष्ट्रीय स्तर तक लेकर जाने में कामयाब होगा।

साथ ही सभी पोवार समाज के सभी भाई एंव बहनों को नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं.........!!!

आपका

विनोद अग्रवाल
वि.स.स.

522, आमदार निवास, आकाशवाणी, 169, एच.टी.पारेख मार्ग, चर्चगेट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400020
कार्यालय : जुना बस स्टॅण्ड रोड, गोरक्षण मार्केट समोर, गोंदिया - 441601
कार्यालस प्रमुख : 93253 26505 | पी.ए. : 84217 55689, 9326268239 | ईमेल : mla65@vinodagrawal.in

# अनुक्रमणिका

# आरती गढ़कालिका माता की

(चाल: आरती कुजबिहारी की)

आरती  गढ़कालिका की,
आमरो कुलदेवी माय कि।। धृ।।

हातमा मा नौरंग को चूड़ा
गरोमा चंडमूंड की माला
कानमा कुंडल झलकाला
माथा कुमकुम, सुंदरतम रूप
माता धारेश्वरी माय की।।१।।

हिरवोकच साड़ी को सिंगार
हात मा खड्ग धरे तलवार
नयनमा करुणा की से धार
पोवार की माय, भोजला पाय
संकट हरनी माय की।।२।।

नवदुर्गा अंबे तोरो रूप आय
सप्तमीला काली रूप देखाय
उज्जैन मा विराजी तू माय
संकट हरनी,सुख करनी
माता कालिका रानी की।।३।।

धार मा सजी से दरबार
पावन महि नदी की धार
तुच आमरी सृजनहार
आमला तार, भवसागर पार
माता चामुंडा रानी की।।४।।

तोरो माय करु मी गुणगान
आरती की सजाऊ मी थाल
करू भक्ति तोरी अपार
मुक्ति को द्वार,तोरो नाव
माता भद्रकाली की।।५।।

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

डॉ. शेखराम परसराम येळेकर नागपूर

धारा एक नगरी, होती पवित्र
राज करे वंज्या, सिंधुल को पुत्र

भोज वको नाव, होतो महादानी
कला को पारखी, होतो महागुणी

लढाई मा वकी, घुम् समशेर
भोज नाव लेता, शत्रू थर थर

चौऱ्यांशी ग्रंथ को, होतो रचियता
वक् चरणमा, विद्वान को माथा

भोज चक्रवर्ती, मालवा को राजा
प्रतिभाकी धनी, मालवाकी प्रजा

असो गुणी राजा, कर वंज्या राज
पोवारी दिलमा, सदा वको राज

चक्रवर्ती राजा, स्मरू तोला अज
नमस्कार मोरो, तोला राजाभोज

**चक्रवर्ती सम्राट राजाभोज की जय**

# ...संपादकीय...

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं और उसने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज का निर्माण किया. ईश्वर प्रदत्त बुद्धिमता की परिणिति ही सामाजिक सम्बन्ध हैं। आज समय के साथ अनेक सामाजिक समुह अस्तित्त्व में हैं । समाज ही संस्कृति का सृजन करता हैं और इसी संस्कृति से समाज नियंत्रित भी होता है. इसीलिए संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन अत्यधिक आवश्यक है. इसी उद्देश्य के लिए क्षत्रिय पोवार/पंवार समाज के सदस्यों ने एक साथ मिलकर अपनी संस्कृति और ऐतिहासिक पहचान की खोज हेतु प्रयास शुरू किये। हमारे पहले भी समाज के सदस्यों के द्वारा ऐसे कई उल्लेखनीय प्रयास किये गए हैं और ये प्रयास इस समूह के लिए प्रेरक मार्गदर्शक हैं। अपने महान पूर्वजों के प्रेरक कार्य और उनकी प्रेरणा समाज कि नई ऊर्जा प्रदान करती हैं और उनकी संस्कृति को हम सहेजकर एवं संवर्धित कर अगली पीढ़ी को सौपेंगे।

कहते हैं कि, कलम कि ताकत किसी समाज कि दशा और दिशा को निर्धारित करने के लिए पर्याप्त हैं। समाज के साहित्यकार और विचारक इसी दिशा में कार्य कर रहे हैं कि वें खुद की संस्कृति और पहचान को अपनी मातृभाषा मायबोली पोवारी में लिख सकें। पोवारी का प्रचार प्रसार भी इसी सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्कर्ष का सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। पोवारी उत्कर्ष परिवार भी इसी दिशा में निरंतर कार्य कर रहा हैं।

पोवारी उत्कर्ष, पत्रिका का मुख्य उद्देश्य पोवार/पंवार समाज की संस्कृति, इतिहास और समाजोत्थान के लिए लेखकों के विचारों को समाज के समक्ष लेकर आना है। पत्रिका की अधिकांश रचनायें हमारी मायबोली मातृभाषा पोवारी में हैं। पोवारी को विलुप्त होने वाले भाषायी समूह में रखा गया था किन्तु मुझे व्यक्तिगत रूप से ऐसा नहीं लगता। हमारे भाई बहनों ने अपनी रचनाओं को बहुत उत्साह के साथ रचा और इसमें सबसे युवा लेखिका बहन कु. कल्याणी पटले और युवा लेखक चिरंजीव सरोज बिसेन से लेकर वरिष्ठ सदस्य आदरणीय श्री ओ सी पटले जी ने बहुत ही उत्साह के साथ साहित्य का सृजन किया।

हमारे समाज की महिला शक्ति ने साहित्य सृजन और संस्कृति संवर्धन के इस महान अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। सौ. छाया सुरेंद्र पारधी, सौ. शारदा चौधरी, सौ. बिंदु बिसेन, सौ. श्रुती टेंभरे बघेले, सौ.वर्षा पटले रहांगडाले, सौ. वंदना कटरे, सौ. स्वाति कटरे तुरकर, सौ.लता पटले जी ने अपनी कलम से साहित्य और संस्कृति के लिए गद्य और पद्य के माध्यम से पोवारी उत्कर्ष पत्रिका में अपने विचार समाज के सामने रखे हैं। महिला परिवार और समाज की निर्माता हैं तथा यदि वो दृढ़ निश्चय के साथ संस्कृति और अपनी मायबोली पोवारी को बचाने के लिऐ इस तरह अपनी लेखनी को आगे ले जाएगी तो हमारी संस्कृति का संरक्षण और समाज का विकास निश्चित हैं। भविष्य में हम आशा करते हैं की इसी तरह हर क्षेत्र से हमारे समाज की महिला शक्ति सभी सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाऐंगे।

पोवारी उत्कर्ष पत्रिका में श्री डी.पी. राहांगडाले, श्री व्ही. बी.देशमुख, श्री लखनसिंह कटरे , डॉ. शेखराम येळेकर डॉ. विशाल बिसेन ,इंजी. महेन पटले, श्री चिरंजीव बिसेन, श्री राजेश बिसेन, प्रा. डाँ. हरगोविंद टेंभरे, डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे, श्री गुलाब बिसेन, श्री वाय. सी. चौधरी, श्री पालिकचंद बिसने, श्री धनराज भगत, श्री हिरदीलाल ठाकरे, श्री शेषराव येळेकर, श्री मानीकचंद पारधी, श्री रणदीप बिसने जी ने अपनी लेखनी की धार से साहित्य का सृजन किया हैं। इसी साहित्य के माध्यम से हमारी संस्कृति, नेंग दस्तूर, परम्परायें, सामाजिक उत्थान के लिए प्रेरणा प्रदान की हैं।

आमरी मायबोली पोवारी अना देश की राजभाषा हिंदी मा रच्या असो काव्य अना लेख समाज ला नवी दिशा देवन ला पर्याप्त से। कवी को आमरी मायबोली लक लगाव वोका हिरदय की आवाज से न कविता मा यो पिरम शब्द की माला मा गूथ गयी से। निबंध अना लेख मा लेखक को मन को उद्गार एनो पत्रिका मा समाय गयी से। मोरा भाई बहिन न सबदुन मायबोली ला बचावन अना वोको प्रचार प्रसार लाइ आपरी प्रतिबद्धता जाहिर करि सेत। हमरो अतीत को गीत अना मा धर्म को संगीत का साजरा समन्वय यो पत्रिका, पोवारी उत्कर्ष मा आय गयी से।

ये मेरे लिए हर्ष और सौभाग्य की बात हैं की इस पत्रिका के सम्पादकीय लेख के माध्यम से विचारकों के अपनी संस्कृति और अपनी मायबोली मातृभाषा पोवारी के प्रेम को लिखने का अवसर प्राप्त हुआ। आज से ११५ वर्ष शुरू पोवारो के प्रथम संघटना के उदय काल सन १९०५ से आज तक की विकास गाथा के साथ अतीत में पोवारों की उत्पत्ति से लेकर नगरधन वैनगंगा क्षेत्र में बसाव की जीवन गाथा इस प्रथम अंक में मिल जाएगी।

हमारा गौरवशाली अतीत, वर्तमान को बेहतर बनाने की प्रेरणा प्रदान करेगा। हमारे ऐतिहासिक युगपुरुष सम्राट विक्रमादित्य, महाराजा भोजदेव, राजा जगदेव पँवार से लेकर आज तक के सफलतम वयक्तियों की जीवन गाथा समाज को हर क्षेत्र में उन्नति के लिए प्रेरणा प्रदान करेगी। हमारे वंश के महान राजाओं की प्रेरणा को समाज के बीच ले जाना हम सभी की जिम्मेदारी है।

पत्रिका के लेख हमारे क्षत्रिय धर्म और कर्तव्य के पालन की प्रेरणा देते हैं। साथ ही हमारी मायबोली पोवारी के शब्दकोष के ज्ञान के साथ युवाओं को पोवारी बोली सीखने में मदद होगी। सच मा बड़ी प्यारी अना मीठी से आमरी मायबोली पोवारी। क्षत्रिय पंवार/पोवार समाज की कुलदेवी माय गढ़कालिका से अना हमरो समाज माय को सदाआव्हान करोसे। कुलदेवी को आशीर्वाद रहे त युवा पीढ़ी सब व्यसन लक दूर होय कर समाज को संस्कार का पालन करहेति। पोवारी संस्कृति मा हमरी सनातनी संस्कृति को दर्शन होसे। हमारा पुरखा गिन न आपरो स्थान तो सोडया पर आपरो संस्कार को जतन करिन अना येव जिम्मेदारी आता हमरो ऊपर से।

पोवार इतिहास, साहित्य अना उत्कर्ष नाम से एक छोटे से समूह से जुड़े ये लोग धीरे धीरे अपने पुरखों, बुजर्गो के उस सपने को पूरा करने में लगे हैं जो उन्होंने समाज के उत्थान के लिए देखा था। पोवारी उत्कर्ष पत्रिका की संकल्पना और उसे यथार्थ रूप से साकार करने के लिए मैं हमारे युवा साथी चिरंजीव सोनू भगत का विशेष धन्यवाद करता हूँ साथ ही सभी विचारकों को इस सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान की यात्रा में सहभागी बनने के लिए विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ। अंत में मैं अपने पूर्वजों और आराध्य देवताओं से आह्वान करता हूँ की हम सभी को इतनी शक्ति प्रदान करे कि हम अपनी विशिष्ट पोवारी संस्कृति और पहचान को बनाये रखते हुए राष्ट्र उत्थान में हमेशा तत्पर रहे।

## *सभी का हार्दिक अभिवादन - वंदन -अभिनंदन*

*दि. ०७/११/२०२०*

प्रधान संपादक
**श्री. ऋषि बिसेन**
अध्यक्ष
राष्ट्रीय पोवारी साहित्य,
सामाजिक उत्कर्ष संस्था

***

# संपादकीय...

## पोवारीको गुणगान, पोवारला हर्ष
## पोवारीको साज करे, पोवारी उत्कर्ष

---

पोवार समाजको इतिहास बहुत पुरानो ना बहुत प्रसिद्ध से. वैनगंगा तटीय यव पोवार समाज किसानीला एक परंपरागत व्यवसाय मनुन देख रही से. किसानी संग वला पुरक सहाय्यक व्यवसाय करकन हासीकुशीलका आपल् जींदगीकी उपजीविका करसे. अन्य समाजदुन पोवार समाजन आपली अलगही पयचान बनायीस सेस. पोवार समाजसाती गौरवशाली बात मनजे पोवार समाजकी बोलचाल की बोली पोवारी से. पोवारी बोली पोवार समाजकी धरोहर से. या बोली पोवार समाजक अस्तित्व की पयचान से. पोवारी बोली मधुतरकाको भंडार से, पोवारी विनम्रताको सागर से. पोवारी बोलीका मधूर गीत संस्कार अना नैतिक मूल्ये को भंडाराच से.

यतर् वैशिष्ट्यलका सजीधजी या पोवारी बोली आब संकटमा आय रही से या बहुत दुख की बात से. आधुनिक शिक्षण पध्दतीलका व्यक्ती को, वक् परिवारको ना समाजको उध्दार होसे या बात सही से. तसोच होय रही से पन पढ्या लिख्या ना रोजी रोटीसाती शहरमा आया काही समाजजन पोवारी ला भुलन लग्या. मनजे पोवारी बोली पासून जरासा दूर जान बस्या. काहीजनत् पोवार ना पोवारी कवनला हिचकिचान बस्या. पोवारी नावच बराबर नाहाय यकसाती संघर्ष करन बस्या या बहुत दर्दभरी बात से. मायको नाव जसो रहे तसोच वु सुंदर ना पवित्र रवसे. कोनी कसे नाव मा काजक से? नाव मा बहुत ताकत से, अस्मिता से, पयचान से, आत्मीयता को भावसे.शहरमा पोवारीको दम घुट रही से. आधुनिकताका पुजक पोवारी पासून दूर जानकी कोशिस करसेत उनला मोरो विरोध नाहाय उनकी काही मजबुरी रहे पन पोवारी आत्मीयता पासून दुर नही गये पायजे अशी मोरी कामना से.

अजक् घडीला खेडापाडामा पोवारी हाशीखुशीलका पोवारक् दिलपरा राज कर रही से या बहुत खुशी ना गर्व की बात से.

यन् आधुनिकीकरणक् जमाना मा पोवारसमाजका पढ्या लिख्या टुरु पोटु अना मान्यवर पोवारी बोलीक् उत्कर्ष साती झट रह्या सेती या बहुत अभिमानकी बात से.

दिवारीक् यन शुभ पर्वपर दिवारीको दिवो वकी रोशनाई अंधकारला कम करनकी कोशिस करसे तसोच पोवारी इतिहास साहित्य अना उत्कर्ष समुहको यव पहिलो पोवारीउत्कर्ष दिवारी विशेषांक जनमानस को अंधकार दुर करस्यानी कल्पना, आशा, प्रेरणा ना सृजनकी रोशनी देयकन पोवारीको प्रकाश दिशा दिशा मा जरुर फैलाये असो मोरो विश्वास से.

पोवारी इतिहास साहित्य ना उत्कर्ष समुहद्वारा पोवारी बोली क् प्रचार प्रसार साती, संरक्षण साती ना संवर्धनसाती हर दिवस अलग अलग साप्ताहिक कार्यक्रम रवसेत. यकमा कवितालेखन स्पर्धा, बालगीत स्पर्धा, कथालेखन स्पर्धा, बालकथा स्पर्धा, पोवारी संवादलेखन, पोवारी पत्र लेखन, पोवार समाजका प्रतिभावंत मान्यवरइनको उद्बोधन अना पोवारी संस्कृती सामान्य ज्ञान परीक्षा असा एकदुन एक बढकर कार्यक्रम होसेत. यन् पोवारी कार्यक्रम क् माध्यमलका पोवारसमाजक टुरुपोटुसंग मान्यवरोंकी पोवारी प्रतिभा उजागर होय रही से. आब् लाजरा बुजरा बी पोवारी लिखनसाती ना बोलनसाती कंबर कसकन पोवारी सहयोगसाती सामने आय रह्या सेत या बहुत खुशीकी बात से. सबलाच कविता कथा लिखता आावसे असो नही पन जो पोवारी बोलीक् प्रचार प्रसार साती व्हा व्हा कयकन पोवारक् बालगोपालको उत्साह बढावसेत, कोणतन् कोणत् माध्यमलका पोवारीक् प्रचार प्रसार साती जनमानसमा चर्चा करसेत, यव बी पोवारीसाती मोठो योगदान से. पोवारी क् अस्तित्वसाती, अस्मितासाती मेहनत करनेवालला दिवारीक् पर्वपरा सफलताकी कुंजी जरुर भेटे, असो मोरो विश्वास से.

पोवारी बोली पोवारक अंतकरणमा राज करे पायजे यक संग वा कंठलका वक् वोठपरबी आये पायजे यक् साती पोवारी इतिहास साहित्य ना उत्कर्ष समुहद्वारा पोवारी साहित्यिक ना कलाकार इनला आपली प्रतिभा उजागर करनसाती एक नवो व्यासपीठ देयकन मोठो काम करी सेस.

पोवारी साहित्यमा कविता भारुड, अभंग, ओवी , लावणी, भजन, आरती, श्लोक, गवळण, निबंध, संवाद असा साहित्य प्रकार यन् पोवारी उत्कर्ष अंकला सजावनसाती पोवारी गहना(अलंकार) साबित होय रह्या सेत.

**पोवारी मायको**
**पोवारीमा अंक**
**पोवारी उत्कर्ष**
**बज रहेव शंख**

**पोवारी बोलीको**
**नोको करो त्रागा**
**वोठ संग ठेवो**
**हृदयमा जागा**

**जपकन ठेवो**
**पोवारी अस्मिता**
**आशीर्वाद देये**
**गडकाली माता**

पोवारी इतिहास साहित्य अना उत्कर्ष समुहको यव पोवारी उत्कर्ष दिवारी विशेषांक दिवारीक् दिवोसमान पोवारी आत्मीयता ना पोवारी प्रेम ला जरुर प्रकाशमान करे यव मोरो विश्वास से.
जय गडकालिका
जय राजा भोज

*दि. ०७/११/२०२०*

संपादक
**डॉ. शेखराम परसराम येळेकर**, नागपूर
उपाध्यक्ष
राष्ट्रिय पोवारी, साहित्य,
सामाजिक उत्कर्ष संस्था

***

# ...संपादकीय...

---

पोवारी साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था दिवारी को पावन पर्व पर पोवारी उत्कर्ष अंक ०१ को प्रकाशन कर रही से।क्षत्रिय वंश का आमी पोवार, आमरी मायबोली पोवारी आय। पर आमरो लिखित साहित्य उपलब्ध नोहोतो। जेन समाज को लिखित साहित्य नहीं रव वू समाज कभी भी साहित्य मा सामने नहीं बढ़ सक। मुन पोवारी साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था को साहित्य निर्मिती को लहानसो प्रयास येन संस्था द्वारा करेव जाय रही से। येकोच लहानसो भाग पोवारी उत्कर्ष अंक ०१ मा प्रकाशित करनको प्रयास आमी कर रह्या सेजन। पत्रिका को प्रकाशन साती कार्यकारी मंडल को हर सदस्य न अथक मेहनत करी सेन।

पोवारी साहित्य, सामाजिक उत्कर्ष संस्था की स्थापना २० जानेवारी २०२० ला भई। संस्था को उद्देश्य पोवारी भाषा को जतन करनो, ३६ कुल को पोवारइनकी संस्कृति, पोवारी इतिहास, रितीरिवाज, परंपरा, खानपान, रहनसहन येकी जानकारी संग्रहित करके जतन करनो, पोवार समाज को इतिहास को संशोधन करके ओको प्रचार प्रसार करनो से।विशेष उपक्रम कविता स्पर्धा, बोधकथा स्पर्धा, बालकविता स्पर्धा निबंधलेखन, पत्रलेखन स्पर्धा असा विविध उपक्रम लेनो। उनको संग्रहण ना जतन, डिजिटल माध्यम पर प्रचार प्रसार करनो।

पोवारी उत्कर्ष अंक ०१ मा आमरो समूह का उद्देश्य अना नियमावली देईसे। समाज गौरव, व्यक्तित्व परिचय, आमरो इतिहास , पोवारी कथा, कहानी,कविता अना ज्ञानवर्धक जानकारी देई गई से।

आमरो संस्था का संपादक मंडल अना साहित्यिक को अथक मेहनत लका येव पयलो अंक प्रस्तुत कर रह्या सेजन।विज्ञापन दाताओं न येन प्रकाशन साती विशेष भूमिका निभाई सेन। जिनको जिनको प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहकार्य मिलेव उनका आमी सहृदय आभारी सेजन। आशा कर सेजन, पोवारी उत्कर्ष अंक ०१ सबला पसंद आए । अना सबको आशीर्वाद मिले।

*दि. ०७/११/२०२०*

## दिवारी की हार्दिक शुभकामना...!!

संपादक

**- सौ छाया सुरेंद्र पारधी**

उपाध्यक्ष

राष्ट्रिय पोवारी साहित्य,

सामाजिक उत्कर्ष संस्था

***

# नगरधन वैनगंगा क्षेत्र के क्षत्रिय पंवार (पोवार)

ऋषि बिसेन
नागपुर

नगरधन वैनगंगा क्षेत्र के क्षत्रिय पंवार (पोवार) सनातन काल से क्षत्रियों का मूल कर्तव्य शासन व्यवस्था, राष्ट्र और प्रकृति की रक्षा रहा है। क्षत्रिय अपने कर्म से क्षत्रिय बनते थे और क्षत्रिय धर्म के पालन से क्षत्रिय बने रहते थे। गुरु वशिष्ठ की संकल्पना से मानवता की सुरक्षा और पृथ्वी के कल्याण के लिए अग्निकुंड से प्रमार/पँवार क्षत्रियों की उत्पत्ति का इतिहास पौराणिक कथाओं से प्राप्त होता है। इनके वंशजो का देश के कई भागों पर उत्तम शासन एवं न्याय व्यवस्था का काफी इतिहास मिलता है। वैनगंगा क्षेत्र में बसे पंवार (पोवार) वंश भी आबू गढ़ से जन्में प्रमार क्षत्रियों के वंशज हैं। उज्जैन नरेश विक्रमसेन विक्रमादित्य इसी प्रमार वंश के प्रतापी सम्राट हुए थे। मालवा नरेश सम्राट भोजदेव भी, प्रमार वंशीय उज्जैन नरेश विक्रमसेन विक्रमादित्य को अपना पूर्वज मानते थे। महाराजा मुंजदेव अपने वंश को ब्रह्मक्षत्रिय मानते थे। कालांतर में मालवा राजपुताना से क्षत्रियों का विस्थापन देश के कई हिस्सों में हुआ। मध्यभारत और विदर्भ में भी समय समय पर इन क्षत्रियों का आगमन होता रहा। मराठाओं के शासन विस्तार में विभिन्न क्षत्रियों ने अपना सहयोग दिया था। पावन वैनगंगा की घाटियों में मालवा राजपुताना के विभिन्न क्षत्रियों का स्थायी रूप से बसना मराठा शासन के समय तक चलता रहा। भाटों की पोथियों में भी इनका उल्लेख मिलता हैं। उन्होंने लिखा हैं की मालवा से नगरधन और नागपुर होते हुए वैनगंगा क्षेत्र में आज के भंडारा, सिवनी, गोंदिया और बालाघाट जिलों में पंवारों का विस्थापन हुआ।

३६ क्षत्रिय कुलों का पंवार/पोवार के रूप में जाने वाला ये क्षत्रिय संघ, मालवा से आकर माँ वैनगंगा की घाटियों में स्थायी रूप से बसा और ब्रिटिश काल में उन्हें बैहर-परसवाड़ा क्षेत्र में बसने के अवसर मिले। भाटों की पोथियों में उनके मूल स्थान गुजरात से लेकर मालवा राजपुताना के क्षेत्र हैं। ब्रिटिश शासन के जनगणना दस्तावेज और जिलें के लिखे गैज़ेट में यह मिलता हैं की पोंवार मालवा से आये हुए प्रमार वंशीय क्षत्रिय हैं जो सर्वप्रथम नगरधन में रुके थे। पंवारों के द्वारा कटक युद्ध में नागपुर के मराठा शासन में अभूतपूर्व सहयोग के परिणाम स्वरूप उन्हें वैनगंगा के क्षेत्र प्राप्त हुए थे। इसके पूर्व भी मालवा के पंवारों का मध्यभारत पर शासन रहा है। प्रमार वंशीय राजा लक्ष्मणदेव और जगदेव पँवार ने मध्यभारत विदर्भ में आकर शासन किया था। नागपुर और त्रिपुरी से प्राप्तसे प्राप्त अभिलेखों में मध्यभारत/विदर्भ पर मालवा के परमार शासकों के शासन होने की पुष्टि होती है।

सन 1310 तक मालवा पर मुस्लिम शासकों का पूर्णतः अधिकार हो गया था। यह वक्त मालवा की जनता के लिए कठिन वक्त था। इसके बाद मालवा से पंवारों का कई क्षेत्रों में विस्थापन भी हुआ। लेकिन इन क्षत्रियों ने कभी भी मुस्लिम दुराचारियों के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं किया और न ही अपनी संस्कृति या धर्म को छोड़ा। प्रमार वंशीय राजा सनातनी धर्म के संरक्षक और संवर्धक रहे थे, इसीलिए उनके वंशज भी इसी उम्मीद में भटकते रहे, की एक दिन अवश्य सनातनी हिंदुओं का शासन वापस आएगा और उन्हें अपना राज्य वापस मिलेगा। मराठा शक्ति के उदय ने हमारे पूर्वजों को यह विश्वास दिलाया की अब हिंदुत्व की सत्ता देश में वापस हो रही हैं। इसी विश्वास के कारण पंवारों ने हर क्षेत्र में मराठा शासकों का साथ दिया था। इसी तरह उन्होंने मुगलों के विरुद्ध हर संघर्ष में अनेक अन्य राजाओं का भी सहयोग किया था। मालवा के इन क्षत्रियों ने मुगलों के विरुद्ध लड़ने के लिए देवगढ़ के राजगोंड राजवंश का भी सहयोग किया था और उस वक्त कुछ पंवार कुल इन क्षेत्रों में आये थे। भाटों की पोथियों से यह पता चलता हैं की इन्होंने नगरधन और नागपुर के आसपास कई वर्ष बिताये थे।

नगरधन और नागपुर में मालवा से आये 36 क्षत्रिय समूहों को सम्मिलित रूप से पंवार/पोवार संघ/वंश कहा गया। ब्रिटिश शासन के जनगणना दस्तावेज, ब्रिटिश जिला गैज़ेट में इन्हे पोंवार(Ponwar) शब्द से सम्बोधित किया है और उनकी बोली के लिए पोवारी(Ponwari) शब्द का उल्लेख हैं।

ब्रिटिश लेखकों ने लिखा की नागपुर के पंवार राजपूत, मालवा से आये परमार हैं जिन्हे कटक युद्ध में अभूतपूर्व सफलता के बाद वैनगंगा का क्षेत्र प्राप्त हुआ था। इस आधार पर मान सकते हैं की 1775 के आसपास पोवारों की वैनगंगा क्षेत्र में स्थायी रूप से बसाहट हो गयी। ये क्षेत्र उपजाऊ थे और कृषि के लिए उपयुक्त भी थे इसीलिए बड़ी संख्या में मालवा राजपुताना से सपरिवार इन क्षत्रियों का स्थानांतरण हुआ। भाटों की पोथियों में भी हमारे पूर्वजों के लिए अठारवी शदी के आरम्भ से ही मालवा से नगरधन आगमन कि जानकारी मिलती हैं। भाट कुछ कुलों को इससे भी पहले का आये हुए मानते हैं जिस पर शोध हो रहा हैं। पर इतना तो तय हैं की 1750 के आसपास 36 कुल के पंवार/पोवार नगरधन/नागपुर के आसपास आ गए थे। भाट की पोथी में लिखा हैं की नगरधन वैनगंगा क्षेत्र के पंवार, विभिन्न क्षत्रिय वंशियों का संगठन हैं जिसमे अग्निवंशीय, सूर्यवंशीय, चन्द्रवंशिय और यदुवंशीय शामिल हैं।मालवा पर पँवार/परमार वंश का शासन लंबे समय तक रहा है और इस वंश ने सबसे ज्यादा ख्याति प्राप्त की हैं। सम्राट विक्रमादित्य, राजा भृतहरि से लेकर मध्यकालीन प्रमार शासक राजा उपेंद्र, राजा शीयक, राजा मुंजदेव, राजा भोजदेव, राजा उदियादित्य, राजा जगदेव, राजा लक्ष्मणदेव, राजा नरवर्मन देव, महलकदेव आदि शासकों के सर्वश्रेष्ठ शासन ने मालवा के प्रमार/पँवार वंश के नाम की ख्याति पुरे विश्व में फैला दी थी।

सम्भवतया यही वजह रही होगी की इन 36 क्षत्रिय वंश को विदर्भ में संयुक्त रूप में पंवार/पोवार कहा गया। ये 36 कुर/कुल/गोत्र आपस में ही विवाह करते रहे हैं। इनमें से कुछ गोत्र मुस्लिम संत बाबा फरीद को पूजते थे जिनमे रहमत, तुर्क और फरीद हैं। आज के तुरकर यही तुर्क हैं, जिनके कुछ परिवार आज भी बाबा फरीद की हिन्दू रीति रिवाजों से पूजा करते हैं। ब्रिटिश लोक सेवक श्री आर वी रसेल ने अपनी किताब The Tribes and Castes of the Central Provinces of India में पंवारो में शामिल बाबा फरीद के उपासकों इन तीन कुरों का उल्लेख किया है। ब्रिटिश दस्तावेजों में उस समय 36 में से 30 कुलों के वैनगंगा क्षेत्र में होने की बात लिखी हैं। शेष कुल सम्भवतया इन क्षेत्रों में स्थायी रूप से न बसकर मराठों से सैन्य भागीदारी के बाद अपने मूल क्षेत्रों में वापस चले गए होंगे या अन्य कुरों में शामिल हो गए होंगे। परंतु आज भी हम, वैनगंगा क्षेत्र में, "36 कुर के पोवार" कहे जाते हैं। कुछ शोधकर्ता मानते हैं की नगरधन आगमन से पूर्व भी मालवा बुंदेलखंड में ये 36 कुल के पँवार कहीं एक साथ रहे होंगे और उन कुलों के मूल क्षेत्र की बोलिओं के प्रभाव से पँवारी बोली का विकास हुआ होगा। पंवार यही बोली विदर्भ में लेकर आये और यहां भी स्थानीय बोलिओं का इस पर प्रभाव पड़ा। आज यह बोली सभी 36 कुलों के द्वारा बोले जाने वाली पोवारी(पंवारी) कहलाती हैं। आज मालवा राजपुताना छोड़कर आये हुए हमें लगभग 300 वर्ष हो चुके हैं और इतने वर्षों से वैनगंगा क्षेत्र में रहते हुए सभी ३६ कुल एक समान पोवारी संस्कृति की जी रहे हैं। दो महान क्षत्रिय संस्कृति, राजपुताना और मराठी के समन्वय का प्रभाव आज के पंवारों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्नीस्वी शदी तक बालाघाट, गोंदिया, भंडारा, सिवनी के साथ पश्चिमी छत्तीसगढ़ के कुछ जिलों में पंवार स्थायी रूप से बस गए थे। मराठाओं के बाद इन क्षेत्रों पर ब्रिटिश नियंत्रण हो गया था और बालाघाट जिले के उपायुक्त कर्नल ब्लूमफील्ड ने 1870 के आसपास पंवार राजपूतों को बैहर क्षेत्र में बसने के लिए प्रेरित किया तथा सर्वप्रथम श्री लक्ष्मण पंवार परसवाड़ा क्षेत्र में जाकर बसे। इसक बाद बैहर क्षेत्र में पंवारों को कई गाँवो की मुक्कदमी/ जमींदारी दी गयी जो कृषि प्रधान ग्राम थे। बाद में शिक्षा और रोजगार के लिए नई पीढ़ी के लोगों का नागपुर, रायपुर, दुर्ग-भिलाई, भोपाल सहित देश के कई नगरों की ओर विस्थापन हुआ और वे वहीं स्थायी रूप से बस गये।

पर सभी 36 कुलीन पोवारों के मूल माँ वैनगंगा के आंचल में ही हैं। माँ वैनगंगा के आंचल ने मालवा से नगरधन/नागपुर होकर आये इन क्षत्रियों को बसने में बहुत मदद की हैं। सतपुड़ा और वैनगंगा का हराभरा ये क्षेत्र बहुत ही उपजाऊ हैं जिस पर मालवा के इन क्षत्रियों ने शस्त्र को एक किनारे में रखकर हल उठा लिए और कुशल कृषक बन गए। साथ ही मराठा शासन और बाद में ब्रिटिश शासन में भी जागीरदारी/जमींदारी संभालते रहे।आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण ने हमारी विशिष्ट पोवारी संस्कृति को भी प्रभावित किया हैं। माँ वैनगंगा के चरणों में पल्लवित और पुष्पित पोवारी संस्कृति और विचारधारा सुदृढ़ और शक्तिशाली हैं और तूफ़ान के थपेड़े भी इसे क्षतिग्रस्त नहीं कर सकते। महाराजा भोज ने चारों धामों के मन्दिरों का पुनुरुद्धार किया था और आक्रांता विदेशियों की सोच को भी रोके रखा और वो हमारे आराध्य ही हैं इसीलिए हम सनातनी संस्कृति के ध्वजवाहक भी हैं। यह हमारा राष्ट्रीय चरित्र हो की हम इस ध्वज की गरिमा को बनाये रखते हुये पोवारी/पंवारी संस्कृति को जीवंत रख अगली पीढ़ी को संवर्धित और सुदृढ़ कर सौपे।

***

ॲड.लखनसिंह कटरे
बोरकन्हार, तह.आमगांव, जि.गोंदिया (विदर्भ-महाराष्ट्र)

# पोवार समाज और सार्वभौम प्रतिभा : एक कटू-वस्तुस्थिती.

पोवार समाज जिनपर हमेशा नाज करता है, वह "मालव चक्रवर्ती सम्राट भोज मध्ययुगीन भारत के इतिहास में सम्राट अशोक तथा विक्रमादित्य के समान महाप्रतापी, सफल विजेता, कुशल शासक, विद्वान, कवी, दानी, धार्मिक, सदाचारी, विद्वानों का आश्रयदाता, ज्ञान-विज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति एवं लोक सुख-समृद्धि हेतु लक्ष्मी का आराधक, न्यायप्रिय तथा प्रजा में अगाध लोकप्रिय अद्वितीय आदर्श राजा हुए है। भोज इतने महान व्यक्तित्व के धनी थे कि उन्हे अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया था। जैसे - महाधिराज परमेश्वर, परम भट्टारक महाधिराज परमेश्वर, मालवमण्डन, सार्वभौम, मालवचक्रवर्ती, अवन्तिनायक, धारेश्वर, निर्वाणनारायण, त्रिभुवननारायण, लोकनारायण, विदर्भराज, अहिराज, अहिंद्र, अभिनवार्जुन, कृष्ण, रणरंगमल्ल, आदित्यप्रताप, चाणक्यमाणिक्य, कविराज आदि करीबन 84 उपाधियाँ, डॉ.श्री.वी.वेंकटाचलम् ने धार स्टेट गजेटियर पृ.107 पर उल्लेखित की हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व.श्री.पं.जवाहरलाल नेहरू ने भी अपनी जग-विख्यात रचना 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में धाराधिश राजा भोज को मध्ययुगीन भारत का महान राजा निरूपित किया है।

राजा भोज सारे राज्यशास्त्र, 36 आयुधविज्ञान, 72 कलाओं में पारंगत थे।(प्रबंध चिंतामणी, रासमाला)। भोज के विभिन्न कला तथा वैज्ञानिक ज्ञान का पांडित्य उनके द्वारा रचित युक्तिकल्पतरु, समरांगणसूत्रधार, सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगारप्रकाश तथा श्रृंगारमंजरीकथा से विशद होता है।... उनके ग्रंथ विविध क्षेत्रों में जैसे - ज्योतिष्य, अलंकार, दर्शन, राजनीति, धर्मशास्त्र, शिल्प, व्याकरण, वैद्यक, कोष, काव्य, सुभाषित पर पायें जातें हैं। प्रभावकचरित के अनुसार भोजकृत शास्त्रों में - भोजव्याकरण, शब्दालंकार शास्त्र, तर्कशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, राजसिद्धांत, रसशास्त्र, वास्तुशास्त्र, उदयशास्त्र, अंकशास्त्र, शाकुनकशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, व्याख्यानशास्त्र, प्रश्नचुडामणि, पूर्वजन्म सु/कुकृत्य अयःशास्त्र, अर्थशास्त्र, अर्थकाण्ड, मेघमाला, इत्यादि थे। कोदण्डकाव्य, भोजप्रबन्ध, श्रृंगारमंजरी कथा के अलावा नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र पर भी राजा भोज के ग्रंथों का विवरण हैं। "राजा भोज करीबन 1400 विद्वानों के आश्रयदाता थे। कोदण्डकाव्य तथा अज्ञातनामा काव्य में राजा भोज की विद्वत् परिषद की जानकारी हैं। जिसमें विविध विषयों के 500 विद्वान थे। विभिन्न प्रश्न/समस्याओं पर अभिमत, न्यायसंगत, तर्कसंगत निष्कर्ष पाने हेतु इन विद्वानों का मत लिया जाता था। कोई भी नागरिक निर्भिक होकर न्याय का हकदार था। राजा भोज स्वयं भेष बदल कर राज्य में घूमते थे। वर्षभर गोष्ठियाँ, परिसंवाद, संगीत, नाटक राज्याश्रय से चलते थे।

"महाराजा भोज की पत्नी महारानी लीलावती (तथा अन्य पत्नियाँ सत्यवती, मदनमंजरी, भानुमति, पिंगला, सुभद्रा आदि) थी। ... राजा भोज की पत्नी, महारानी लीलावती महान कवयित्री तथा गणितज्ञ थी एवं राजदरबार में महाकवी कालीदास को कई बार शास्त्रार्थ वाद-विवाद में हरा चुकी थी।"

उपरोल्लेखित कथन डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे जी द्वारा संपादित पुस्तिका "पँवार महाराजा भोज" (द्वितीय संस्करण - 2007) के प्रस्तावना (डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे) से उद्धृत किया गया है। इस ऐतिहासिक तथ्य तथा वस्तुस्थिति को उद्धृत करने के पीछे मेरा उद्देश्य इस ऐतिहासिकता की पृष्ठभूमि में वर्तमान वस्तुस्थिति को देखना/परखना मात्र है। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में हम सभी पोवार बंधू-भगिनी अपने वर्तमान को देख/परख सके, यह भी मेरे इस (संक्षिप्त) उद्देश्य में सामिल है।

मेरे द्वारा यहाँ प्रस्तुत हमारे पोवार समाज का वर्तमान तथ्य तथा वर्तमान वस्तुस्थिति यदि कटु लगे, तो मै क्षमा चाहूँगा। लेकिन इस मुद्दे पर इष्टानिष्ट विचार अवश्य हो, यह मेरी पोवार समाज से प्रार्थना रहेगी। राजा भोज एवं उनकी सुविद्य पत्नी महारानी लीलावती दोनो भी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। महाराजा भोज ने करीबन सभी महत्वपूर्ण विषयों पर अपने प्रतिभा की छाप छोड़कर पचास से भी अधिक (84) विद्वत्तापूर्ण ग्रंथो की रचना की।

महारानी लीलावती ने भी अपनी प्रतिभा की छाप इतिहास में दर्ज करायी है। दोनों पती-पत्नी इस तरह महत्तम प्रतिभा के धनी होने की मिसाल शायद बहुतही कम मिलेगी। तब मेरे मन में एक प्रश्न उठता है कि, ऐसी मिसालें "बहुतही कम" क्यों है? इसके पीछे कोई कारण यदि हैं, तो वह क्या है? इन जैसे प्रश्नों पर जब मै अपनी अल्पबुद्धि से सोचता हूँ, तब हमारे पोवार समाज के वर्तमान वस्तुस्थिति को परिभाषित करने का मुझे मोह होने लगता है। वैसे तो मै लगभग 1980 से झाडीबोली और पोवारीबोली इन दोनो बोलियों की महत्ता जानकर उनकी मुव्हमेंट से जुड़ा हूँ। लेकिन शायद मेरी नोकरी की/में अत्यधिक व्यस्तता (प्रशासनिक, व्यवस्थापकिय, न्यायिकवत/Quasi-Judicial, प्रशिक्षणात्मक) की वजह से मै निवृत्तीतक इसमें अपना अधिक समय तथा योगदान देने में असमर्थ रहा हूँ। पर फरवरी-2013 मे निवृत्त होने के बाद मै इन दोनों बोलियों तथा समाज के मुव्हमेंट्स से मै पूरी सिद्दत से जुड़ने का भरसक प्रयास कर रहा हूँ। तब मेरा प्राथमिक निरीक्षण यह रहा कि हम राजा भोज की जयंती हरवर्ष अवश्य मनाते हैं और खासकर महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश के करीबन हर एक पोवार-बाहुल्य गाँवों तथा शहरों में भी यह जयंती धूमधाम से भी मनायी जाती हैं। किंतु (जहाँ तक मेरी जानकारी है) इन जयंती समारोहों में राजा भोज की विभिन्न सार्वभौमिक प्रतिभाओं पर सम्यक् प्रकाश डालने की कृति नगण्य, सूक्ष्मतम से भी सूक्ष्मतम पायी/निभाई जाती हैं। यह वस्तुस्थिति क्या दर्शाती है? प्रश्न है? और उत्तर हमें ढूंढना है, मेरे विचार से "ढूंढना ही पड़ेगा!" मै अपना निजी अनुभव कथन करूँ तो कहना चाहूँगा कि, हमारे पोवार समाज में प्रतिभा की एक सर्वोत्तम विधा साहित्य एवं काव्य में रुचि एवं हस्ती(!) रखनेवाले व्यक्तियों (स्त्री/पुरुषों)की कभी कोई कमी नही रही। लेकिन इन प्रतिभाशाली व्यक्तियों को कुटुंब, परिवार, रिश्तेदारों, तथा समाज में भी निराश, नकारात्मक, अवहेलना या तटस्थता के दृष्टिकोण से ही देखा जाता हैं। ऐसे व्यक्ति की असाधारण प्रतिभा/क्षमता का सही "आकलन" करना हमारे उपरोल्लेखित किसी भी घटकों की "परिधि" में शायद नही आता। जबकि ऐसा व्यक्ति समाज का भूषण होता/होती है, यह इतिहास ने राजा भोज और महारानी लीलावती के उदाहरणों द्वारा सुस्पष्ट कर दिया है। ऐसे व्यक्ति स्वाभाविक रूप से ही सर्वसाधारण व्यक्ति से भिन्न प्रवृत्ति तथा प्रकृति के इंसान होते है, उनकी तुलना हम अन्य सर्वसाधारण तथा व्यावहारिक रुप से सफलतम व्यक्ति से भी नही कर सकतें। लेकिन ऐसा ही होता है, वे प्रतिभाशाली व्यक्ति अल्पसंख्यक होने से उनकी सही कद्र नहीं हो पाती। अक्सर देखा जाता है कि उन्हें कुटुंब, परिवार, रिश्तेदार, समाज से साधारणतया दुत्कार तथा दुर्लक्ष या गलतफहमी तथा अवहेलना का ही पुरस्कार(?) दिया जाता है। राजा भोज की जयंती समारोहों में ऐसे व्यक्तियों को बहुतही कम बुलाया जाता है, तथा बुलाया गया तो भी उन्हें कोई सुनना नहीं चाहते। जबकि राजनीति से संलग्न व्यक्ति की घिसीपीटी और महत्वहीन (तथा कभी-कभी मूर्खतापूर्ण?) बाते प्रेक्षक/श्रोताओं द्वारा बड़े "रस" से सुनी जाती है। यहाँ तक की ग्राम पंचायत के सरपंच, उपसरपंचही नही मेंबर भी ऐसे मंचों से घंटो उदबोधन (?????) करते पाए जाते हैं।

अल्पसंख्यक प्रतिभाशाली व्यक्ति यदि राजा भोज की सार्वभौमिक प्रतिभा को वर्तमान जगत की पृष्ठभूमि में भी स्पष्ट करना चाहें, तो भी प्रेक्षक/श्रोता उंघने लगते है, बोर होने लगते हैं, आपस में आपसी-चर्चा करने लगते है। यह वर्तमान वस्तुस्थिति का कटु ही सही, पर वास्तविक स्वरुप है। शायद इसलिए हम पोवार भाई-बहन महाराजा भोज और महारानी लीलावती को सही दृष्टि से और सही मायने में अभीतक समझ ही नहीं पाएं है। हम अभी भी सम्यक्, शाश्वत और सर्वांगीण प्रगति की प्राथमिक पायदानों पर ही विचर रहें हैं। (जबकि हमारे समाज की क्षमता कई ज्यादा है।) यह बिडंबना है, लेकिन जहाँ तक मेरी जानकारी है, यही कटु-वस्तुस्थिति है। अतः पोवार (सभी धड़े) समाज और समाज-संगठनों के मूर्धन्यों से मेरी प्रार्थना है कि, हम भोज जयंती को राजनीतिक या कोई प्रज्ञाहीन कार्यक्रम या सिर्फ भोजनशाला न बनाकर महाराजा भोज की ही तरह गोष्ठियाँ, परिसंवाद, संगीत, नाटक, साहित्य, काव्य, आदि कलाओं का उत्कृष्ट संगम-समारोह बनाकर पेश करनेकी कृपा करें। यदि यह अव्यापारेषु व्यापार या छोटा मुँह बड़ी बात लगे तो अग्रिम क्षमाप्रार्थी हूँ।

***

डॉ.पुनम विवेक राणा
(इतिहास अभयासक) अमरावती

# हमारा पौराणिक इतिहास

किसी भी समाज के गौरवशाली इतिहास को जानने के लिए, हमे समाज के महापुरूषोंके विषय मे जानना आवश्यक होता है। अंग्रेजो एवं मुगलों के शासन के पूर्व हमारा पोंवार समाज समृद्ध था। हिंदु जीवन पद्धती को अंगिकार करनेवाली हमारी संतती समस्त विश्व का मार्गदर्शन करती थी। अंग्रेजो तथा मुगलो नेहमारी संस्कृती को नष्ट करने के कई प्रयास किए। मुगलोंने हमारी आस्था को क्षति पहुचाँयी तथा अंग्रेजोने हमे मानसिक गुलाम बनाया। जो आज तक चला आ रहा है। मुस्लीम शासक तथा अंग्रजोने हमारे गौरवशाली इतिहास के सही जानकारी वाले पृष्ठ की गायब कर दिए है। इसी के चलते वर्तमान समाज मे पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण तथा स्वयं के भाषा, संस्कृती तथा धार्मिकता के विषय मे हिनता का भाव दिखाई पड़ता हैं। पोंवार समाज का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। महाप्रतापी, महान, विद्वान, प्रजावत्सल साहसी और वीर राजाओ से हमारा इतिहास समृद्ध तथा गौरवशाली हुआ है। पोंवार राजाओ को ही 'परमार' या 'प्रमार' कहाँ जाता था। परमार अग्निवंशीय क्षत्रिय राजपूत कहलाँते है। परमारोंका साम्राज्य 8 वी शताब्दी से 14 वी शताब्दी तक बुलंद था। वर्तमान समाज के आचार-विचार, धार्मिक जीवन, सांस्कृतीक जीवन को समझने के लिए हमें अपने अतीत को जानना अत्यंत आवश्यक है। यह ठिक वैसे है जैसे हम चलचित्र मे भूतकाल की घटनाओंको देखते है।

परमार राजवंश की उत्पत्ती के बारे भारतीय तथा विदेशी इतिहासकारों ने अलग-अलग सिद्धांत प्रतिपादीत किएँ है। कुछ इतिहासकारो का मानना है की परमारों की उत्पत्ती आबू पर्वत पर ऋषी वशिष्ठ ने अग्नीकुंड से की थी। इसका प्रमाण हमें परमार शासक सिन्धुराज के कवि 'पद्मगुप्त' की पुस्तक 'नवसाहसांकचरित' मे वर्णित कथा से मिलता है। कर्नल जेम्स टॉड तथा कई इतिहासकार मानते है की राजपूतोंकी उत्पती शक, कुषाण तथा सिंथीयन जतियोंके संमिश्रण से हुई है। अब प्रश्न यह है की क्या परमार प्रथम पुरूष अग्नीकुंड से उत्पन्न हुए थे? अग्नीकुंड सिद्धांत से पूर्व क्या परमारो का अस्तित्व नही था? अगर था तो वो कौन थे? परमारोंको क्षत्रीय तथा राजपुत क्यों कहाँ जाता हैं? क्या क्षत्रिय तथा राजपूत एक ही है? इन सभी प्रश्नो के उत्तर हमे वेदो तथा पौराणिक ग्रंथों से मिलते है। इन्ही प्रश्नो पर इस लेख मे प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

**क्षत्रिय तथा राजपूत :**

वैदीक संस्कृती मे 'भारतवर्ष' का समाज चार वर्णो पर आधारीत था। इन वर्णो मे से एक 'क्षत्रिय' वर्ण था। क्षत्रिय वर्ण का कार्य देश का शासन तथा प्रजा का शत्रुओं से रक्षा करना था। शौर्य, तेज, धृति (धैर्य), दाक्ष्य (दक्षता) दान, युध्द से पलायन न करना तथा ईश्वरभाव यह क्षत्रिय के कर्म थे। वैदिक काल से बौद्ध काल तक क्षत्रिय 'सूर्यवंशी' या 'चंद्रवंशी' कहलाते थे। मध्ययुग के शुरूआत मे क्षत्रियोंका वर्णन 'राजपूत' इस शब्द से होने लगा। 11 वी शताब्दी के संस्कृत शिलालेखो मे क्षत्रियो के लिए 'राजपूत' शब्द का प्रयोग दिखायी पड़ता है। वैदिक काल मे व्यक्ती अपने कर्मो से क्षत्रिय कहलाता था ना की अनुवांशिकता से। इस काल मे क्षत्रियता किसी जाती विशेष से संबंधीत नही थी परंतु मध्ययुगीन काल मे 'राजपूत' शब्द यह क्षत्रीयों की अनुवांशिकता दर्शाता था। 'राजपुत' का मतलब ही राजा के वंशज था। संक्षेप मे राजपूत यह क्षत्रियोंका उपसमूह था। सभी राजपूत क्षत्रिय थे परंतू सभी क्षत्रिय राजपूत नही थे।

**सूर्यवंशी तथा चंद्रवंशी क्षत्रिय:**

प्राचीन भारतीय वेद, पुराण, श्रुती, स्मृती तथा आदी पौराणिक ग्रंथो से भारतीय वंशावली का पता चलता है। जब संसार मे मानवो की उत्क्रांती हुई तब अफ्रिका तथा दक्षिण भारत के कई हिस्से जल मे डूबे थे। जब जलस्तर घटने लगा तब जंगल और जंगली जानवरों का विस्तार हुआ। वैज्ञानिक शोध तथा पुरातत्व स्त्रोतो से यह पता चला है, की हिमयुग के पश्चात मनुष्य व अन्य जीवजंतू का वास्तव्य हिमालय की आसपास की भूमी पर था। प्राचीन भारतीय ग्रंथानुसार संपूर्ण मानव जाती ब्रम्हा जी की संतान है। ब्रम्हा जी की पत्नीयोंका नाम सवित्री तथा गायत्री था। ब्रम्हाजी के पुत्रो का नाम 1) अत्रि 2) अंगिरस 3) भृगू 4) कंदर्भ 5) वसिष्ठ 6) दक्ष 7) स्वायंभुवमन 8) कृतू 9) पुलह 10) पुलस्य 11) नारद 12) चित्रगुप्त 13) मरिचि 14) सनक 15) सनंदन 16) सनातन तथा सनतकुमार था। इन पुत्रो मे से स्वायंभुव मनु समस्तः मानव जाति के प्रथम संदेशवाहक थे। उनकी पत्नी का नाम शतरूपा था। उन्हे प्रियवत तथा उत्तानपाद नामक दो पुत्र एवं देवहुति, आकृति और प्रसूति नामक तीन पुत्रियाँ थी। स्वायंभुव मनु ने ही 'मनुस्मृती' की रचना की थी। जो मूल रूप मे आज प्राप्त नही है और कालचक्रानुसार जिसका अनर्थ ही होता रहा है। आश्रम व्यवस्थानुसार महाराज मनु, अपनी पत्नी शतरूपा के साथ संन्यासाश्रम मे प्रवेश कर नैमिषारण्य चले गए उनके पश्चात उनका राज्य जेष्ठ पुत्र प्रियव्रत ने संभाला। प्रियव्रत के पश्चात उनके पुत्र आग्निंध्र 'जम्बूव्दीप' के अधिपती बने। वैदीक काल मे मिस्त्र, सौदी अरब, ईरान, इराक, ईस्त्राईल, कजाकिस्तान, रूस, मंगोलिया, चीन, बर्मा, इंडोनेशिया, मालेशिया, जावा, सुमात्रा, भारतवर्ष, बांग्लादेश, नेपाल, भुटान, पाकिस्तान तथा अफगाणिस्तान के संपूर्ण खंड को 'जम्बूव्दीप' कहाँ जाता था। आगे चलकर आंग्नींध्र के नौ पुत्र जम्बू व्दिप के नौ खंडो के स्वामी बने। उनके नाम 1) इलावृत्त वर्ष 2) भद्राश्व वर्ष 3) केतुमल वर्ष 4) हिरण्यवर्ष वर्ष 5)रम्यकवर्ष 6) हरिवर्ष 7) किंपुरूष वर्ष 8) कुरूवर्ष 9) नाभिवर्ष थे। इन्ही के नाम पर उनके राज्य अर्थात नौ खंडो का नाम विदीत हुआ। नाभिवर्ष के पुत्र ऋषभ तथा ऋषभ के पुत्र भरत (बाहुबली) हुए। भरत का राज्य ही नाभिखंड तथा 'भारतवर्ष' के नाम से प्रचलित हुआ।

जम्बूव्दीप के 'सुमेरू' पर्वत पर ब्रम्हा पुत्र 'मरिचि' का निवास था। मरिची एक विद्वान पुरूष थे। मरिची की तीन पत्नियाँ सभूति, कला तथा उर्णा थी। मरिची तथा कला के पुत्र का नाम 'कश्यप' था। मरिचीने ही भृगू ऋषी को दंडनीती की शिक्षा दी थी। पुराणानुसार मरिचीपुत्र कश्यप ही सभी सूर और असूर जाति के मूलपुरूष थे। ऋषी कश्यप की पत्नियों से ही अनेक वंश की निर्मीती हुई है। ऋषी कश्यप के पत्नियोंके नाम दिती, अदिती, दनु, काष्ठा, अरिष्टा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, तिमी, विनीता, कद्रु पतांगी तथा यामिनी था। पुराणोंके अनुसार अदिती ने 12 श्रेष्ठ गणोंको जन्म दिया जिनका नाम विवस्वान, वरूण, धाता, अर्यमा, भग, मित्र, इंद्र, त्वष्ठा, पूजा,

सविता, विधाता, तथा त्रिविक्रम था। अदिती के पुत्रो को 'देव' कहाँ गया। तथा वे 'देवमाता' बनी। देवो के राजा 'इंद्र' बने। इनका राज्य तिबेट तथा हिमालय के क्षेत्र मे था, ना की पृथ्वी से उपर कही आसमान मे। दिती के पुत्र 'असूर' कहलाएं इनके ही कुल मे राजा 'बलि' का जन्म हुआ था। अदितीपुत्र वैवस्वान से ही 'वैवस्वत मनु' का जन्म हुआ। सभी धार्मिक ग्रंथानुसार इस काल मे जलप्रलय की बात की गयी है। जलप्रलय के बाद वैवस्वत मनुने ही 'त्रिविष्टप' अर्थात तिब्बत या देवलोक से ही प्रथम पिढी के मानवोंका अवतरण किया था। इनकी नौका गौरी-शंकर (माऊंट एवरेस्ट) पर्वत पर स्थित की गयी थी। अंग्रेजी फिल्म 2012 मे भी कुछ इसी तरह की घटनाओंका चित्रीकरण दिखाया गया था। पृथ्वीपर जैसे जलस्तर घटता गया इनकी संतानोने नए प्रदेश मे स्थलांतर किया। उन्होने फिरसे नए राज्यो का निर्माण किया जिनके नाम ब्रम्हावर्त देश, ब्रम्हर्षीदेश, मध्यदेश, आर्यावर्त तथा 'भारत' था। वैवस्वत नमु के 10 पुत्र थे। जिनका नाम 1) इल 2) इक्ष्वाकु 3) कुशनाम 4) अरिष्ट 5) धृष्ट 6) नरिष्यूंत 7) करूष 8) महाबलि 9) शर्याति तथा 10) पृषध था। यही लोग स्थलांतरण के समय वेद साथ लेकर आये थें। आगे चलकर 'इक्ष्वाकु' के वंश मे जैन तिर्थंकरो, महान राजाओ, साधु तथा महात्माओंका जन्म हुआ। इस वंश को ही 'सूर्यवंशीय क्षत्रीय' कहाँ गया। इसी सूर्यवंश मे राजा रघु, राजा हरिश्चंद्र, सगर, माधांता, प्रभुश्रीराम तथा लव-कुश आदि का जन्म हुआ। यह वंश बौध्द काल तक चलता रहा।

मत्स्य पुराणानुसार ब्रम्हापुत्र 'अत्रि' तथा अत्रि पुत्र का नाम 'चंद्रमा' था। चंद्रमा का विवाह बृहस्पती कन्या तारा से हुआ था। 'तारा' और 'चंद्रमा' का पुत्र बुध था। बुधपुत्र का नाम पुरूरवा को शतपथ ब्राम्हण ग्रंथ मे 'ऐल' भी कहाँ गया है। पुरूरवा के पाच पुत्र थे। जिनके नाम आयु, वनायु, शतायु धीमंत तथा अमावसु थे। अमावसु ने कान्यकुब्ज नामक नगर का निर्माण किया जिसे अब 'कन्नौज' कहा जाता है। पुरूरवा के प्रथम पुत्र आयु की पत्नी का नाम प्रभा था। आयु और प्रभा को नहुष, क्षत्रवृत्त, बृदशर्मा, राजभ, रजि तथा अनेना नामक छः पुत्र हुए। नहुष राजा बनके पश्चात उनका विवाह विरजा से हुआ। इस दंपती को यति, ययाति, संयाति, वियाति, अयाति और कृति नामक छः पुत्र हुए। बडे पुत्र यति ने संन्यास ले लीया । उनके दुसरे पुत्र ययाति ने फिर राजपाट संभाला। ययाति की दो पत्नियाँ थी जिनका नाम देवयानि तथा शर्मिष्ठा था। ययाति के पॉंच पुत्र हुए 1) पुरू 2) यदु 3) तुर्वसु 4) अनु और 5) द्रुहु आज से 9200 वर्षों पूर्व ययाति के इन पुत्रो का संपूर्ण धरती पर राज्य था। इसी से एशिया की जातियोंका जन्म हुआ बायबल के याकूब और ययाति की कहानी काफी मिलती है। आगे चलकर यदु से यादव वंश, पुरू से पौरव वंश, तुर्वसू से यवन वंश, अनुसे म्लेंच्छ वंश तथा द्रुहु से भोजवंश स्थापित हुआ। इन्होने सप्तसिंधू के प्रदेश मे राज्य किया। इन्हे वेदो मे पंचनंद भी कहाँ गया। इन सभी राजाओंको चंद्रवंशीय कहाँ गया। चंद्रवंशीय प्रतापी राजाओंके वंश तथा नाम

1) पुरू वंश – भरत, सुदास, शांतनु, भीष्म, अर्जुन, अभिमन्यू, तथा परिक्षित (पौरस राजा)

2) यदु वंश – श्रीकृष्ण, नल, हैहय, महिष्मान, भद्रसेन (यादव राजा)

3) तुर्वसू वंश – भानुमान, जिभानु, करंधम, मरूत, दुष्यंत (यवन राजा)

4) अनु वंश – कैकेय, मद्र, संभानर, कालानल, संजय, पुरंजय, जन्मेजय, महाशाल, उशीनर, तितिक्षु, शिवी, मद्रक, सुकीर, वृषादक (आनव वंश)

5) द्रुहू – बभ्रु, सेतू, आरब्ध, गांधार, धर्म, धृत, दुर्मना तथा प्रचेता के 100 पुत्र

महाभारत तथा प्राचीन ग्रंथोसे यह सिध्द होता है की चंद्रवशीय राजाओंने यहुदी, यवन और म्लेंच्छो का वंश चलाया। इन्ही वंशोमे से आगे चलकर 'ईसाई' तथा 'इस्लाम' धर्म की स्थापना हुई। यह वंश भी बौध्द काल तक चला।

अग्निवंश :

सूर्यवंशीय तथा चंद्रवंशीय क्षत्रियोंके वंशज बौध्द काल तक विस्तृत होते गए। इ.स. पूर्व 6 शताब्दी मे वैदिक धर्म पूर्णतया ब्राम्हणोंके नियंत्रण मे आ चुका था। कर्मकाण्ड बहुत बढ़ चुके थे। इक्ष्वाकूवंशीय राजा शुध्दोधन के पुत्र गौतमने इसके विरूध्द बगावत कर नए 'बौध्द धर्म' की स्थापना की। धीरे धीरे सभी सूर्यवंशी तथा चंद्रवंशी राजा बौध्द धर्मावलंबी बनने लगे। इसके चलते क्षत्रीयोंकी सभी वैदिक परम्पराएँ नष्ट होने लगी। ब्राम्हणोंने फिर चिढ़कर क्षत्रीयोंको 'शूद्र' की संज्ञा दे दी। अब समाज मे वैदिक धर्म की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हुआ। ऐसे मे फिर ब्राम्हणोंके एक समूह मे क्षत्रियोंको फिरसे वैदिक धर्म मे लाने का अथक प्रयास शुरू कर दिया। परिणामतः आबू पर्वत पर यज्ञ का आयोजन किया गया इस यज्ञ मे चार बलशाली राजवंश के पुरूषो को हिंदू धर्म मे फिरसे दिक्षीत किया गया। यह चार बलशाली पुरूषोने चालुक्य चौहान, परमार तथा प्रतिहार वंश चलाया। अग्निवंश की इस घटना का वर्णन आबू पर्वत स्थित 'अचलेश्वर महादेव मंदीर' के लेखमे किया गया है। इसी लेख मे चंद्रवंशीय तथा सूर्यवंशीय राजाओंका पूर्णतः अस्त होने की बात भी नमूद है। चार अग्निवंशीय पुरूषोंके वैदिक धर्म स्विकृती के बाद अधिकतर क्षत्रिय बौध्द धर्मावलंबी थे। इन बौध्दधर्मीय क्षत्रियोंसे अलग पहचान हेतू दिक्षीत पुरूष तथा उनके वंशनो को 'राजपुत' नाम से संबोधीत किया गया। 'राजपूत' का मतलब वे 'क्षत्रिय पुरूष' जो 'वैदिक धर्म' के राजवंश के प्रमुख अधिकारी है। भाट लिखीत वंशावली मे अग्निवंशीय क्षत्रियोंका इतिहास तथा वंशावली अग्नीकुंड घटना से ही लिखा जाता है। विक्रम संवत 1287 को शिलालेख आबू पर्वत पर स्थित है। इस शिलालेखानुसार प्रमार या परमार प्रथम पुरूष का नाम 'धूमराज' था। परमार क्षत्रिय वंश के 36 कुलों मे से एक है। उदयपूर प्रशस्ति, पिंगल सूत्रवृत्ति तथा तेजपाल अभिलेख मे परमारो को 'ब्राम्ह क्षत्रकुलीन' भी कहाँ गया है। परमारो की अनेक शाखाएँ थी परंतु मालवा के परमार शक्तीशाली तथा चक्रवर्ती सम्राट बने। इ.स. पूर्व 8 वी शताब्दी मे महान चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य परमार हुए। भविष्य पुराणानुसार अनके पुत्र 'शालिनीवाहन' थे। कालातंरानुसार प्रथम परमार राजा कृष्णराज उर्फ उपेंद्र इन्होने राज्य किया। परमारराजा सियुक, वाक्पतिराज, राजा भोज, राजा मुंज, सिंधुराज यह बडे विद्‌वान तथा प्रजावत्सल राजा थे। इन राजाओंकी विद्‌वत्ता तथा वीरता का इतिहास तत्कालीन अभिलेख तथा साहित्य मे नमूद है। परमार राजाओं का इतिहास पद्मगुप्त रचित 'नवसाहसांकचरित', मेरूतंग रचित जैन ग्रंथ 'प्रबंध चिंतामणी', अबुल फजल रचीत 'आईन-ए-अकबरी' से पता चलता है। परमार वंश के कई अभिलेख भी प्राप्त किए गए है। इनमे प्रमुख सीयक व्दितीयका 'हसौल अभिलेख' (इ.स. 948), वाकपति मुंज का 'उज्जैन अभिलेख' (इस. 980), राजा भोज के 'बांसवाडा' तथा 'बेतवा अभिलेख', उदयादित्य के समय की 'उदयपुर प्रशस्ति' तथा लक्ष्मणदेव की 'नागपूर-प्रशस्ति' अभिलेख आदि का समावेश होता है। इन साहित्य तथा पुरातात्वीक अभिलेखो से हमे अपना गौरवशाली इतिहास पता चलता है। भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यीक संपदा मे परमार राजाओंका

अतुलनीय योगदान रहा है। हम भी उन्हीके वंशज है। वर्तमान समाज मे हमारा भी यह दायीत्व बनता है की, हम अपनी मातृभूमी पर अपार श्रध्दा रखे और अपनी भाषा, संस्कृती तथा परंपरा के प्रति सम्मान रखे। दुनियाकी अनेक संस्कृतियां समय के साथ विलुप्त हो गई, परंतु हमारा हिंदु धर्म तथा विकसीत संस्कृती के प्रमाण आज भी पुरे विश्व भर मे पाएँ जाते है। हमारे वेद, पुराण तथा प्राचीन ग्रंथ कोई दंतकथाएँ नही। यह हमारा प्राचीन इतिहास है। कालचक्र के चलते इनमे कई गलत और कुत्सित बाते घुसेड दी गयी। अगर हम चाहे तो पुनः अपना प्राचीन गौरव प्राप्त कर सकते है। स्वतंत्रता के उपरांत हमे पुनश्चः अपने गौरवशाली इतिहास की कडीयोंको अपने सकारात्मक दृष्टीकोण से जानने का मौका मिला। परम आदरणीय प्रा. श्री ओ. सी. पटले जैसे इतिहासकारोंने हमे हमारी वास्तविक पहचान से अवगत कराया है। अब यह हमारा दायीत्व है की उनकी विचार धारा तथा समाजकार्य को हम आगे बढ़ाएँ तथा पोवार समाज के कार्य तथा उत्कर्ष मे योगदान दे।

सूर्यवंशी तथा चंद्रवंशी क्षत्रियः

प्राचीन भारतीय वेद, पुराण, श्रुती, स्मृती तथा आदी पौराणिक ग्रंथो से भारतीय वंशावली का पता चलता है। जब संसार मे मानवो की उत्क्रांती हुई तब अफ्रिका तथा दक्षिण भारत के कई हिस्से जल मे डूबे थे। जब जलस्तर घटने लगा तब जंगल और जंगली जानवरों का विस्तार हुआ। वैज्ञानिक शोध तथा पुरातत्व स्त्रोतो से यह पता चला है, की हिमयुग के पश्चात मनुष्य व अन्य जीवजंतू का वास्तव्य हिमालय की आसपास की भूमी पर था। प्राचीन भारतीय ग्रंथानुसार संपूर्ण मानव जाती ब्रम्हा जी की संतान है। ब्रम्हा जी की पत्नीयोंका नाम सवित्री तथा गायत्री था। ब्रम्हाजी के पुत्रो का नाम 1) अत्रि 2) अंगिरस 3) भृगु 4) कंदर्भ 5) वसिष्ठ 6) दक्ष 7) स्वायंभुवमन 8) कृतू 9) पुलह 10) पुलस्य 11) नारद 12) चित्रगुप्त 13) मरिचि 14) सनक 15) सनंदन 16) सनातन तथा सनतकुमार था। इन पुत्रो मे से स्वायंभुव मनु समस्तः मानव जाति के प्रथम संदेशवाहक थे। उनकी पत्नी का नाम शतरूपा था। उन्हे प्रियवत तथा उत्तानपाद नामक दो पुत्र एवं देवहुति, आकृति और प्रसूति नामक तीन पुत्रियाँ थी। स्वायंभुव मनु ने ही 'मनुस्मृती' की रचना की थी। जो मूल रूप मे आज प्राप्त नही है और कालचक्रानुसार जिसका अनर्थ ही होता रहा है। आश्रम व्यवस्थानुसार महाराज मनु, अपनी पत्नी शतरूपा के साथ संन्यासाश्रम मे प्रवेश कर नैमिषारण्य चले गए उनके पश्चात उनका राज्य जेष्ठ पुत्र प्रियव्रत ने संभाला। प्रियव्रत के पश्चात उनके पुत्र आग्निंध्र 'जम्बूव्दीप' के अधिपती बने। वैदीक काल मे मिस्त्र, सौदी अरब, ईरान, इराक, ईस्त्राईल, कजाकिस्तान, रूस, मंगोलिया, चीन, बर्मा, इंडोनेशिया, मालेशिया, जावा, सुमात्रा, भारतवर्ष, बांग्लादेश, नेपाल, भुटान, पाकिस्तान तथा अफगाणिस्तान के संपूर्ण खंड को 'जम्बूव्दीप' कहाँ जाता था। आगे चलकर आंग्नींध्र के नौ पुत्र जम्बू व्दिप के नौ खंडो के स्वामी बने। उनके नाम 1) इलावृत्त वर्ष 2) भद्राश्व वर्ष 3) केतुमल वर्ष 4) हिरण्यवर्ष वर्ष 5)रम्यकवर्ष 6) हरिवर्ष 7) किंपुरूष वर्ष 8) कुरूवर्ष 9) नाभिवर्ष थे। इन्ही के नाम पर उनके राज्य अर्थात नौ खंडो का नाम विदीत हुआ। नाभिवर्ष के पुत्र ऋषभ तथा ऋषभ के पुत्र भरत (बाहुबली) हुए। भरत का राज्य ही नाभिखंड तथा 'भारतवर्ष' के नाम से प्रचलित हुआ।

जम्बूव्दीप के 'सुमेरू' पर्वत पर ब्रम्हा पुत्र 'मरिचि' का निवास था। मरिची एक विद्वान पुरूष थे। मरिची की तीन पत्नियाँ सभूति, कला तथा उर्णा थी। मरिची तथा कला के पुत्र का नाम 'कश्यप' था। मरिचीने ही भृगू ऋषी को दंडनीती की शिक्षा दी थी। पुराणानुसार मरिचीपुत्र कश्यप ही सभी सूर और असूर जाति के मूलपुरूष थे। ऋषी कश्यप की पत्नियों से ही अनेक वंश की निर्मीती हुई है। ऋषी कश्यप के पत्नियोंके नाम दिती, अदिती, दनु, काष्ठा, अरिष्टा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, तिमी, विनीता, कद्रु पतांगी तथा यामिनी था। पुराणोंके अनुसार अदिती ने 12 श्रेष्ठ गणोंको जन्म दिया जिनका नाम विवस्वान, वरूण, धाता, अर्यमा, भग, मित्र, इंद्र, त्वष्ठा, पूजा, सविता, विधाता, तथा त्रिविक्रम था। अदिती के पुत्रो को 'देव' कहाँ गया। तथा वे 'देवमाता' बनी। देवो के राजा 'इंद्र' बने। इनका राज्य तिबेट तथा हिमालय के क्षेत्र मे था, ना की पृथ्वी से उपर कही आसमान मे। दिती के पुत्र 'असूर' कहलाएं इनके ही कुल मे राजा 'बलि' का जन्म हुआ था। अदितीपुत्र वैवस्वान से ही 'वैवस्वत मनु' का जन्म हुआ। सभी धार्मिक ग्रंथानुसार इस काल मे जलप्रलय की बात की गयी है। जलप्रलय के बाद वैवस्वत मनुने ही 'त्रिविष्टप' अर्थात तिब्बत या देवलोक से ही प्रथम पिढी के मानवोंका अवतरण किया था। इनकी नौका गौरी-शंकर (माऊंट एवरेस्ट) पर्वत पर स्थित की गयी थी। अंग्रेजी फिल्म 2012 मे भी कुछ इसी तरह की घटनाओंका चित्रीकरण दिखाया गया था। पृथ्वीपर जैसे जलस्तर घटता गया इनकी संतानोने नए प्रदेश मे स्थलांतर किया। उन्होने फिरसे नए राज्यो का निर्माण किया जिनके नाम ब्रम्हावर्त देश, ब्रम्हर्षीदेश, मध्यदेश, आर्यावर्त तथा 'भारत' था। वैवस्वत नमु के 10 पुत्र थे। जिनका नाम 1) इल 2) इक्ष्वाकु 3) कुशनाम 4) अरिष्ट 5) धृष्ट 6) नरिष्यूंत 7) करूष 8) महाबलि 9) शर्याति तथा 10) पृषध था। यही लोग स्थलांतरण के समय वेद साथ लेकर आये थें। आगे चलकर 'इक्ष्वाकु' के वंश मे जैन तिर्थंकरो, महान राजाओ, साधु तथा महात्माओंका जन्म हुआ। इस वंश को ही 'सूर्यवंशीय क्षत्रीय' कहाँ गया। इसी सूर्यवंश मे राजा रघु, राजा हरिश्चंद्र, सगर, माधांता, प्रभुश्रीराम तथा लव-कुश आदि का जन्म हुआ। यह वंश बौध्द काल तक चलता रहा।

मत्स्य पुराणानुसार ब्रम्हापुत्र 'अत्रि' तथा अत्रि पुत्र का नाम 'चंद्रमा' था। चंद्रमा का विवाह बृहस्पती कन्या तारा से हुआ था। 'तारा' और 'चंद्रमा' का पुत्र बुध था। बुधपुत्र का नाम पुरूरवा को शतपथ ब्राम्हण ग्रंथ मे 'ऐल' भी कहाँ गया है। पुरूरवा के पाच पुत्र थे। जिनके नाम आयु, वनायु, शतायु धीमंत तथा अमावसु थे। अमावसु ने कान्यकुब्ज नामक नगर का निर्माण किया जिसे अब 'कन्नौज' कहा जाता है। पुरूरवा के प्रथम पुत्र आयु की पत्नी का नाम प्रभा था। आयु और प्रभा को नहुष, क्षत्रवृत्त, बृदशर्मा, राजभ, रजि तथा अनेना नामक छः पुत्र हुए। नहुष राजा बनके पश्चात उनका विवाह विरजा से हुआ। इस दंपती को यति, ययाति, संयाति, वियाति, अयाति और कृति नामक छः पुत्र हुए। बडे पुत्र यति ने संन्यास ले लीया । उनके दुसरे पुत्र ययाति ने फिर राजपाट संभाला। ययाति की दो पत्नियाँ थी जिनका नाम देवयानि तथा शर्मिष्ठा था। ययाति के पाँच पुत्र हुए 1) पुरू 2) यदु 3) तुर्वसु 4) अनु और 5) द्रुहु आज से 9200 वर्षों पूर्व ययाति के इन पुत्रो का संपूर्ण धरती पर राज्य था। इसी से एशिया की जातियोंका जन्म हुआ बायबल के याकूब और ययाति की कहानी काफी मिलती है। आगे चलकर यदु से यादव वंश, पुरू से पौरव वंश, तुर्वसू से यवन वंश, अनुसे म्लेंच्छ वंश तथा द्रुहु से भोजवंश स्थापित हुआ। इन्होने सप्तसिंधू के प्रदेश मे राज्य किया। इन्हे वेदो मे पंचनंद भी कहाँ गया। इन सभी राजाओंको चंद्रवंशीय कहाँ गया।

चंद्रवंशीय प्रतापी राजाओंके वंश तथा नाम

1) पुरू वंश - भरत, सुदास, शांतनु, भीष्म, अर्जुन, अभिमन्यू, तथा परिक्षित (पौरस राजा) 2) यदु वंश - श्रीकृष्ण, नल, हैहय, महिष्मान, भद्रसेन (यादव राजा)

3) तुर्वसू वंश - भानुमान, जिभानु, करंधम, मरूत, दुष्यंत (यवन राजा) 4) अनु वंश - कैकेय, मद्र, संभानर, कालानल, संजय, पुरंजय, जन्मेजय, महाशाल, उशीनर, तितिक्षु, शिवी, मद्रक, सुकीर, वृषादक (आनव वंश) 5) द्रुहू - बभ्रु, सेतू, आरब्ध, गांधार, धर्म, धृत, दुर्मना तथा प्रचेता के 100 पुत्र

महाभारत तथा प्राचीन ग्रंथोसे यह सिध्द होता है की चंद्रवशीय राजाओंने यहुदी, यवन और म्लेंच्छो का वंश चलाया। इन्ही वंशोमे से आगे चलकर 'ईसाई' तथा 'इस्लाम' धर्म की स्थापना हुई। यह वंश भी बौध्द काल तक चला।

अग्निवंश :

सूर्यवंशीय तथा चंद्रवंशीय क्षत्रियोंके वंशज बौध्द काल तक विस्तृत होते गए। इ.स. पूर्व 6 शताब्दी मे वैदिक धर्म पूर्णतया ब्राम्हणोंके नियंत्रण मे आ चुका था। कर्मकाण्ड बहुत बढ़ चुके थे। इक्ष्वाकूवंशीय राजा शुध्दोधन के पुत्र गौतमने इसके विरूध्द बगावत कर नए 'बौध्द धर्म' की स्थापना की। धीरे धीरे सभी सूर्यवंशी तथा चंद्रवंशी राजा बौध्द धर्मावलंबी बनने लगे। इसके चलते क्षत्रीयोंकी सभी वैदिक परम्पराएँ नष्ट होने लगी। ब्राम्हणोंने फिर चिढ़कर क्षत्रीयोंको 'शूद्र' की संज्ञा दे दी। अब समाज मे वैदिक धर्म की रक्षा का प्रश्न उपस्थित हुआ। ऐसे मे फिर ब्राम्हणोंके एक समूह मे क्षत्रियोंको फिरसे वैदिक धर्म मे लाने का अथक प्रयास शुरू कर दिया। परिणामतः आबू पर्वत पर यज्ञ का आयोजन किया गया इस यज्ञ मे चार बलशाली राजवंश के पुरूषो को हिंदु धर्म मे फिरसे दिक्षीत किया गया। यह चार बलशाली पुरूषोने चालुक्य चौहान, परमार तथा प्रतिहार वंश चलाया। अग्निवंश की इस घटना का वर्णन आबू पर्वत स्थित 'अचलेश्वर महादेव मंदीर' के लेखमे किया गया है। इसी लेख मे चंद्रवंशीय तथा सूर्यवंशीय राजाओंका पूर्णतः अस्त होने की बात भी नमूद है। चार अग्निवंशीय पुरूषोंके वैदिक धर्म स्विकृती के बाद अधिकतर क्षत्रिय बौध्द धर्मावलंबी थे। इन बौध्दधर्मीय क्षत्रियोंसे अलग पहचान हेतू दिक्षीत पुरूष तथा उनके वंशनो को 'राजपुत' नाम से संबोधीत किया गया। 'राजपूत' का मतलब वे 'क्षत्रिय पुरूष' जो 'वैदिक धर्म' के राजवंश के प्रमुख अधिकारी है। भाट लिखीत वंशावली मे अग्निवंशीय क्षत्रियोंका इतिहास तथा वंशावली अग्नीकुंड घटना से ही लिखा जाता है। विक्रम संवत 1287 को शिलालेख आबू पर्वत पर स्थित है। इस शिलालेखानुसार प्रमार या परमार प्रथम पुरूष का नाम 'धूमराज' था। परमार क्षत्रिय वंश के 36 कुलों मे से एक है। उदयपूर प्रशस्ति, पिंगल सूत्रवृत्ति तथा तेजपाल अभिलेख मे परमारो को 'ब्राम्ह क्षत्रकुलीन' भी कहाँ गया है। परमारो की अनेक शाखाएँ थी परंतु मालवा के परमार शक्तीशाली तथा चक्रवर्ती सम्राट बने। इ.स. पूर्व प्रथम शताब्दी मे महान चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य परमार हुए। भविष्य पुराणानुसार अनके पुत्र 'शालिनीवाहन' थे। कालातंरानुसार प्रथम परमार राजा कृष्णराज उर्फ उपेंद्र इन्होने राज्य किया। परमार राजा सियुक, वाक्पतिराज, राजा भोज, राजा मुंज, सिंधुराज यह बडे विद्वान तथा प्रजावत्सल राजा थे। इन राजाओंकी विद्वत्ता तथा वीरता का इतिहास तत्कालीन अभिलेख तथा साहित्य मे नमूद है। परमार राजाओं का इतिहास पद्मगुप्त रचित 'नवसाहसांकचरित', मेरूतंग रचित जैन ग्रंथ 'प्रबंध चिंतामणी', अबुल फजल रचीत 'आईन-ए-अकबरी' से पता चलता है। परमार वंश के कई अभिलेख भी प्राप्त किए गए है। इनमे प्रमुख सीयक व्दितीयका 'हसौल अभिलेख' (इ.स. 948), वाकपति मुंज का 'उज्जैन अभिलेख' (इस. 980), राजा भोज के 'बांसवाडा' तथा 'बेतवा अभिलेख', उदयादित्य के समय की 'उदयपुर प्रशस्ति' तथा लक्ष्मणदेव की 'नागपूर-प्रशस्ति' अभिलेख आदि का समावेश होता है। इन साहित्य तथा पुरातात्वीक अभिलेखो से हमे अपना गौरवशाली इतिहास पता चलता है। भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यीक संपदा मे परमार राजाओंका अतुलनीय योगदान रहा है। हम भी उन्हीके वंशज है। वर्तमान समाज मे हमारा भी यह दायीत्व बनता है की, हम अपनी मातृभूमी पर अपार श्रध्दा रखे और अपनी भाषा, संस्कृती तथा परंपरा के प्रति सम्मान रखे। दुनियाकी अनेक संस्कृतियां समय के साथ विलुप्त हो गई, परंतु हमारा हिंदु धर्म तथा विकसीत संस्कृती के प्रमाण आज भी पुरे विश्व भर मे पाएँ जाते है। हमारे वेद, पुराण तथा प्राचीन ग्रंथ कोई दंतकथाएँ नही। यह हमारा प्राचीन इतिहास है। कालचक्र के चलते इनमे कई गलत और कुत्सित बाते घुसेड दी गयी। अगर हम चाहे तो पुनः अपना प्राचीन गौरव प्राप्त कर सकते है। स्वतंत्रता के उपरांत हमे पुनश्चः अपने गौरवशाली इतिहास की कडीयोंको अपने सकारात्मक दृष्टीकोण से जानने का मौका मिला। परम आदरणीय प्रा. श्री ओ. सी. पटले जैसे इतिहासकारोंने हमे हमारी वास्तविक पहचान से अवगत कराया है। अब यह हमारा दायीत्व है की उनकी विचार धारा तथा समाजकार्य को हम आगे बढ़ाएँ तथा पोवार समाज के कार्य तथा उत्कर्ष मे योगदान दे।

जय राजा भोज

संदर्भ ग्रंथः

English

Charak, Dr. K. S. 'Surya the Sun God' Uma Publication New Delhi 1999
Downson, John 'Classical Dictionary (Hindu Mythodology and Religion, Geography, History and Litreture) Trubnar and Co. Ludoate Hill 1879
Paliwal Dr. B.B. 'Message of the Puranas' Dimond pocket Books Pvt. Ltd. New Delhi 1879.
Pargitar F.E. 'Ancient Indian, Historical Tradition', Oxford University, Press 1922
SATTAR ARSIA, 'Valmik Ramayan' Penguin Books, UK 2000

हिन्दी

गुप्ता, माणिकलाल 'भारत का इतिहास (प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक)' एटलांटीक पब्लिशर्स ॲण्ड डिस्टीब्युटरर्स, न्यु दिल्ली 2003
जोशी, अनिरूध्द 'हिंदुओं के प्रमुख वंश, जानिए अपने पूर्वजो को'
ठाकुर, परशुराम ब्रम्हवादी, 'विक्रमशिला का इतिहास' प्रभात प्रकाशन, 2013
मिश्र, विद्यानिवास (संपा) 'भारतीय संस्कृती के आधार', प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2006
पाण्डेय, धनपती अशोक अनन्त 'प्राचीन भारत का राजनितीक और सांस्कृतीक इतिहास,
मोतीलाल बनारसी दास पब्लीकेशन्स नई दिल्ली, 1998
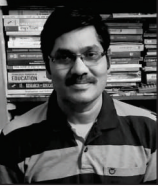
**प्रा.डॉ.शेखराम येळेकर**
नागपुर

# माय बोली पोवारी

महाराष्ट्र क् भंडारा, गोंदिया ना मध्यप्रदेश क् बालाघाट जिल्हामा पोवार समाज मोठ् संख्यालका से. मनजे वैनगंगा नदी ना वक् अगलबगलक् प्रदेशमा पोवार समाज बसी से. सिवनी यन् पोवार समाजकी बोली भाषा पोवारी से. पोवारी या बोली बहुत मधुर बोली से. पोवारी बोली बोलनेवालो सन्मान जनक शब्दप्रयोग को इस्तमाल करसे, मनुन जशी वैनगंगा नदी पानीलका भरी रवसे तसीच पोवारी बोली मानसन्मान लका डबाडब भरी से. पोवारी बोली पोवार समाजक् अस्तित्व की पयचान आय. पोवारी लोकगीत बहुत हृदय स्पर्शी सेत. पोवारी संस्कार ना पोवारी संस्कृतीको दर्शन पोवारी गानामालक् चोवसे. पोवारी बोलीमा बियाका गाना पोवारी बोलीकी महानता देखावसेत. पोवारी बोली मा मांडोधरी, बिजोरा, हल्दी, काकन, मायदसायी, सुतगोवायी, सुतसोडायी अना आंदनका गाना बहुतही पोवारी दिलमा ना पोवारी वोठपरा राज करसेत. टुरी सार करनक् भारी का गाना मायबाप क् प्रेम विरह ना मनक् दर्दला उजागर करसेत. पोवारी बोलीक् गानामा यमक छंद येको बहुत साजरो इस्तेमाल भयीसे. पहिलेक् जमानोमा लेखनकला को ज्यादा ज्ञान नही रहे पर बी पोवारी बोलीका गाना अजही पोवारी दिलमा राज कर रह्या सेत. पोवारन् पोवारी बोली टीकायकन ठेयीस पन, शिक्षण अना व्यापारक् चक्करमा मरदमान्या जहान गयेव वहानकी बोलीभाषा आत्मसात करनकी कोशिस करीस. जसो महाराष्ट्र मा मराठी को ना एम. पी. मा हिंदी को प्रभाव पोवारी बोलीपर बयेव. आब् जरा जरा इंग्रजी को भी प्रभाव होय रही से. यक् कारनलक् मरदमान्या पोवारी बोली पासून जरा जरा दूर भया. मोट्यांग मराठी-हिंदी ना नहान्यांग पोवारी राज करन बसी. शिक्षण सिकनेवाला टुरुपोटु घरक् बाहार निकल्या ना प्रमाण भाषामा बोलनसाती प्रयास करन बस्या. उनक टुरुपोटु मंग बोलचालमा प्रमाणभाषाकोच इस्तेमाल करन बस्या. असो करता करता धीरु धीरु पोवार समाज पोवारीपासून दूर भयेव. पढेव लिखेव पोवार ना व्यापार करनेवालो पोवार पोवारीपासून पयले धिरु धिरु दूर जान बसेव. यकमा पोवारी बोलीमा लिखित साहित्य की कमतरता पोवारीला संकटमा टाकनसाती सहाय्यक बनी. पोवार का टुरुपोटु लाजरा रवसेत मनुन पोवारी बोलनला लाजत रह्या. असोच पोवार पोवारीपासून दूर जान बसेव. पोवारीला बचावनसाती जरासो मूलमंत्र:-

१. पोवार समाज का टुरुपोटु मरदमान्या ना आयीमायी एक दुसरोसंग पोवारी बोले पायजे.

२. पोवारी बोलनला लाजनको नही या बात ध्यानमा ठेये पायजे.

३. जेला पोवारी बोलता नही आव वको कोनी घुस्सा नही करे पायजे.

४. जेला पोवारी बोली बोलता नही आव वन् पोवारी शिकनकी ना बोलनकी कोशिस करे पायजे.

- ५. हर पोवारन् पोवारी बोलीक् प्रचार प्रसार साती सहाय्य करे पायजे.
- ६. हर पोवार ला पोवारी बोलीको गर्व अभिमान ना आत्मीयता रहे पायजे.
- ७. पोवारन् पोवारी बोलनेवालकी हासीमज्याक नही उडाये पायजे.
- ८. पोवारी से त् पोवारकी पयचानसे या बात पोवारन् ध्यानमा ठेये पायजे.
- ९. पोवारी बोलीमा साहित्य को निर्माण भये पायजे.
- १०. पोवारी लोकगीत प्रबोधन गीतक् माध्यमलका पोवारी को प्रचार प्रसार भये पायजे.
- ११. पोवारीमा भजन पोवारीमा आरती भयी  पायजे.
- १२. पोवारक् दिलमालका वोठपरा पोवारीका गीत आये पायजेत.
- १३. पोवारीमा किर्तनक् कार्यला बढावा देये पायजे.
- १४. पोवारीमा नहान नहान बोधकथाको निर्माण भये पायजे.
- १५. पोवारन् आपल् नहान टुरुपोटुला पोवारीमा कथा कहानी सांगे पाहिजे.
- १६. पोवारी इतिहास ना पोवारी संस्कृतीकी जानकारी हर पोवार ला भेटे पायजे.
- १७. पोवारी बोलीक् साहित्यिक क् कार्य ला बढावा देये पायजे.
- १८. पोवारन् आपल् बोलीसंग दुसर् बोलीकोभी आदर करे पायजे.
- १९. हर पोवार पोवारी साहित्यिक रहेच असो नही, तरी आपलोला जसो जमे  तसो पोवारी संरक्षण ना संवर्धनासाती सहकार्य करे पायजे.
- २०. पोवारी लोकगीत लोकजागर करनेवालोक कार्य ला बढावा देये पायजे.
- २१. आपल् बुजरुगइनन् अनमोल पोवारी बोली देयी सेन वोला संभाले पायजे या भावना पोवार क् मनमा घर करे पायजे.  अशी से या आमरी पोवारी बोली. पोवारी नही त् पोवार अस्तित्वला महत्त्व नही. आमरी पोवारी बोली, मधुरता ना मानपान सन्मान की खोली से या बोली सदा बहरे पायजे असो लगसे. पोवारी बोलीन् पोवार क् दिलमा सदा राजीखुशीलका राज करे पायजे असो लगसे.  माता गढकालिका सबला यश दे. आवो सबजन करो तयारी, बोलो पोवारी लिखो पोवारी

**सौ.छाया सुरेन्द्र पारधी**
सिहोरा ता.तुमसर

# माय बोली पोवारी

कोनतोही समाज की बोलीभाषा या वोन् समाज को दर्पण रवसे जेकोमा वोन् समाज का रितिरीवाज, संस्कृति की झलक मिलसे . बोलीभाषा सब समाजजनला एक माला मा बांधकर ठेवसे। आपसी विचारो को आदानप्रदान को साधन बनसे अना पिढी दर पिढी हस्तांतरित होत जासे. समाज बंधू मा आपसी प्रेम, बंधुता, आत्मीयता बनायकर ठेवनला मदत करसे अना वोन समाज की पहचान बन जासे. असि मोरो पोवार समाज की मोरी मायबोली पोवारी से.

मोरपंख सी सुंदर पोवारी
शहद सी मीठी बोली मोरी
अनोखो शब्दों कि फुलवारी
सजावो मायबोलीकी क्यारी

पोवारी आमरो पोवार समाज की मायबोली, येकि ध्वनी भी मधुर से। माधुर्य मोरी मायबोली को गुणधर्म से। येको हरेक शब्द मा मधुरता आदर अना नम्रपना से। मोठो व्यक्ति साती आदरसुचक शब्द सायनो दादा, सायनी माय, काका माय, माम माय, बड़भाऊ, बड़ीबाई असा शब्द सेती। हर शब्द मा प्रेम, आदर झलकसे।

मोरी मायबोली मुख्यत बालाघाट, भंडारा, सिवनी, गोंदिया, नागपुर जिलामा बोली जासे।. शोधकर्ता को अनुसार मालवा लका आमरा पूर्वज अठरावी सदी मा विदर्भ/नागपुर को शासकों को संग सेना मा भागीदारी साती नगरधन आया , उनको संग उनका परिवारजन भी इतन आयकर बस गया. मराठा काल मा पोवारइंन कटक को युद्ध को कुशल नेतृत्व करीन. अना मराठाइन ला युद्ध जितनला मदत करीन, मून उनला भेटस्वरुप वैनगंगा को क्षेत्र प्राप्त भयेव. 36 कुल का ये क्षत्रिय पोवार वैनगंगा क्षेत्रमा स्थायी रूप मा बस गया.

पँवार/ पोवार मध्यभारत लक पँवारी भाषा धरकन नगरधन, वहा लक वैनगंगा को किनारा पर आया यहां को जमीनला सुपिक बनाईंन. यहां आयेपर मूल पोवारी/पँवारी बोली पर मराठी, हिंदी ना अन्य भाषा को प्रभाव पडेव अना वाहान का काही शब्द पोवारी बोलीमा घुल मिल गया। ना मूल पोवारी बोली मा वक्त प्रमाटी बदल भयेव.

पहले सब पोवार आपली पोवारी भाषा बोलत होता. उनको आसपास का अन्य जातीका लोक भी पोवारी बोलत होता.येतरी सुंदर,मीठी ना बोलनला सोपी से आमरी पोवारी.

मोरी मायबोली बोलुन कौतुका।
जसी गोड अमृतकी धारा ।।
बोलबिन सारा । प्रेमलका।।

मोरी मायबोली मा शब्द भी तसाच अलगथलग सेती. मोठो शब्द संग्रह से. मासी इंधारो,झुनझुरका, महातनी बेरा, भूमसारो, लखलखती तपन, घामचरचरो, कारो कुचकुचो, लाल गुजगुजो, भानी, बटकी, गंगार, नोन, सोर्या,इत्यादि अनेक शब्द जो कोनतोच भाषा मा नहीं सपड़त. हाना (म्हणी) लका समृद्ध असी बोली से. जसो: कारी की पिवरी होनो, कारो मस पड़नो, कोल्ह्या कुत्रा की धन, कारो धुव्वा को जानो, गलड्या गडू, डोरा वरत्या आवनो, दीठ लगनो, कमाई न धमाई टेकरी पर पुंजना, मोठो मोठो की मांदी ना भागा बाई की चिंधी, मुद्दल दुन ब्याज प्यारी, आयतों पर रायतो. असो मोठो शब्दसंग्रह भी से. पर आमरो दुर्भाग्य की आमरी बोली या लिखित नहाय. श्रुती द्वारा पिढी दर पिढी हस्तांतरित भई से. पिढी दर पिढी बीह्या का सब दस्तुर का गाना , खेतमा परा लगावन को घनी,परा सरेपर का गाना, जातोपर का गाना,ये गाया जाय रहया सेती. पर ओको लिखित साहित्य उपलब्ध नोहोतो। मुन धीरू धीरू सब पोवारी भाषा भूलन बस्या. आब पोवारी भाषा भुलनको मुख्य कारण अन्य भाषाओ को प्रभाव, जीवनयापन साती स्थानांतरण, आपलो बोली को बारामा उदासीनता, अना भाषा को प्रती हिन् भावना ये प्रमुख कारण सेती.

पर आब समाजमा बोली भाषा को प्रती जागरूकता आई से. हिनभावना धीरू धीरू कम होय रही से. एकमेक को प्रेरणा लक सब बंधु-भगिनी बोली भाषा को प्रसार प्रचार साती प्रयत्नशील सेती. सब आपापलो तरीका लक प्रयत्न कर रह्या सेती. एक आशा की किरण पोवारी इतिहास, संस्कृति, साहित्य अना उत्कर्ष परिषद को द्वारा दृष्टिगोचर होय रही से.२० जानेवारी २०२०ला बनेव येव समूह पोवारी साहित्यला लिपिबद्ध करस्यानी वोको जतन को महत्वपूर्ण कार्य कर रही से. डिजिटल माध्यम मा powari history blog द्वारा पोवारी की कविता, कहानी अना अन्य साहित्य को भी जतन करेव जाय रही से.या आमरो साती मोठो गर्व की बात से.

जय राजा भोज।जय माता गढ़कालिका

# "कौशल विकास बेरोज़गारी को मुँह तोड़ जवाब"

डॉ.विशाल बिसेन, मुंबई

पोवार/पंवार समाज का अतीत बहुत ही आत्मनिर्भर रहा है। मालवा से नगरधन तथा हमारे कर्तव्यनिष्ठा एवं शौर्यप्रतीकों की भेंट हम मध्य भारत के अलग अलग क्षेत्रों में बस गये। हमारे देश के साथ साथहमारा समाज कृषि प्रधान होने के बावजूद तथा अन्य क्षेत्रों में सक्रिय होने के बावजूद भी जिस तरह से हमारे समाज का सर्वांगीण विकास होना चाहिए था वह नहीं हो पाया है। समय बदलता गया और हमारी प्रगति मे भी कमी आयी। आज भी हमारे युवा बेरोज़गारी के चरम सीमा पर है। हमारे पास उपयुक्त स्त्रोत नहीं होने की वजह से हम भटकाव की राह पर अग्रसर है। हमारे समाज में अलग अलग क्षेत्रों में हमारे स्वजातीय मित्रों ने अपनी प्रतिभा के बल पर देश एवं विदेश में अपनी पह्चान बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है । ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ पोवार/पंवार समाज का प्रतिनिधित्व नहीं रहा हो।

आज समाज में बेरोज़गारी के साथ साथ एक भटकाव की परिस्थिति निर्माण हुयी है। हमारे समाज को एक माला में पिरोये जाने की आवश्यकता है और समाज को सर्वश्रेष्ठ उन्नति की जरुरत है। समाज का युवा सुचारू रुप से समाज को प्रगतिशील बना सकता है और प्रगतिशील जीवन को बनाने हेतु बहुत परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। सामाजिक तथा प्रगतिशील जीवन व्यतीत करने हेतु जीवन में आर्थिक आय की बहुत ज़रूरत है औरआर्थिक स्थिति बेहतर बनाने हेतु विद्या ग्रहण कर के यदपी जिन्होने विद्या किसी कारणवश ग्रहण नही कर पाए हैं, उन सभी को परिश्रम करने की आवश्यकता होती है। विद्या ग्रहण करना हमारे जीवन में एक राह दिखाता है जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ाता है तथा हमें कोई भी बहका नहीं सकता है । विद्या ग्रहण करने के बावजूद तथा बड़ी बड़ी उपाधियाँ ग्रहण करने के बावजूद भी हमारे समाज में बेरोज़गारी की बढ़ी हुई हैं।

समाज में बेरोज़गारी क्यूँ है !और उसके क्या कारण है ?? इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है ??? इत्यादि के बारे में चर्चा करना समय को व्यर्थ करने जैसा है। यद्यपि बेरोज़गारी को हम किस तरह हमारी सूझ-बूझ और हमारी सकारात्मक सोच से दूर कर सकते हैं इस बारे में चर्चा करना और उसके पथ पर चलना ही अक़्लमंदी है। अपनी सूझ-बूझ और सकारात्मक विचारधारा का मतलब है कि हम स्वयं में कैसे परिवर्तन लाए और मूलभूत उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से अपने आपको कैसे परिवर्तित करते हैं। आज के आधुनिक जगत में जहाँ संसाधनों की कोई कमी नहीं होने के बावजूद भी योग्य दिशा और मार्गदर्शन के अभाव में हमारे युवा उनके लिए जीवनयापन करने के लिए ज़रूरी चीज़ों का संसाधन जमा नहीं कर पाते हैं और इसी लिए इन्हीं परिस्थितियों में मेरे ख़याल से कौशल विकास यह एक रामबाण के जैसे कारगर उपाय साबित हो सकता है।

जहाँ हर युवा सही स्त्रोत के माध्यम से अपने गुणों, लगन, परीक्षण तथा परिश्रम के बलपर ख़ुद को अपने पाँव पर खड़ा रहने योग्य बना सकता है। कौशल विकास से हमें अलग अलग क्षेत्रों में रोज़गार एवं लघु उद्योग शुरू करने के अवसर प्राप्त हो सकते है। कौशल परीक्षण के लिए भारत सरकार ने कौशल भारत अभियान के तहत कौशल विकास मंत्रालय की स्थापना भी की है और राज्य सरकारों से भी कौशल विकास के लिए अलग अलग मंत्रालयों में अलग अलग योजनाओं के तहत युवाओं को प्रशिक्षण देकर स्वयं बल पर काम शुरू करने की राह दिखाई है। हमारा ज़्यादातर समाज ग्रामीण क्षेत्र में रहने की वजह से हर स्तर पर शिक्षानिती, रोज़गार संबंधी जानकारी उपलब्ध नहीं कर पाते है इसी लिए हमें जन जागरण की भी जरुरत है। तालुक़ा तथा ज़िला स्तरपर निःशुल्क प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं जिनका फ़ायदा हमारे युवा ले सकते हैं। हमें हमारे अतीत को याद करने की ज़रूरत है जहाँ हम जन्मजात ही कौशल पूर्ण रहे है हमारे पुरखों का गौरवशाली इतिहास जंग लड़ने में और धर्म की रक्षा करने तथा समाज के सर्वांगीण विकास में बिता हुआहै। उसी बीच हमारा अधिकतम समय और सदियाँ योग्य मार्गदर्शन के अभाव में अंधकार, ग़रीबी और सामाजिक विघटन के जाल में फँसता चला गया है। आज हमें जंग लड़ने के लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है लेकिन अब यह समय आ गया है की हम जंग हमारे सर्वांगीण विकास के लिए और समय रहते हमारे भविष्य को अनुकूल बनाने के लिए हमारे महान महाराजा भोज तथा महान विश्व विक्रमादित्य के महान पराक्रम से प्रेरित हो कर और उन्होंने दिये स्वयं भूमार्ग पर चल कृषिज्ञ के साथ साथ कुशल उद्यमी भी बनने का है। हमारे दादा, परदादाओं को कोई सिखाने नहीं आया था कृषि की उपज कैसे ली जाती है और कृषी के संसाधान कैसे तयार किए जाते हैं। यह उनकी कौशल क्षमता ही थी कि उन्होने स्थानान्तरित होने के बावजूद भी कृषि के माध्यम से ख़ुद का एवं अपने परिवार का जीवन कैसे सफलतापूर्वक साध्य करने के साथ साथ अपना एक मुक़ाम हासिल किया तथा अपने समाज में एक साथ जोड़कर प्रगीत के पथ पर समाज के संस्कृति का परचम हमेशा लहराते रखा। उन्होंने अपनी भाषा, संस्कृति और अपने कृषि प्रधानहोने का सम्मान कभी कम नहीं होने दिया।

हमारे पुरखों ने सिखाये जुझारू भूतकाल से तथा हमारे पास उपलब्ध संसाधनों के आधार पर हमें हमारा गौरवशाली इतिहास दोहराने की ज़रूरत है। हमें आज लड़ना है बेरोज़गारी से तथा हमारी बिगड़ती जा रहीहै आर्थिक परिस्थितियों से । हमें निरंतर स्वयं प्रयोग तथा असफलता से मुंहतोड़ मुक़ाबला करते हुए सिखते जाना है। हमें अपना कौशल विकास करना है और अपना एक मुक़ाम हासिल करते हुये आनेवाली पीढ़ी के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर सकें तथा अन्य समाजों के लिए एक उदाहरण बन सकें की हम चाहें तो कुछ भी मुमकिन हो सकता हैं। हम कृषि से संबंधित यन्त्र तथा तंत्र का प्रशिक्षण लेकर कृषि क्षेत्र में ज़रूरत पढ़ने वाली काफ़ी चिजों कासप्लाई कर सकते हैं। कृषि से संबंधित अनेक प्रोडक्शन यूनिट्स ला सकते हैं तथा आधुनिक कृषि कीमिसाल भी क़ायम कर सकते हैं । कृषि में लगने वाले उपकरणों का निर्माण कर सकते हैं एवं कृषि केअलावा भी बहुत जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण कर व्यवसाय कर सकते है। क्योंकि वह ज़माना चलागया जहाँ खातीं/ बढ़िई और आदि जातियों की कुछ विशिष्ट ही काम कर सकती थी

***

# दिवारी (दिपावली)

सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

**टवरीको मंद उजारो मा अवसको इंधारो मिटावो।**
**दीपक को उजारो वानी जीवन तुमि महकाओ।।**

दिपावली दिवो को त्योहार आय। दिप अधिक अवली मनजे दिवोकी अवली मनजे ओळी। दिवारी शरद ऋतू को कार्तिक अमावास्याला आवसे। "तमसो मा ज्योतिर्गमय", अंधारो मा लक उजारो कर लिजाने वालो त्योहार आय। हिंदुओ को पवित्र त्योहार आय। पूरो भारत भर दिवारी मोठो हर्षोल्लास लक मनाई जासे। भारतमा अलगअलग क्षेत्र मा अलगअलग तरीका लका दिवारी मनाई जासे। भगवान रामजी जब रावणला मारकर सीता माता सहित लंका लका अयोध्या आया तब अयोध्यावासी न दिपक जरायके पुरों अयोध्या मा दिवो की रोषणाई करीतिन। येनच दिवस राजा विक्रमादित्य भी सिंहासन पर बस्याता।

आमरा वैनगंगा तटीय ३६ कुलीन पोवारइनका भी दिवारी मनावनका आपला रितीरिवाज सेती। बडो ही साधो अना परंपरागत तरीका लका दिवारी मनाव सेती। दिवारी को पंधरा दिवस पयले पासून घर की माती लिपनो, घरधुसा (साफसफाई) अना सरावनो पोतनो (रंगरंगोटी) करसेत। दिवारी मा नवा कपड़ा लेसेत। ना दिवारी को स्वागत साती तयार होसेत।

दिवारी को पयलो दिवस धनतेरस आय। येन दिवस झुंझुरका उठके गरम पानी मा धन्या टाकसेती ना आंग धोवसेती। दिवस बुड़ता व्यापारी, भगवान धन्वंतरि की पूजा करके, नवीन बही खाता बनायकर उनकी पूजा अर्चना कर सेती।

नरकचतुर्दशी दिवारी को दुसरो दिवस आय। आख्यायिका से की येन दिवस भगवान श्रीकृष्ण न नरकासुर राक्षस को वध करितीस। अना भगवान विष्णु न नरसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकश्यपु को वध करितीस।

अमृत प्राप्त करणसाती जब् समुद्रमंथन भयेव तब माता लक्ष्मी निकली वोन् कार्तिक अमावस्या को दिवस लक्ष्मीपूजन करसेती। दिवारी को येन तिसरो दिवस सड़ा सारवन करके आंगन मा चौक (रांगोळी) टाकसेती। दिवस बुडता आंबा को पान की तोरण बांधसेती। घरं पंचपक्वान बनावसेती अना लक्ष्मी माता की पूजा करके दिवो की रोषणाई करसेती।

बलिप्रतिपदाला पोवार जातमा विशेष महत्व से। येनच दिवस भगवान कृष्ण न गोवर्धन पर्वत आपलों करगुली पर धारण करके गोकुलवासींला वरुनदेव को कोप लक बचाईतीस। येन दिवस भगवान वामन न महाराज बलीला तीन पग धरती मांगिस। तब बलीराजा न सहर्ष स्वीकार करिस, तब् भगवान बलि न एक पायमा आकाश, दूसरो पाय मा धरती,

तीसरो पाय मा खुद ला दान करिस। मुन येन दिवस बलीराजा की पूजा होसे। मुन भी येन दिवसला विशेष महत्व से। सकारी पोवार समाजमा बेस्कड़ पर ना कोठा को फाटक पर सेन को सड़ा, चौक अना ओको पर सेन की डोकरी बनावसेत।

दुपारी गावमा की सब गाई, गायकी आखर परा जमा करसे। बिच मा सेन को गोधन मंडायेव जासे।आखर का गायकी गाई संग पांच चक्कर लगावसेत। नवीन जनी गाय ना ओको गोराला गोधन पर आनकर खेलावसेती। ओको बादमा लहान टुरु पोटुला गोधन पर सोवायेव जासे, सब ओन् गोधन का पाय लगसेत, ना गोधन की टिकली माथा पर लगावसेत। दिवस बूड़ता सड़ा अना गाय खुरी की रांगोळी बनाव् सेती। बादमा चाऊर फिजाय कर बाट सेती। गेरू ना चाऊर को पीठ की सुंदर (रांगोळी) चवुक घरमा, उखरी पर, जातो पर,सिल पर बनावसेती। रातवा नवीन चाऊर की खीर बनायकर डोकरी जनावसेती। चाऊर को पीठ का दिवा बनायकर सब गोधन जवर अना डोकरी की पूजा करसेती। घरभर उखरी, सिल, जातो, मुसर पर दिवो ठेयकर उनकी पूजा करसेती ओको बादमा घोनाड गवत को प्रतिकात्मक बळूराजा अना दाभट की रानी बनायकर दोरी को खाट पर सोवावसेती। पायतोला मुसर ठेवसेती अना आसपास दिवो ठेयकर पूजा अर्चना कर सेती। नवीन जन्मेव बालक को खीर चरावन(अन्नप्राशन) की सुरुवात भी दिवारी की खीर खायेपरा होसे। बालकला कोरा कपड़ा लेसेती। ओला तुरसी जवर पीढो पर बसायकर घर का सदस्य खीर चरावसेती। दिवारिला सुरण की भाजी बनावसेती।

दिवारी को पाचवो दिवस भाऊबिज मनाई जासे। येन दिवस बहिन भाईला ओवड़से। भाई बहिन को प्रेम को प्रतीक को रूप मा येव दिवस मनावसेती।

आमरो ३६ कुल को पोवारमा लक्ष्मीपूजन ना बलिप्रतिपदा येन दुय दिवसला विशेष महत्त्व से। पर नवीन जमानो को संग आब् पोवार भी थोड़ा बदल्या सेत । असो येव खुशी को त्योहार बड़ो सादगी लक सब पोवार मनावसेती। ना आपलो संस्कृति संग नवीन जमानों को भी संग संग चलसेती।

# पोवारी संस्कृति को संवर्धन, जतन जरूरी से

इंजि.महेन पटले
नागपुर

पुरो संसारमा बहुत प्रकार की संस्कृति अस्तित्वमा सेत। परिस्थिति , सोच, अनुभव , एकदूसरो की देखासिखी मानसिक उत्थान अना ज्ञान को विकास को आधार परा जगत मा संस्कृति को निर्माण भयी से । आमी 36 कुल पोवार लोगइनकी बी एक विशिष्ट संस्कृति से । आमरी बोली , रीति रिवाज, परम्परा , दस्तूर, जीवनशैली , खानपान, पहनावा ये सब पोवारी संस्कृति ला एक विशिष्ट स्वरूप देसेत । येन संस्कृतिमा मानवी जीवनमूल्य बस्या सेत । मनुष्यता को दर्शन यानी आमरी पोवारी संस्कृति आय । संस्कृतिमा आमरी परम्परागत सोच बसी से । समाजमा शांतिपूर्ण जीवन को संदेश आमरी संस्कृति देसे । एकदूसरो को सन्मान को साथ सहजीवन को संदेश देने वाली आमरी संस्कृति बेजोड़ से । आमरी संस्कृति दरअसल भारतीयताको दर्शन आय । आमरी बोली भाषा मा कई पुराना शब्दरचना सेत । आमरो पुरखाईनकी परंपरा स्वच्छ , सुंदर , शांति व स्वास्थ्य पूर्ण जीवन साती अच्छी होती । पर आब धीरे धीरे सबकुछ बदल रही से । कई पुरानी बोली गायब होय रही सेत । संग संग वोन बोलीमा को पुरानो अच्छो अनुभव , ज्ञान, सोच बी मिट रही से । आमरो संस्कृति मा एकदूसरो साती प्रेम, देखभाल को भाव , अच्छाई बसी से।

समय को अंतराल मा परिवर्तन आवसे या बात सही से , परन्तु जो काइ अच्छो रव्हसे वोको विश्लेषण करके पुनः नवो जमानो को संग तालमेल बसाय कर प्रस्थापित करनो जरूरी होय जासे । हर पीढ़ी को, हर व्यक्ति को आपलो समाज को प्रति जरूर कर्तव्य रव्हसे । हर वर्तमान पीढ़ी को वर्तन , सामूहिक जीवन भविष्य की पीढ़ी साती मार्गदर्शक को कार्य करसे । असो मा आमला आपलो वर्तमान की सांस्कृतिक स्थिति को आकलन पहले करनो पडे । पुरानो जमाना का अच्छा जीवनमूल्यलका सीख लेयकर भविष्य साती आदर्श की रचना हर वर्तमान पिढी द्वारा करनो भाग से ।संस्कृति को संवर्धन बहुत सोच समझकर करनो समाज को हर व्यक्ति की जबाबदारी से अना येन संवर्धन को कार्य जेतरो जमे वोतरो करनो जरूरी से । वर्तमान को जमाना पश्चिमी दुनिया की देखासिखी मा लगी से । परन्तु उतन पश्चिम मा यूनाइटेड नेशन्स वाला संघठन पुरानी बोली , संस्कृति को जतन करनको प्रयत्न कर रह्या सेत । यव जतन दुनिया मा शांति साती बहुत जरूरी से असो दुनिया को बुध्दिजीवी वर्ग ला लगसे । तसोच आमरो पोवारी संस्कृति को संवर्धन बी आमला करनो जरूरी से । येन संस्कृति को जतन साती आमला जेतरि होय सके वोतरी कोशिश करनो पड़े ताकि आमरी संस्कृति जीवित रहे । बोली को अस्तित्व बी बन्यव रहे यव बी जरूरी से ।

पोवारी संस्कृति को मोठो आधार आमरी पोवारी बोली आय । आमरो बोली को ज़िक्र गियर्सन को भारतीय भाषा सर्वे मा उल्लेख पोवारी असो लिखयव मिलसे । आमरो संस्कृति बोलीभाषा को नाव पोवारी से जो पोवार समुदाय

को समाज जन साती सदा याद ठेवनकी बात से । येन नाव मा बदलाव करनो यानी आपलो पूर्व की पहचान अना इतिहासलका दूर जानो सरिसो कृत्य आय । आजकल काइ लोग अज्ञानतापूर्वक समुदाय अना बोली नाव को गलत उच्चारण करसेत , या गलत बात से । कमसे कम पुरखाईनकी संस्कृति अना समुदाय को नावको उच्चारण सही करनो जरूरी से । मालवा लका नगरधन आयव आमरो 36 कुल को समुदाय ला पोवार या पँवार यव नाव पुरानो रेकॉर्ड मा दर्ज से । बोली ला पोवारी कसेत । आमरा पुरखाबी खुदला पोवार आजन कवत होता । आमरो बोली ला पोवारी कसेत । सही नाव जरूरी से । संस्कृति को जतन यानी वोकी सम्पूर्ण रूपमा मूल पहचान बनाय कर ठेवनो आय ।

आमला समुदाय, बोली को नाव मूल रूप मा जीवित ठेवनो पड़े । काहेकि वोन नाव को संग इतिहास बी जुड़ी से । पश्चिम जगत को इतिहास मा अलेक्जांडर को संग लड़नेवालों राजा उज्जैन को पोवार राजा लिखयव गयी से । सम्राट विक्रमादित्य व राजा भोज ला पोवार होता असो लिखयव मिल से । महान पोवार वंश को इतिहास आमरो संग जुड़ी से या बात भुलनो गलत से । पश्चिमी जगत पोवार शब्द को उल्लेख काहे करसे एको कारण से । दूसरों सदी में टॉलेमी नावको ग्रीक इतिहासकार भारत आयव होतो वोन आपलो लेखमा उज्जयनी को राजा को पोर्वाराय असो उल्लेख करिसेस। पृथ्वीराज रासो मा बी सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पहली रानी इच्छिनी ला पोवारी पँवारी राजकुमारी असो लिखयव मिल से । बादशाह अकबर को दरबारी अबू फजल द्वारा लिखित आईने अकबरी मा बी पोवार वंश को उल्लेख से । पर्शियन इतिहासकार फेरिश्ता बी पोवार वंश को उल्लेख कर से । ये सब लोग पोवार नावको च उल्लेख कर सेत । आमरो पोवार, पँवार समाज को नावको संग पुरानो इतिहास बी जुड़ी से । पुरानी पहचान बी जुड़ी से । आमला आपली पहचान , पुरानो नाव अबाधित ठेवन की जिम्मेदारी व्यक्तिगत तौर परा निभावनो पड़े । नाव को संग आमरी संस्कृति को मूल अस्तित्व बी जुड़ी से । संस्कृति को जतन को जरिये दरअसल आमी पुरखाइनको प्रति आपलो कर्तव्य निभावसेजन । आमला सबला या बात समझ लेनो पड़े की समाज को मजबूत अस्तित्व साती पोवारी संस्कृति संवर्धन को कर्तव्य आमला निभावनोच पड़े ।

# पोवार की मुठ्ठी लाख की

**प्रा.डॉ.प्रल्हाद हरिणखेडे (प्रहरी)** उलवे, नवी मुंबई ९८६९९९३९०७

अवंदा नाताळ की हप्ता भर की सुट्टी मिनं आपलो गावमा बितायेव. एक दिवस मोरो माहाल्पंभाई कन जेवण होतो. बसेव बसेव वोको बारा साल को टुराला मिन् टीवी पर तिनसौ तेरा नंबर को चैनल लगावनला सांगेव. वू मोरो कन प्रश्नार्थक चेहरा करक्यान देखन लगेव. मोरी भाईबहू अना भाई संग मी पोवारी मा बोलत होतो तबं वू अचरज लका मोरोकन देखत होतो. तबंच मी समझ गयेव होतो का येला पोवारी नही आवं. मनून मी इंग्रजी मा सांगेव, "थ्री वन थ्री."

तात्पर्य असो की आमरी पिढी आमरा आजा बाबा (पुर्णत: पोवारी भाषा बोलनेवाली जुनी पिढी) अना आमरा टुरू पोटू (आजकी पोवारी भाषा नही आवन को कारण नही बोलनेवाली अथवा आवंसे पर बोलनला लाजनेवाली नविन पिढी) इनको बीच की दुआ आय. नविन पिढी मा आठाना लोक पोवारी नही बोलत. उनका टुरू पोटूइनमा तं सोराना लोक पोवारीला इतिहास जमा भाषा समजेत. यव पोवारी को अना पर्यायलक पोवार समाज को पतन नोहोय का? जेन् भाषा को आचल मा अनादीकाल पासना पोवार समाज सुसंस्कृत, प्रगत अना उन्नत भयेव वोनं भाषा को दुर्गतीपुर्ण अपमान सुशिक्षीत पोवार ला खटके नही का? सुर्यवंशी राजा राम, मांधाता, विक्रमादित्य, भोज असा प्रतापी, सुसंस्कृत, वीर अना संस्कारी राजाइनकी या धरोहर. कल्पना करो की पोवारी समृद्ध करन साठी उननं का का नही करी रहेन?

पोवारी भाषा एखादी मान्यता प्राप्त भाषा किंवा राजभाषा दून कमी नाहाय. कारन यकि विशिष्ट शब्दावली, व्याकरण, पलासा, अना शैली. तसोच या भाषा जहां जहां पसरी वहां वहां की अन्य बोलीभाषा का शब्द येकोमा एकरूप भय गया. मनजे प्राकृतीक अना सामाजिक दृष्टिकोन लकबी पोवारी भाषाकी अभिवृद्धी होत गयी अना आज एक सुमधूर, प्रेमळ अना गैर पोवारी भाषिक ला बी समजनो मा सरल असी एक परिपूर्ण भाषा बन गयी से. या पोवराइन साठी गर्व की बात से. असी आमरी पोवारी क्षत्रिय कुलवंश की महान भाषा, लुप्त होनको राह पर जाय रही से. येको विस्मरण अना लुप्त होनको कारण आम्ही आमरी नविन पिढी की पोवारी बोलनको प्रति लाज अना दूसरी मान्यता प्राप्त भाषाइनको प्रभुत्व समजं सेजन. पयलो, पोवारी को प्रति निराशा, उदासीनता अना लाज आवनको कारण मनजे लाखो लोकंइन की या भाषा लिपिबद्ध नाहाय. जबकी महाराजाइन को जमानो पासना पोवारी साहित्य प्रचुर मात्रामा रचित से. दूसरो मनजे पोटपानी, रोजीरोटी अना नविन संबंध को कारण पोवार लोक दुनिया भर मा बस रया सेत. या समय की जरूरत बी आय. तं वोकोमा ऑफ़िस अना व्यवसाय साठी इंग्रजी, हिंदी सरिखी मान्यता प्राप्त भाषा सिखनो, लिखनो अना बोलनो आवश्यक से. पर बहुतायत मा या पिढी पोवारीला तुच्छ किंवा निम्नस्तर की भाषा समजं से. यनं सिक्यापढ्या पोवार लोकंइनकी याच समज पोवारी को पतन मा मोठी भुमिका निभाय रई से. यनं लोकंइनला सुप्त रूपमा यनं पतन की भनक तं से पर जीवन को राळा

मा लीन या नविन मंडळी ध्यान नही देय रई से. असो समय मा उनला सिर्फ जगावनकीच देरी से. या मंडळी आपलो भाषा को प्रति जागृत भई तं पोवारी भाषाला सर्वोच्च अना इच्छित स्थान पर लेजायो बिना नही रवं. असी बिसात वाली या पिढी. मनजे पंजा का सप्पाई बोट खूला सेत, उनला बगावन की, बगनो की देरी से; मुठ्ठी तयार. नविन पिढी को यनं लाखो लोकइनला एक मुठ्ठी मा आनन साठी, पोवारी की एकता की अखंड धारा कायम ठेवण साठी 'पोवार इतिहास साहित्य अना उत्कर्ष' सारखी मुठ्ठी अग्रेसर होय रही से. या पाच उंगली की मुठ्ठी एकता को प्रतिक आय, ताकत आय, कोणतीबी चिज- मंग वा गुणात्मक रवं अथवा संख्यात्मक- पर की मजबूत पकड आय. हर एक उंगली मा एक संदेश छिपेव से. यनं तरूण पिढीला यव संदेश मालूम होनो जरूरी से. वू संदेश म्हणजे पाच 'स'कार: सकार, सन्मान, सद्भाव, सर्जन अना समझ.

- सकार: पयली उंगली करंगळी. लघुशंका मनजे शरीरला नोको वा वस्तू त्याग को प्रतिक. इस्कूल मा या उंगली देखावत 'एक्की जाऊ का गुरूजी?' कवत होता ना? यहां भावार्थ से का पयले तं पोवारी भाषा को बारामा उदासीनता अना अनास्था जो की नकरात्मता को प्रतिक से, वोको त्याग करो. नकार भाव तकलादू मनजे नकली रवं से जो आपलोला कमजोर बनाव् से. मनून आपलो पोवारी को प्रति सकारात्मक (सकार) भाव जागृत करो.
- सन्मान: दुसरी उंगली अनामिका 'स्त्री' को प्रतिक आय. स्त्री सर्वत्र सन्माननीय से. स्त्री मनजे देवी, माय. अना मायबोली देवी समान से. मनून मायबोली पोवारी को सन्मान करो, सम्मान करो. वोको स्वाभिमान ठेवो. गर्व करो की तुमी आमी पोवार आजन.
- सद्भाव: तिसरो क्रमांक की मध्यमा उंगली आपलो बौद्धीकता, मानसिकता अना शारीरिकता का भाव दर्शाव् से. उत्कर्ष साठी सकारात्मक अना सद्गुण दर्शक भाव पोषक सेती. उनको अंगीकार करनो अपेक्षीत से. मनून मायबोली को प्रति सद्भाव ठेवनो जरूरी से.
- सर्जन: चवथी उंगली तर्जनी. या दिशानिर्देश करनो, चुनाव करनो, एक विशिष्ट क्रम दर्शावनो असा महत्त्वपूर्ण कृती को प्रतिक से. सत्व, रज अना तम को योग्य प्रमाण मा मिश्रण करके अना उपयोग करके विचार शक्ती बढावनो यहां अपेक्षीत से. सकारात्मकता, सन्मान अना सद्भाव जागृत करके विवेक पुर्ण आचरण जागृत होये जो काहितरी नविन करन साठी प्रेरित करे. या सर्जनशीलता पोवारी को उत्कर्ष ला पोषक से.
- समझ: आजकाल मोबाइल पर एक अंगठा वाली इमोजी देखायक्यान आमी एखादी बात किंवा मजकूर वगेरे को ज्ञान (समझ), आपली सहमती, दूसरो ला शाब्बाशी, अभिनंदन, काम की समाप्ती वगेरे दर्शावन की प्रथा देखं सेजन. अंगठा अलग स्थान मा से पर वोको अनन्य साधारण महत्व से. वोको बगर चारही उंगली पकड नही बनाय सकत. मनजे कोनतोबी विषय, काम अथवा वस्तू पर पकड़ बनावन साठी आखिर मा अंगठा अनिवार्य से. पर वोको बी पुर्णत्व उंगलीयो को सहयोग को बिना नही होय. असो यव अंगठा, पकड़ मनजे ज्ञान यानी समझ को प्रतिक आय.

आपली नविन पिढी का लाखो लोकंइनला यनं मुठ्ठीको महत्त्व समझावनो अति आवश्यक से. असी या आपलो लाखो पोवारइनकी मुठ्ठी, पोवारी बोली की ताकत, पोवार की मुठ्ठी लाखों की ताकत. फक्त मुठ्ठी की ताकत को महत्त्व समझायव लक काम नही बननको. पोवारी को उत्कर्ष साठी तहेदील लक प्रतिज्ञाबद्ध होनो बहुत जरूरी से. विश्वास से की पोवारी मायबोली को जिर्नोद्धार अना उत्कर्ष साठी या प्रतिज्ञा सब पोवार (स्त्री, पुरूष अना बालगोपाल) लेयेत.

***

# पोवारी साठी कंबर कसो

**(तर्ज: माणुसकीच्या शत्रुसंगे युद्ध आमुचे सुरू)**
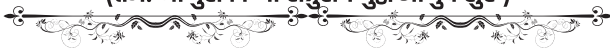
पोवारीको उत्कर्षसाठी उगाच नोको बसो
कंबर आपली कसो-२ पोवारो कंबर आपली कसो ॥धृ॥

माय पोवारी काशी गंगा
चंदन तुलसी रजनिगंधा
उपकार से बहुतसो, कंबर आपली कसो ॥१॥

पोवारी परिवार की भाषा
विकास की मनमा जिज्ञासा
करो बिचार जरासो, कंबर आपली कसो ॥२॥

याच साधना या आराधना
पोवारी की करूण भावना
परमेश्वर को जसो, कंबर आपली कसो ॥३॥

क्षत्रिय वंश की परंपरा या
मिठो बोलकी अमर धरा या
ओम् नाव से जसो, कंबर आपली कसो ॥४॥

दादा दादी नाना नानी
पोवारी मा कहीन कहाणी
जीवन बाग बगिचो, कंबर आपली कसो ॥५॥

पोवारी संग गयी हयात
पोवारी संग मोठा भयात
आता नोको हसो, कंबर आपली कसो ॥६॥

सिक्या पढ्या अना नाव कमाया
पोवारीला सब बिसराया
बिचार करो येतरोसो, कंबर आपली कसो ॥७॥

मायबोली मा नही रही आस्था
पोवारीकी भई दुरवस्था
ध्यान नही येतरोसो, कंबर आपली कसो ॥८॥

पोवारी सूनसान पडी से
लुप्त होनकी आई घडी से
काल बन्यो नागिनसो, कंबर आपली कसो ॥९॥

जख्मी पोवारी रोय रही से
दास्ताँ आपली कय रही से
आंसू वोका पोसो, कंबर आपली कसो ॥१०॥

पोवारी जबं बसे कंठमा
मोक्ष अपेक्षीत से वैकुंठमा
बात को करो भरोसो, कंबर आपली कसो ॥११॥

बोली आमरी गर्व पोवारी
चलो मनावबीन पर्व पोवारी
समय मिलेव साजरोसो, कंबर आपली कसो ॥१२॥

हिंदू नववर्ष दिन को मुहूर्त
पोवारी भाषा दिन उत्स्फूर्त
पचिस मार्च साजेसो, कंबर आपली कसो ॥१३॥

पोवारीको उत्कर्ष साठी उगाच नोको बसोकंबर आपली
कसो-२ पोवारो कंबर आपली कसो ॥

**प्रा.डॉ.प्रल्हाद हरिणखेडे (प्रहरी)**
उलवे, नवी मुंबई ९८६९९९३९०७

***

# पोवार समाज के पुनरोद्धार के लिए आवश्यक शर्तें

डॉ. शेखर पटेल, पेंसिल्वेनिया, अमेरिका (मूल: सोनेगांव, तिरोड़ी, बालाघाट)

गर्मी के दिन थे। मैं अपनी माँ और भाई-बहन के साथ बालाघाट के एक दूरदराज के गाँव में शादी में भाग ले रहा था। एक जीप हमें लेने के लिए बस स्टॉप पर आई थी, क्योंकि हम विशेष मेहमान थे जो हैदराबाद में रहते थे। यह एक सम्मान की बात थी। शादी के समय हम स्थानीय बच्चों के साथ घुलमिल गए और हमने गंदगी में खेलना पसंद किया। हमने परवाह नहीं की कि हम कैसे दिखते हैं और गाँव की सड़कों पर स्थानीय बच्चों के साथ मस्ती करते हैं। मेरे रिश्तेदार इस बात पर जोर देते रहे कि हमें अच्छा दिखना चाहिए और दिखाना चाहिए कि हम एक अच्छे सफल परिवार से हैं। उस समय कैमरा एक बहुत बड़ा स्टेटस सिंबल माना जाता था। जैसे-जैसे शादी के विभिन्न समारोह आगे बढ़े, मैंने यह देखा कि अन्य परिवार भी थे जो मुंबई और अन्य शहरों से आए थे। वे, अन्य स्थानीय परिवारों से, बहुत अलग तरीके से व्यवहार कर रहे थे, और जब भी वे दिखावा करना चाहते, वे अन्य ग्रामीणों के सामने एक कैमरा निकालते थे और तस्वीर लेने की कोशिश करते थे। उन दिनों, कैमरों को रीलों की आवश्यकता थी, जो महंगे थे। तो एक तस्वीर में होना भी एक विशेषाधिकार प्राप्त माना जाता था। मुझे यह अजीब लगा और जैसे कि कुछ सामान्य नहीं था।

मैं हमेशा सोचता था कि अचानक से विशेषाधिकार प्राप्त करने वाले पोवारो को दिखावा क्यों करना पड़ता है, जैसे कि दूसरों को नीचा दिखाना पोवार-धर्म है? मैं सोचा करता था कि क्या यह व्यवहार केवल पोवारो में ही होता है? लेकिन अब, मुझे यह समझ में आया है कि यह व्यवहार सभी समाजों में है जो गरीबी से गुजर चुके हैं। और जो लोग दूसरों पर विशेषाधिकार प्राप्त करते हैं, वे इसे पुरस्कार और मान्यता के रूप में दिखाते हैं, जिसकी वजह से वे फलते-फूलते दिखना चाहते हैं। लेकिन उन पर एक अहसास खो जाता है कि इन छोटी सफलताओं को बर्बाद किया जा रहा है, जब इन्हें भेदभाव के औजार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। हालाँकि, सच्चाई यह है कि इनमें से अधिकांश लोग अपने निजी जीवन में संघर्ष करते रहते हैं। झूठी शान वास्तव में सीखने में बाधा डालती है और उन्हें अपने करियर या निजी जीवन में आगे बढ़ने से रोकती है।लगभग 35 साल पहले हुई उस शादी के बाद से मैं उन्हीं लोगों से मिला हूं, जिनके पास कैमरे और जीप थे, और वे आज विनम्र हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, वे चाहते हैं कि उनके पास एक और मौका हो कि वे वापस जाएं और अपनी विरासत में मिली गरीबी पर गर्व करें। वे यह जानकर बहुत शर्मिंदा थे कि वे वास्तव में कौन थे। हम सभी के पास हमारी पृष्ठभूमि और अनुभव हैं जो हमारी यात्रा में आगे बढ़ने वाली विरासत बन जाते हैं। जितना अधिक हम खुलते हैं और साझा करते हैं, हम उतने ही विश्वसनीय हो जाते हैं और हम दूसरों के लिए उतने ही पसंदीदा हो जाते हैं। विनम्र होना बाधाओं को पार करने का एकमात्र तरीका है - आय असमानता, सामाजिक विभाजन, और अन्य कठिन मुद्दों

को आसानी से दूर किया जा सकता है। छोटी सफलताओं के बजाय, हमें दिखाना चाहिए कि हम वास्तव में कौन हैं, हमें क्या प्रेरित करते हैं, और हम भविष्य के बारे में क्या मानते हैं।

हम में से कोई भी आत्म-घोषणा नहीं कर सकता है कि, "मैं बहुत विश्वसनीय और विनम्र हूं।" व्यवहार, संवाद और रिश्तों में दूसरों द्वारा प्रामाणिकता का अनुभव किया जाना चाहिए। पोवारी संस्कृति के पुनरोद्धार और पोवारो के उत्थान के बारे में चर्चा करते समय, लोगों को न केवल - विचारों, रणनीतियों और इतिहास के साथ नेतृत्व करना चाहिए - बल्कि हमारे दिलों और हमारी हिम्मत, सहानुभूति, विश्वसनीयता और विनम्रता पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

***

## गवळण

(चाल..खेल खेले हरि कुंज...)

वृन्दावनमा  बज् बासरी
राधा आयकनसाठी बावरी।।धृ।।
नाद वेनूको मन मोहसे
जितन उतन मोहन दिससे
वकनादमा् रवसे हरि।।१।। राधा...
बडो निरालो प्रेम वको
उनक् प्रेमला टोको नोको
दिव्य प्रेमला जपो उरी।।२।।राधा...
दहिदूधको मोल सांगीस
वकसाठिच मटकी फोडीस
वकि चोरीबि होती बरी।।३।।राधा..
कान्हाकि गोडी सबला होती
वकि लिलामा् सेवा होती
कान्हाकि बात निकली खरी।।४। राधा..
एकएक गवळण ज्ञानी होती
वकी भक्तीकि आस होती
बात समजो उनकि नरनारी।।५।।। राधा...

पालिकचंद बिसने
सिंदीपार त.लाखनी

***

## अत्याचार पर भारी प्रमार।

पाप असो बढ़ेव धरती पर निशा
हाहाकार भयो चारही दिशा।
गुरु वशिष्ठ की यज्ञ पर नजर
जन्म भयो श्रेष्ठ वीर प्रमार ।
शत्रु को नाश भयो चारही यांग
धरती भई खुशहाल सबयांग।
प्रमार को वंशज आती पँवार
दुश्मन पर जित्या हर बार।
क्षत्रियता की बाका शान
वीर पोवार इनको नाम।
धरती की आन पँवार
अग्निवंश की शान पँवार।
जय माय गढ़कालिका
जय अग्निवंशीय क्षत्रिय पँवार

सरोज सिंह बिसेन,
मोहगांव(बालाघाट)

***

# पोवारी बोली अना मी : एक पुनरावलोकन
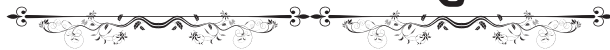
ॲड.लखनसिंह कटरे - बोरकन्हार, जि.गोंदिया

मी फरवरी 2013 मा रिटायर भयेव् अना कोनतोच शहर मा स्थायी नही होयस्यार आपलो जन्मगाव/खेडेगाव बोरकन्हार मा पुनर्स्थायी होन् साठी मार्च 2013 पासना आमरो गावमा रव्हन् ला आयेव् सपरिवार।

च्यालीस-पैंतालीस साल शिक्षण अना नवकरी को कारन लका बाहेर-बाहेर रव्हेव् होतो मुनस्यारी बचपनकी पोवारी बोली ठीक लका बोलता आवत् नोहोती। अटक-अटकस्यारी बोलत होतो.

पर आमरो घर् गावमा एक नवकर होतो, वोको नाव देवाजी रहांगडाले। येन् देवाजीला पोवारी को सिवाय दुसरी कोनतीच भास्या बोलता आवतच् नोहोती। वोकोसंग् पोवारी मा बोलता बोलता मी धीरू धीरू पहलेवानीच धाराप्रवाह पोवारी बोलन् लगेव्।

मी झाडीबोली को चळवळ मा 1979-80 पासना कार्यरत सेव्. झाडीबोली साहित्य मंडळ को संस्थापक/आजीव सभासद भी सेव्. तसोच महाराष्ट्र मा बोली जानेवाली सप्पाई बोलीईनको एक अखिल महाराष्ट्र बोली साहित्य महामंडळ को भी मी संस्थापक/आजीव सभासद सेव्. येको संग् संग् अर्थातच मी पोवारी बोली को पुनरुत्थान साती भी आपलो समय व क्षमता को बिचार करस्यानी कार्यरत होतो अना सेव्.
(असो करस्यानी मी कोनीपरा, पोवार समाज या पोवारी बोली परा, काही उपकार नही कर रही सेव्, येव् त् मी मोरो कर्तव्य निभावनको लहानसो (खाड्डी/गिलहरी वानी) प्रयास मात्र आय्)

तसोच ॲन्थ्रोपोलॉजी सर्व्हे ऑफ इंडिया को "पिपल ऑफ इंडिया" येन् बृहत् ग्रंथमालिका को महाराष्ट्र खंड का तीन पार्ट मी ऑगस्ट 2005 मा खरीदस्यानी देखेव् तब् मोला बड़ो आश्चर्य भयेव् का भारत सरकार द्वारा आयोजित येन् ॲन्थ्रोपोलॉजी सर्व्हे को महाराष्ट्र खंड को तीनही पार्ट मा पोवार समाज अना पोवारी बोली को उल्लेखच् नाहाय्. मुंबई को पॉप्युलर प्रकाशन न् ये तीनही पार्ट इंग्रजी मा प्रकाशित करी सेस्. पर भारत सरकार को येव् सर्व्हे, अप्रत्यक्ष रूपमा, जणू असोच् सांगसे का महाराष्ट्र मा पोवार समाज अना पोवारी बोली को काही अस्तित्वच् नाहाय्. येवढो मोठो ब्लंडर सर्वे भारत सरकार द्वारा करावनो मा आयेव् होतो. अना येन् सर्व्हे को रिपोर्ट पर आमरो पोवार समाज कनलका काहीच् ऑब्जेक्शन भी लेनो मा नही आयी से. मी 2005 पासना येकोसाती एकलोच् लड़ाई लढ रही सेव्.

येको बादमा अनखी एक असोच् प्रयत्न जगन्मान्य भाषाशास्त्री अना अभ्यासक डॉ.गणेश देवी इनको मुख्य संपादनमा प्रकाशित "भारतीय भाषांचे लोकसर्वेक्षण : महाराष्ट्र"(2013) येन् जागतिक स्तर परा प्रकाशित व प्रसारित

ग्रंथ मा पोवारी बोली को बारामा भ्रामक, अधूरी, बदनामीकारक, इतिहास-दुष्ट, चूक-प्रधान, ... जानकारी को लेख प्रकाशित भयी से. येव् भ्रमित करनेवालो लेख लिखनेवालो व्यक्ती/लेखक भी पोवार समाज मा को नोहोय्. येकोसाती भी मी एकलोच् जनवरी 2019 पासून लड़ाई लढ रही सेव्.

येको कारणलका मी पोवारी बोली की एक लहानशी पोस्ट 2014 -15 को दरम्यान फेसबुक परा सहजच टाक देयेव्.

अना मोला आश्चर्य का धक्का-पर-धक्काच बसन् लग्या.
करीब हजारेक बिन-पोवार अना काही पोवार लोकईनन् येन् पोवारी बोली ला सिरफ लाईकच नही करीन, मोला अनखी पोस्ट टाकन साठी प्रोत्साहीत भी करीन. बड़ी मिठी, लयदार बोली लग् से मूनस्यारी बिन-पोवार लोकईनन् बड़ी तारीफ करीन. मी त् दंग रह्यृ गयेव् येव् रिस्पान्स देखस्यानी!

अना असो मंग मी धीरू-धीरू पोवारी बोली चळवळ संग् प्रत्यक्ष रूपमा जुळ गयेव्.

पोवारी बोली साहित्य, कला, संस्कृति मंडळ, (रजि.) तिरोडा, जि.गोंदिया को व्हाट्सॲप ग्रूप द्वारा आयोजित कविता स्पर्धा को परीक्षक को काम मी प्रथमपासूनच कर रही सेव्. दि.20.09.2020 वरी कुल 110 कविता स्पर्धा भयी सेत. येन् स्पर्धईनको सहभागी पोवारी बोली को कवीईनकी संख्या लगभग 70-80 से. अना पोवारी बोली को कवीताईनकी संख्या लगभग 2000-2500 से. येव् सच्चो, प्रामाणिक अना ॲथेन्टिक असो इतिहासच सांग् से का आता पोवारी बोली को पुनरुत्थान कसो, जबरदस्त अना प्रभावी रुपमा, होय् रही से. येन् स्पर्धकईनको परिक्षण करता करता मोला भी बोहूत काही सिकता आयेव् अना पोवारी बोली को पुनरुत्थान मा मोला भी खाड्डी (रामसेतु बांधनसाती मदत करी होतीस् असो कसेत् वा खाड्डी/खार/गिलहरी) वानी आपलो अल्पस्वल्प योगदान देता आयेव्, मुनस्यारी मी आपलोला/खुदला भाग्यवानच समजू सू.

अजको येन् पोवारी बोली को पुनरुत्थान देखस्यानी एक बोली-अभ्यासक मूनस्यारी मोला बोहुत बोहुत खुशी होय् रही से. मोला भी सबन् आपलो संग् जोड़ लेईन येकोसाठी मी सबको आभारी सेव्.

# बीह्याका नेंग दस्तुर
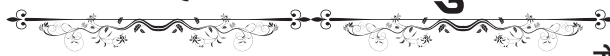
**डी.पी. राहांगडाले**
**से.नि. नायब तहसीलदार गोंदिया**

---

सृष्टी को निर्माण होयेपर भगवान न संसार को खेल रचाईस ना रोज क रोज विकास होत गयेव. जीव ला बढावन साठी नर, नारी असा दुय प्रकार का जीव तयार करीस ना प्रजनन साठी काही नियम बनाईस. असोच बीह्या यव भगवानको निर्धारित नियम म्हणजे बंधन आय. जेको भगवान न पालन करीन.विष्णुजी भगवानन लक्ष्मीजी संग,शिव न पारबती संग ना ब्रम्हा न ब्रम्हाणी संग विधीपुर्वक बीह्या करीन.

बीह्या को बंधन नाजुक बंधन से.ओला सफल बनावन साती अलग अलग बीह्या का नेंग बनाया गया. आमरो पोवार समाज क्षत्रिय वर्ण मा आवसे.बीह्या की सप्पतपदी भोवर की प्रथा भी प्रचलित भयीं. पहेलका बीह्या का नेंग सात दिवस वरी रवत होता. मंग पाच ना तिन दिवस का बिहया होन बस्या. आता एकच दिवस मा बीह्या करसेंती एतर कमी बेरामा सप्पाई नेंग करनो संभव नही रहेलका बहुत सारा नेंग कमी भय गया.तरी कमी बेरा मा कमी शब्द मा नेंग असा सेती.

- **माहाती :-** जेव बिहया जोळनको काम करसे ओला माहाती कसेती. बिहया जोळणसाठी माहाती की जरुरत रवसे.माहाती को काम टुरा ना टुरी को पता लगायशान एकमेक की देखादेखी करावन को से. पोवार समाज मा छ-तीस कुर सेती.एकच कुर क टुरा टुरी मा मांगाबारी नही होय सक.ओकसाठी अलगलग कुरका टुराटुरी पाहीजे.दुहीकर को पसंती को बादमा एकमेक घर खाणी पिणी करशान पाच पन्नास रुपया लका पाय लगसेती. ना जोळाजोळी पक्की करसेती ।
- **पाय लगनी (साक्षगंध):-** बिहया पक्को करनसाठी टुरी घरं पायलगणी को नेंग ना टुरा घरं नवरा देखनी को नेंग मोठं धुमधाम लका करे जासे. दुहीकर सब जवर का रिस्तेदार की बरात गाजाबाजालक एकमेक घरं लिजासेती यन नेगमा टुराटुरी ला कपळा लत्ता ना साजसामान देय जासे. ना बिहया की तारीख ठयरावं सेती.
- **मांडोधरी :-** बिहया को मांडो टाकनसाती पोवार समाज मा मांडोधरी साती जंगल मा जायकर १२ डेरी,४ फाटा ,२५ बेरू (बांस ) की जरूरत रवसे।१२ डेरी मा एक डेर मोहई की अत्यावश्यक से काहे की वाच लगुन डेर मानी जासे।घर का पाव्हना ना गाव का मानवाइक बैलबंडी लक डेरी आनसेती। बादमा नवरदेव, नवरी को घरं आरती सजायश्यार पाच सुहासिनी बाई पूजा करसेती।जवाई नहीं त फूफाजी धुरकोरी रवसे उनला भी टीका लगाव सेती।
- **मंडप टाकनो :-** बीह्या लगणको एक दिन पहले मांडो टाकसेती।जंगल लक जो मांडोधरी आन सेती, परिवार का लोक अना रिश्तेदार, गाव का लोक मांडो डाकसेती । गाव को बढ़ई पाट ना लगीन डेर ला दिवो लटकावन कि खुटी

की पांच सुहासिनी माती आनसेत, अना माती लका माथन बेठ ना चूल्हा बनायेव जासे. लगून डेर ला दूध दही टाकश्यानी पांच जन गड्डा मा टाकसेती.सुपारी, पैसा,हरकुंड की गांठ हरदी लगेव  पीवरो कपडा मा बांधकर मोहई को लगुन डेरला बांधसेती.

- **बिजोरा:** दूही पक्ष कर लक एक दुसरो घरं बिजोरो की बरात लिजासेत .पयले बरात नवरदेव घरं लका नवरी घरं जासे.सब बराती को आदरसत्कार लक पाय धोयेव जासेत.स्वागत होते.  पहलो  चढ़ाव मंडप मा होसे, नवरी साती आन्या  कपडा चढ़ाया जासेती। चढ़ाव का कपडा पहननो को बाद दुसरो चढ़ाव घरमा होसे येन चढ़ाव मा सोनो, चांदी का गहना चढ़ाया जासेत। तीसरो चढ़ाव मंडप को बाहर चार सुमी खाट बिछायकर चार कोना पर चार बराती अना बिचमा नवरदेव को मोठों भाई बसकर नवरी ला कोरयामा मा बसायश्यार तीसरी साड़ी देसेत। या साड़ी बीहया भर पहनी नहीं जाय।  दिवाळीला चरळ को दस्तुर मा पहनी जासे। ये ३ दस्तुर नवरि घर होसेती। जेवनखान को बाद गणावा को दस्तुर होसे।  ९ हरकंड, ९ सुपारी अना ९ रुपया पाट पर  ९ खाना बनायकर ठेवसेती। दुही पक्ष का समधी पाटपर आमने सामने बसकर मंत्र को रुपमा देवी देवताओं का नाव लेसेती अना हर एक नाव को बादमा १ पान (बिडा बनायेव) देनो पड़से । पूरा मंत्र अगर कह्या त  कुल ३६० बिडा लगसेती। येला पान जीतनी कसेती । सब देवताओंला साक्षी को रूपमा मंत्रोच्चार लक बुलायेव जासे । ९ खाना की दुय गाठ बनाई जासेत, एक मा पांच अना दूसरो मा चार खाना की हरदी, सुपारी, पैसा बांधकर गाठ बनाई जासे वय गाठ दुही पक्ष को मामा जवर ठेई जासे। येलाच लगुन गाठ कसेती। जनोसा देनको कार्यक्रम भी होसे । नवदेव घर भी येच दस्तूर होसेती।
- **कांकन बांधनो:** नवरदेव अना नवरी घरं, घरमा पयले तेल चढ़ावन को कार्यक्रम होसे । ओको बादमा मांडो मा पांच कपोरी पानमा  धन्या, जीरो , चाऊर ठेयश्यान धागा मा तांबो की अंगठी (मुंदी या छल्ला) बांधकर नवरदेव ,नवरी की फूपा या बहिन काकन बांध सकसे।नवरदेव नवरी को उजवो हातला काकन बांधेव जासे,धागाला नव गाठ पाड़ी जासेत । ये गाठ लगिन को दूसरो दिन बाल खेलनको बादमा सो़डसेती ।
- **हलदी चडावनो:** येव एक महत्वपूर्ण दस्तुर से,  कुटूंब, परिवार की महिला आरती, श्रीफल अना पूजा को सामान धरकर जवाई संग  बाजा सहीत मातामाय अना गांव को देवताओ की पूजा करके बिह्या अना  सांसारिक जीवन मा सुखशांति की आराधना करसेती।
- **तेलमाटी या मागर माटी:** येन  दस्तुरमा  कम से कम ५ सवासिनी गांव को बाहर साबर धरकर जासेती । बिवडा मा माती आनखर ओनं माती लका चुल्हो अना माथन बेठ बनावसेती ।
- **तेल चढ़ाई, माहे दसाई अना मांडो सुतनो** : देवघर मा कुलदेवताको सामने तेल चढावसेती। मातीकी टवरी (दिपक), नांदड जरायकर ओडगा (बडा टोकना)  मा ठेयकर वरत्या  पड्डो झाककर नवरी या नवरदेव का भाई - भोवजाई या

काका काकी , यव टोकना पुरुष अना केटली मा पानी भरकर स्त्री छपरी मा लका मंडप वरी पानी की धार सोडकर आनसेती। इनलाच माहे दसाई करने वाला कवसेती।

- **मांडो सुतनो:** जवाई द्वारा मंडप को चारही दिशामा चार कोनटोमा सुत अना आंबा को पत्ती की तोरण, रंगबिरंगी सजावट करसेती ।दोनाचे ( द्रोण) को बदला मा जवाई ला खाजो देनो पडसे अन्यथा जवाई दोना ( द्रोण) लपायकर ठेवसेती, खाजो देयकर जवईला खुश करनो पडसे.
- **अहेर:** मांडोमा कुटुंब का लोक बससेती. नवरदेव या नवरीला पांच सुवासिनी हरदी लगावसेती। मंग सबला हरदी लगायकर अहेर मंजे कपड़ा देंनको कार्यक्रम होसे।
- **डेरी पूजनो:** अहेर को बाद नवो कपड की दसी (धागे) कहाड़कर कुलदेवताला चढायेव जासे, येला दसी चढावनो कसेती। बादमा घरवाला नवा कपडा पहेनकर मंडप को डेरीकी पुजा करसेती अना आपलो पूर्वजों ला आमंत्रण देसेती। येको बाद घरवाला ,जवाई अना भाष्या भाषीला यथाशक्ति नवा कपडा देसेती। येको बाद नवरदेव या नवरी को आंग धोवनको कार्यक्रम होसे। अना मंग नवरा नवरी आपलों साजसिंगार करसेती।

नवरदेव घर देवघर मा कुरा लेवावन को बाद नवरदेव मांडोमा आवसे सब पैसा देयकर पाय लगसेती. महाबिर को मंदिर जवर नवरदेव बसायकर सार करसेती. नवरी को गाव महाबिर जवर बरात को स्वागत करश् यानी नवरदेव उतराव सेती।

- **लगीन:-** नवरीला सजायशांन मांडोमा आणसेती.मंग गाठ फेराईको नेंग होसे मंग नवरदेव नवरी खुर्ची परा बसावत,पर आता उभा ठेवसेत. नवरीको ना नवरदेव को मामा आंतरपाट मणुन पंच्या आळओ धरसेती पंडित पाच श्लोकबोलसानी लगीन लगाव सेती.

मंग नवरदेव को लहान भाई सुमक रस्सी लका गोत गोवसे (पयलेक जमानोमा आंदन एकएक देत होता पर आता टेबल परच आंदनमा बरतन ना पैसा देसेती)मंग नवरीका मायबाप काका काकी ना आजाआजी पाय धोवन को नेंग करसेती नवरदेव नवरीला आशिष देसेत मंग नवरीको भाई गोत सोळावण को नेंग करसे ओन बेरापर गऊ दान, अन्न दान देनको कबुल करसे दुसर दिवस बाल खेलनको नेंग ना नवरी सार करनको नेंग, नवरी सोपनं को नेंग होसे, नवरी सार करसेती. बरात नवरदेव क गावं मंदीर जवळ आवसे नवरदेव नवरीला उतरावण साती घरलका आरती ना सब जन जासेती ओन्ज्या धुरपरा आरती ठेयेव जासे नवरदेव को अजी ज्या ज्या बाई आरती धरसे उनला शक्तीनुसार पैसा देसे मंग सब जन घर आवसेती.

- **अणखी दस्तुर :-**दुसर दिवस ढेंडो को कार्यक्रम ना मंग खाजो सोळावण को दस्तुर रव्हसे नवरी टुरी आणनला आवसेती ना वा आपल मायघर जासे.तिसर दिवस मांडो झाळाई को नेंग रवसे नवरदेव को बाप जवाई ना जे पाहुणा सेती उनको पाहुणचार करसे मंग बिहया सरसे।

***

# पोवारी शब्दकोष

## प्रस्तुती - सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

सरई = नाहनी बांधी
बड़ी बंधी = मुंडा
लम्बी बंधी = सराळ
छोटी बंधी = टोकी
हिवरवाली बांधी
बांधी, डोबन, टोकी,
खेदयावालो टुकड़ा,
भालीवालो टेकरा, सरई,
किसान पाटिल वाली बाँधी,
गोटा वाली बाँधी, कामत,
गावखारि, परशा वाली बाँधी,
मोहतूर वाली बाँधी, खऱ्यान वाली बाँधी,
दंड की बंधी = बडी और गहरी बंधी
रीठ = गीरे हुए मकान की जगह (खुला प्लाट)
गावखारी = गांव से लगी भुमी
डिबर = मध्यम उपज वाली भुमी
कन्हार = भारी उपज वाली भुमी
बड्डा = रेत का प्रमाण ज्यादा वाली भुमी
मोरंडी = खरिप उपज वाली जमिन
मेर = धुरो जवर की जमीन
खांड = बांधील को पानी बाहेर भगावन की जागा
मोंघाड = तरा को पानी निकलन की जागा
पाट = गल्ली को पानी जान की नाली
खर्यान, मेळ,बंध,
परसाको जंगल-परसाळी
मोहुको जंगल- मोहर्यान

**खेती का अवजार**

हल = नागर,
कुदाल = कुदरी,
सब्बल = साबर
घमेला, बोरा, गाड़ा,
बखर, तुतारी , इरा, पाठा,
सुतली, दाबन, सूपा, सितवा,
ईरोली = लहान इरा.टंग्या टंगोली,
कुर्हाळ, बखर, खुरपसनी,
चीप, खिल्ली, कोहपर, दतार, धुर,
धुरा पावटन पावळा, कासरो, बेसन
नरा, नरोली, आरी, पात, कुदळ, कुळो, पायली

**धान की गहानी से संबंधित शब्द**

पुंजनो, भारो, सुरकुळा, दावन, मोळा,
बेठ, तनीस, गुतो, लोंब, पोटरा, पोचा,
दुधभरेव, एक दांडी, भुळुक, पाझरा,
झिरपन, झिरपे, खांड, मोंगाळ, उढार,
संलगं, मुरमोंगाळ, गाळदान, पायदान, पेंडी
खेत मे रहते का स्थान = खोपळी
चर्हाट = लंबी रस्सी, बोरू पासून बनावत होता.
गाडो मा तनीस का बेठ, धानका बोजा गाळो मा रचेव परा पडे नही पायजे म्हणून बांधन क काममा आव से. चर्हाट का बोहुत उपयोग सेती.
ट्रक पर सामान भरेव पर पडे नही पायजे म्हणून बांधन क काममा आव से, सुतरी, तपड.

### जानवरों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएं

खूड़ी, बेसन, कासरा, दावा, कानदोर
सोपल कीखुळी, बैल खुर - नाल
पोराला बैलक सिंग ला बांधसेत - चौरंग
माढ़ी बईल की जोड़ी, सिंगरया बईल की जोड़ी
डोंगा = जानवरो को पानी पिलाने का लंबा साधन, जो सिमेंट,पत्थर या लकडे का बना होता है।

### पोवार की भाजी, व्यंजन

• कुडवा को फुल को हत्ता,बाहा को फुल को मोकर
• तोरको भाजीमाका कनुला (तुवल की सब्जी में डाले जाने वाले घनोले, रोटी)
डूबक बळी,लऊट (प्याज के पत्ते और चावल के आटे से बनाई जाने वाली सब्जी)
• पानबळा अना तेलबळा (भिगाई हुई दाल को पीसकर बनाई जाने वाली बड़े की सब्जी)
• गोळकढी (गुड या फिर मोहफुल के रस,आम के आमसुल से बनाई जाने वाली सब्जी)
• बरम्याराकस को पानाकी बळी (अरबी के पत्तो की बड़ी)
• पेज = एक दिन पहले दही और आटा भिगाकर दूसरे दिन बनाया जाने वाला पेय पदार्थ)(आंबिल)
• चना, लाखोरी को भाजी को कुकसा, भाजीभुरका = (चने, या लखोरी के पौधों के पत्तो को सुखाकर बाद में बनाई जाने वाली सब्जी)
• बगन आलू की भाजी
भेद्रा मीर्चा की कढी = (टमाटर और मिर्ची से बनाई जाने वाली रस्से दार सब्जी)
• भेदरा की चटनी= (टमाटर और हरी मिर्च को पीसकर बनाई जाने वाली चटनी)
• बेसन,चुन = (चना दाल या लखोरी के दाल से बनाई जाने वाली सब्जी)
• पोपट की घुघरी= सफेद भीगी हुई पोपट की सूखी मसालेदार सब्जी
• मोहु को टोरुंबा की भाजी =मोहफुल के बीज की सब्जी
• चना को कढ़न =चने की रस्से वाली सब्जी
• भेंडी की कढ़ी = जठरी भिंडी से बनाए जाने वाली रस्से की सब्जी
• लसुन को पान का अक्ष्या = लहसुन के पत्तो के चिले
• घीवारी= चिले(आयते)
= ऊंदिरकान को पान का सुकूडा(बड़ा) अना मुठठ्या
• आंबटचुका कि भांजी
• सेलवट की भांजी अना रायतो (आचार)
• टोरूटा की भांजी
• खेडा भाजी
• आंबा को रायतो
• आंबा की आमटी

### पोवारी व्यंजन

1.बुल्या = कुमळे से बना हुवा मीठा पदार्थ
2.गुंजा = गुजिया
3.करंजी = करंजी
4.कुसुम = एकप्रकार का मोदक (चने के दाल से बननेवाला)
5.गहू की घुगरी = गेहू को भिगाकर पकाके बना हुवा मिठा व्यंजन
6.आंबा को रायतो = आम का अचार
7.हतार का पापड = भाप पर पकाये हुए पापड
8.लसून अना अदरक का पान का अक्शा = लसन एवं अदरक के पत्तो से बने हुए चीले,दोसा
9.ठेठरा मठली = बेसन एवं चावल के आटे से बनने वाला नमकीन पदार्थ
10.खुरमी = शंकरपाळे
11.सुकुळा = बडे
12.सुवारी = पुरी
13.अनरसा = अनारसा
14.मयरी = दही मे पकाया हुवा चावल
15.कोचई को पान की बडी,बरम्याराकस को पानकी बडी = कोचई के पत्तो से बनी बडी
16.कांदा को पान का हत्ता = प्याज के पत्तो से बना उपमा जैसा पदार्थ

17.आंबा को रस अना घीवारी = आम का रस एवं चावल और गेहूँ के आटे बने हुए दोसे,चीले
18.पातर रोटी = विशेष प्रकार की रोटी जो मटके को उलटा रखके बनाई जाती है
19.पुरनरोटी = पुरणरोटी
20.तीर का लाळू = तील्ली के लड्डू
21.दुध को चीक,चीख = गाय का पहिले दिन के दूध को अटाके बनाया जानेवाला मीठा पदार्थ
22.पेज,आंबील = पेज
23.मालपोहा,आटेल = गेहूँ का आटा एवं चावल का आटा,चीनी,सुके मेवे डालकर बनाया जाने वाला मीठा व्यंजन
24.करंजी = करंजी
25.सेव का लाळू = सेव के लड्डू
26.सेवई की खीर = सेवईयाँ
27.सातू का लाळू = सत्तू के लड्डू
28.बुंदी कख लाळू = बुंदी के लड्डू
29.उंदीर कान का पान का सुकुळा,भज्या,हत्ता-जंगल मे पाये जानेवाले पत्ते से भने पदार्थ
30.दारबडी = उडद दाल,मुँग दाल,चना दाल से बनी हुई बडी
31.रोट मलेंदा = दाल एवंम गेहूँ,चावल के आटे से बनी मोटी रोटी.जीसे तोडकर मीठा पाणी बनाके खाया जाता है
32.जावरा = नए चावल का बनाया हुवा गीला भात
33.करना रोटी = उडद के दाल के बारीक चुरे से बनाईजानेवाली रोटी
34.लेप्सी,लप्सी = मीठा ,ढीला शीरा
35.कोहोरो की भोगी = कुमळे को पकाके बनाया जानेवाला मीठा शीरे जैसा पदार्थ
36.राब = महूवाँ के फूलों का रस पकाकर बनाया जानेवाला शहद जैसा मीठा पदार्थ
37. धापोळा = थालीपीठ

**शरीर का अंग साती पोवारी शब्दावली**

बाल - केस
सिर - डोई
खोपड़ी (skull) - खोपड़ी,करोटी
मस्तिष्क - डोसका
अग्र मस्तिष्क - कपार
आंख - डोरा
पलक - पातनी
भौंहे - भोंय, भिमटी
नासिका - नाक
नथुने - सोत
होंठ - ओठ
हनु - दातकोड़ी
गाल - गाल
गला - घाटी( specifically for internal throat), गरो,ढोटरा, नड्डा, नड्डी
गर्दन - मान
कान - कान
कान का निचला भाग - कन चापु
सीना - छाता, साता
हृदय - हिरदा
मुंह - तोंड, टोंड
दांत - दात, दाढ़
जीभ - जिबली
पेट - पोट
नाभि - बोमली
कंधा - खांद
हाथ - हाथ, हात
कोहनी - कोहंगा, कुंगी
हथेली - हतोरी
अंगूठा - अंगठा, अंठा
अंगुली - अंठी,बोट
नाखून - नख
कमर - कंबर
पीठ - पाठ
घुटना - टोंगरा
टांग - टंगड़ी, पिंडली
जांघ=मांडी
पैर - पाय, पांव

तलवा - तरपाय
एड़ी - कूरूच
शरीर - आंग
दाढ़ी मूंछ - दाढ़ी मिशि
अलिजिह्वा (Uvula) - पड़जीभ, पड़ जिबली
गोद - कोरा, कड़या
त्वचा - चमड़ी
झुर्रियां - झुर्री
मांग - भांग
भुजाएं - भूज्जा, भुजा
सूरत/चेहरा - वान
आंत=अतळी बोका
दिमाख- दिमाक

**पोवार के रांधन खोली (रसोई घर के घर) की उपयोगी वस्तूएं**

• पहले के जमाने का अनाज कुटने का साधन=उखरी
• आटा पीसने की पत्थर की गोल चक्की = जातो
• धान रखने का बड़ा मिट्टी का ढोला = कोथरी
• बड़ा घड़ा (मटका) = मथनी
• लोटा = गड़ू
• पाणी रखने का बडा पतेला = गंगार.
• पान का सामान रखने की छोटी टोकनी = पेवली।
• चूल्हा= चूल्हों, चुल्होली
• चुल्हा फूकने का छोटा पाईप = फोंगरी।
• मिट्टी का छोटा मटका = सोरया.
• रसोईघर = रांधनखोली
• थैला = झोरा.
• तवा पर ढ़कने वाला मिट्टी का झक्कन = मुठपारो
• कासे या पीतल की बनी हुई बड़ी थाली = भानी
• कटोरा = बटका.
• कटोरी = बटकी
• मलोकि = छोटा पतेला
• जले हुए कोयले =नीगरे
• चूल्हे की जलती लकड़ी=डूंडकी
• परी = चम्मच
• मसाला पीसने का चौकोर पत्थर = सिलबट्टा
• मिर्ची पाउडर या हल्दी पाउडर = हिरोती
• नमक= नोन.
• झाड़ू = बहारी,बोहरी
• लालटेन = कंदील
• छोटा कांचके पायली का दिया = दिवालगिरी
• मिट्टी के तेल ढिबरी,दिया = सिमनी
• कांच के बाटल का बिना पायली वाला दिया = टेमा, सिमनी
• छींका(खुटी आदि पर लटकाया जानेवाला विशिष्ट तरह से बुना जाल = सिका
• मिट्टी के दीवाल में छोटी चीजे रखने की जगह = फुल
• बीच वाले कमरे में बना थोड़ा उचाई पर बनी अलमारी = फरताळा
• पहले के जमाने का अनाज कुटने का साधन =उखरी
• आटा पीसने की पत्थर की गोल चक्की = जातो
• धान रखने का बड़ा मिट्टी का ढोला = कोथरी
• बड़ा घड़ा (मटका) = मथनी
• लोटा = गड़ू
• पाणी रखने का बडा पतेला = गंगार.
• पान का सामान रखने की छोटी टोकनी = पेवली
• चुल्हा फूकने का छोटा पाईप = फोंगरी।
• मिट्टी का छोटा मटका = सोरया.
• रसोईघर = रांधनखोली
• थैला = झोरा.
• तवा पर ढ़कने वाला मिट्टी का झक्कन = मुठपारो
• कासे या पीतल की बनी हुई बड़ी थाली = भानी.
• कटोरा = बटका.
• कटोरी = बटकी।
• मलोकि = छोटा पतेला
• परी = चम्मच
• मसाला पीसने का चौकोर पत्थर = सिलबट्टा
• झाड़ू = बहारी,बोहरी

भेद्रा = टमाटर
शेरनी = नारियल की बाटी जानेवाली प्रसाद
पंतुना = चूल्हे पर पानी गरम करने का मड़का
तोड़ा, पिंजन = पाव में पहना जाने वाला चांदी का गहना
सरि = गले में पहना जाने वाला सोने का गहना
पाटली = हाथ में पहनी जाने वाला सोने या चांदी की चूड़ी।
तर्पसाखरी = कान में पहने जाने वाला आभूषण
मोट = कुएं से पानी निकलने का रहाट

गाड़ो = बैलबंडी।
ओंगण्या = बंड़ी के आस को माखने के लिए तेल रखने का पात्र
जुवाड़ी = बैलबंडीका बैल के खांदे पर रखा जाने वाला विशेष प्रकार का लकड़ा
धुरकोरी = बैलबंडी या खाचर हाकने वाला
ठाव = भोजन के लिए परोसी गई थाली
ठावा = खटिया के लकड़ी से बनाए गए पाव
खोर। = रजाई का आवरण।
तपना = स्नान करने के लिए पानी गर्म करने का पात्र
साजरो, बाका = अच्छा
टूरा टुरी। = लड़का लड़की
बिह्या = शादी
करोली = शादी में दूल्हा दुल्हन के साथ जाने वाली सहेलियां
करोली = करेला, एक सब्जी
भासरो = जेठ, पति का बड़ा भाई
जीठानी = जेठानी पति की बड़ी भाभी
सूसरो। = ससुर
सासू। = सास
फुफू। = बुआ,पिता की बहन
भजो/ भजी = स्त्री के भाई का लड़का/लड़की
देरबेटा = देवर का लड़का।
सिमनी = मिट्टी के तेल की ढिबरी,दिया
चिमनी = चिड़िया
कावरा = कौआ
शेरी = बकरी
पाठरू = बकरी का पिल्लू
बासरू = गाय का बछड़ा
बघारू = भैंस का बछड़ा
सरप = सांप
गेंडुर = केंचुआ, earthworm
चाटा. = मकोडा,चींटी
तेलमुंगी। = काटने वाली लाल चिंटी
इजगुर। = छिपकली
मोंगसा = मच्छर
खाड्डी,खराड़ी = गिलहरी
गोटा = पत्थर
हारा = बड़े आकार का बांस का बना टोकना
फरताळा = मिट्टी के दीवाल में की गई छोटी अलमारी
कुंजी = चाबी, किल्ली
फूल = मिट्टी के दीवार में बनाई गई छोटा सी सामान रखने की जगह
कोठोली = बकरी बांधने का स्थान,कमरा
कोठा = मवेशी बाधने का स्थान
चवरी = पोवार के पूर्वज जहा विराजमान रहते
भेली = गन्ने के जूस से बनाई गई गुड़
गोड़कड़ी = मोहफुल और सूखे आम से बनाई गई सब्जी
शेरना = सुपेरी फोड़ने का साधन
दादरा = आचार या किसी भी बरनी के उपर

लालटेन = कंदील
छींका(खुटी आदि पर लटकाया जानेवाला विशिष्ट तरह से बुना जाल = सिका
मिट्टी के दीवाल में छोटी चीजे रखने की जगह = फुल
बीच वाले कमरे में ऊंचाई पर बनी हुई आलमारी=फरताळा
चावल=चाउर
दाल=दार
गेहूँ का आटा = कनिक
चावल का आटा =पीठ
दाल का आटा=चुन
उड़द का आटा= करणा
लकड़े से बना हुआ बड़ा चम्मच=चाटू
दही मथने का साधन=रई
नहाने का पानी गरम करने वाला चूल्हा=पंतुना
आलनी, पीढ़ा चौकी, कांडी

**पोवारी शब्द** **हिंदी अर्थ**

माशी अंधारो = पहटिया का अंधेरा
झुनझुरका = पहटिया
भूमसारो = सुबह सुबह।
सकार = सुबह।
तिरीप = सुबह की सूरज की किरण,धूप।
बेरू भर दिवस = दिन के करीब आठ बजे का समय
महातनी बेरा = दोपहर का समय
बिरानीबेरा = सुर्यास्त का समय
लखलखती तपन = तेज धूप
घामचरचरो = पसीने से लथपथ
उखरी = पहले के जमाने का अनाज कुटने का साधन
जातो = आटा पीसने की पत्थर की गोल चक्की
कोथरी = धान रखने का बड़ा ढोला
भदाळ. = बड़ा घड़ा (मटका)
गडू = लोटा
गंगार. = पाणी रखने का बडा पतेला
पेवली। = पान का सामान रखने की छोटी टोकनी
फोंगरी = चुल्हा फूकने का छोटा पाईप
सोरया = मिट्टी का छोटा मटका
रांधनखोली = रसोईघर
झोरा. = थैला
मंज्यार. = बीच में
कोरामा. = गोद में
मुठपारो = तवा पर ढ़कने वाला मिट्टी का झक्कन
धोड़ी = छोटा नाला
केतरा = कितना
कोंज्या = कहाँ
कितन = किधर
अखिन = और
चोंबक = कंजूस
तोंड्यार = हमेशा गाली गलोच करने वाली स्त्री
धुरो = खेत की सीमा निर्धारन के लिए बनायी गई मेढ़
भानी = कासे या पीतल की बनी हुई बड़ी थाली
बटका = कटोरा
बटकी = कटोरी
मलोकि = छोटा पतेला
परी = चम्मच
सिलबट्टा = मसाला पीसने का चौकोर पत्थर
हिरोती = मिर्ची पाउडर या हल्दी पाउडर
नोन. = नमक
बहारी. = झाड़ू
चुन = बेसन ,चना या लखोरी का आटा

बांधने का पतला कपड़ा

कारो मस = अत्यधिक काला

कंबड़जा = बारीक पतली नाजुक लड़की

मोमदेल =मंद बुद्धि वाला

**पोवारी मुहावरा** **हिंदी अर्थ**

कारी की पिवरी होनो = गरीब से अमीर होना, गुस्सा होना।

कारी मस पड़नो। = शर्म से पानी पानी होना।

कोल्ह्या कुत्रा की धन = अपना वारिस न होने पर कोई दूसरे को संपत्ति होना।

कारो धुव्वा को जानो = किसी भी कम के लिए जादा समय लगाकर जल्दी वापस न आना।

गलड्या गड़ू। = जिधर फायदा दिखा उधर चले जाना।

डोरा वरत्या आवनो = अहंकार में चूर होना

दीठ लगनो नजर लगना।

कमाई न धमाई टेकरी पर पुंजना = दो पैसे की कमाई, नहीं पर बड़ी बड़ी बाते करना।

मोठो मोठो की मांदी ना भागा बाई की चिंधी = अमीर लोगों के बीच गरीबोंकी इज्जत ना होना

मुद्दल दुन ब्याज प्यारी = बेटे से भी ज्यादा पोता पोतियों से प्यार होना।

आयतों पर रायतो। = कोई काम खत्म होने पर आना।/किसी के संपत्ति पर राज करना।

कावरा बसनसीन का काडी मुळनसीन

धुरा साती बांदी बिके/ बिकीस

घरको बाघ ना बाहेर को कोल्या

माय सारकी बेटी ना कणिक सारकी रोटी

चना की नाक वाकडी त वाकडीच

डोकेलाकी धाव कुपाटीवरी

सरप गयेव ना ठोसर रही

शिमगा की बोंम दुय दिवस

कुत्रा की पुसटी वाकळी त वाकळीच.

नही नही कवन ना मनभर खान.

साग्या कामकोना सिजेव अनाजको.

तोंड देखश्यान बिड़ा,माणुस देखश्यानी पिड़ा.

आपला ओटामा ना नवराका कोठामा

माय तसी बेटी ,गहू तसी रोटी

खीसा मा नहाए कौडी , सांगसे लंबी चौड़ी।

घरका चावूर कुतरा खाय ना कणी साठी बनीला जाय

एक ठन सेरी ना गावभर फेरी.

हल्या बैल की लडाई कुपाटी को चुराडा

खिसामा नही नाना चलेव बिह्या करनला.

घरमानही खानला चलेव बायको देखनला

अंधरा दरसे ना कुतरा पीठ खासे.

***

## कानुबा देव

मोरो कानुबा देव बाई मचुर मूचुर लाही खासे।ध्रु।

सावलो सलोनो मोरो देवकी को बार<br>
लहानपन नहीं मिलेव मायबाप को प्यार<br>
कंस को भेव लका गोकुल मा जासे<br>
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।१।

गोकुलमा यशोदा न पालन करिस<br>
नंदबाबा न ओका नखरा झेलिस<br>
गोकुलको टुरा संग खेल मंडावसे<br>
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।२।

गोकूलमा दहिदूध की करसे चोरी<br>
गोपी संग खेल खेलसे नानापरी<br>
गोफन लका गौळणीकी हांडी फोड़से<br>
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।३।

बालपन कि सखी ओकी होती राधारानी<br>
रास रच गोकुलमा संग नाचती गौळणी<br>
गोड गोड आवाजमा बंसरी बजावसे<br>
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।४।

घर घर मा पूजा तोरी अष्टमीला होसे<br>
टेठला मटली चना लाही खुशी लका खासे<br>
डेढ़ दिवस रहस्यानी गोकुळमा जासे<br>
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।५।

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी

राजेश हरिकिशन बिसेन
कारूटोला/दवनीवाडा
9420865624

# पोवारो के प्रथम संघटना का उदय काल सन - 1905

पंवार/पोवार जाति सुधारणी सभा, उपलब्ध जानकारी से यह ज्ञात होता है कि पोवार जन समुदाय में सामाजिक जन जागरण की सामूहिक प्रक्रिया बीसवीं शताब्दी के पदार्पण के साथ प्रारंभ हुई। इस प्रारंभिक जन आंदोलन के प्रणेता, जन्मदाता के रूप में अग्रणी थे स्वर्गीय श्री चतुर्भुज पंवार, प्रधानाध्यापक , चरेगांव, जिला बालाघाट तथा साथ में कुछ गणमान्य महानुभावों ने सन 1905 मे पंवार जाति की प्रथम सामाजिक संस्था " पंवार जाति सुधारनी सभा " का गठन किया था। पंवार जाति सुधानी सभा का विधान स्व. श्री चतुर्भुज पंवार हेड मास्टर चरेगांव ने तैयार कर प्रथम महासभा में चर्चा हेतु रखा गया था।

सभा का कार्यक्षेत्र भंडारा, बालाघाट तथा सिवनी जिला की जातीय जनसमुदाय तक सीमित था। संगठन का संपूर्ण संचालन महासमिति करती थी। पांचवी आम सभा का आयोजन दिनांक 25 जनवरी 1910 को सीयारपाट, बैहर की पहाड़ी पर स्व. श्री चतुर्भुज पंवार द्वारा, स्व. श्री गोपाल पटेल बिसेन कंजई जिला बालाघाट की अध्यक्षता में किया गया था। इसी तरह सीयारपाट पर लगातार तीन वर्षों तक आम सभा होती रही एवं पंवार श्रीराम मंदिर की निर्मिती सन 1913 में हुई।

पंवार जाति सुधारनी सभा द्वारा दिनांक 25 , 27 जनवरी 1913 को गर्राघाट जिला बालाघाट मे संपन्न आम सभा के प्रकाशित कार्यवृत्त से यह प्रतीत होता है कि शायद यहां प्रकाशन के प्रथम सामाजिक दस्तावेज रहे होंगे। जिसे पंवार जाति सुधारनी सभा के सचिव श्री चतुर्भुज पंवार द्वारा वैनगंगा प्रेस बालाघाट से मुद्रित कर प्रकाशित किया गया था। इस दस्तावेज के अनुसार यह आमसभा आठवीं थी। पंवार जाति सुधारनी सभा द्वारा बनाए गए नियम, आम सभा में पारित प्रस्ताव , वार्षिक आय-व्यय लेखा तथा अध्यक्ष एवं अन्य महानुभाव के भाषणों को अंकित किया गया है। पारित प्रस्ताव में सामाजिक उत्थान की दिशा में शिक्षा का प्रचार ही प्रथम उद्देश्य झलकता है।

संदर्भ- पंवार दर्पण

***

# एक मार्मिक कहानी

एक टूरा दूपारमा् मंदिर को सामने लख-लखती तपनमा नंगो पायलका फूल बिकत होतो । वोको संगमा लोग मोल भाव करत होता। वत्रोरोमा वहां एक सज्जन मानुष आयव अन् वन वोको पायकन देखीस त् वोला वोकी दया आयी।

वन् जवळ को दुकान पर जाएख्यानी ओको साठी जूता लेयकर आनीस अन वोको पाय मां टाक देयीस। टुरा बहुत खुश भयोव अन् वन सज्जन आदमी को हाथ धरस्यानी कव्हन लगेवतुम्ही भगवान आव का? वु मानुष घबराय कर बोलेव,नहीं,नहीं बेटा, मी भगवान नोव्होव, मंग टुरान् कहीस कि तुम्ही भगवान का दोस्त जरूर रहो असो मोला लगसे।काहे की मीन काल रात्रि भगवान ला प्रार्थना करेव होतो की भगवानजी मोरो पायला तपन चमचम झोमसे त् जूता लेयकर देव।वन् आदमी को डोरामा पानी आय गयव अन् प्रसन्न मन लका वहां पासून दूर चली गयव । वु समझ गयव की भगवान को दोस्त बननो जास्त मुश्किल काम नहाय ।निसर्गन् दुयच् रस्ता बनाई सेस।(१) देयकर जाव(२) या छोड़कर जावसंग लेयकर जानकी काही व्यवस्था नहाए।

**राजेश हरीकिशन बिसेन**
कारूटोला/दवनीवाडा, 9420865624

***

# पोवारी( पंवारी) रीति रिवाज, कला अना संस्कृति

बिंदु बिसेन, बालाघाट

आमरो समाज मा जूनो काल लक लगत रीति-रिवाज, नेंग दस्तूर चलन मा सेत अना आमरी आइ माई गिन न आब वरि इनला जीता राखनो मा अदिक सहयोग करि सेत. शकार लक रात वरि अना नाहानो त्योहार लक मोठो त्योहार वरी लगत नेंग दस्तूर होसेत अना आमी जतन लक वोला निभावसेत. दीवारी सब लक मोठो त्यौहार होसे अना येन पांच दिवस को त्यौहार मा पीठ को चौक सब लक पवित्र होसे. असो तो रोज नहावन को बाद ढहेल मा गोबर को सढ़ा मारन को बाद पीठ को चौक को रिवाज से पर दीवारी मा चौक पूरन को विशेष महत्व रवसे अना यो पीठ ला चीटी खाय ले से ऊ अलग पुण्य को काम होसे. घर को अंदर अना चौखट मा गेरू न सील मा पिस्यो चाउर को आटा लक तुलसी, जातो, सील बट्टा , ओखली, देवघर मा गाय की खुर बनावसेत. आमी रोज शाम ला तुलसी जवर दिवा लगाव सेजन अना त्योहार मा देवघर मा चौरी पर दिवो लगाव सेजन अना घर को सयाना मानुस, मरनार पूर्वज इन  को नाव लक बिरानी डाक सेत.

आमरो पोवारी समाज मा दशरा मा मेहरी न कोचई को पाना की बड़ी बनावन को रिवाज से. योव कोनी दूसरो समाज मा नई बनावत.

आमरो समाज मा अख़ाड़ी गुरु पूर्णिमा को रोज मानवसेत येन रोज घर की बहू साज-क्श्रंगार करके, पकवान रान्धके पूजा की टाठी धरके मातामाय को मंदिर मा पूजा करन साठी जासेती. बारतबीड़ा को नेंग आमरो घर की बेटी को पहली संतान को होन पर करासेत. कथड़ी बारात को रिवाज से. आमरो घर की बेटी न फूफाबाई साठी लाखतेखाड़ को खाजा न साड़ी धाड़न को रिवाज भी से. पोवार समाज मा दहेज, टीका मांगन जसी कुरीति नहाय. या मोठो गर्व की बात से.

पहेलपासून की आइ माई गिन बिजना,गुलदस्ता, झूलपर्दा, पीवसी,वायर को झोला बनावत होतिन पर आता असी कला मिटत जाय रही सेत. येला बचाय कर आमरो हस्तकस्ला को काज, स्वरोजगार होय सिक से. हमरा तिहार पकवान अना स्वादिष्ट सयपाक को बिना पूरा नई होत. आमरी माय बहिन पुरो जतन लक ये सब बनावसेत. मिजवान को स्वाद वानि सयपाक मा भी काई कमी बिसी नई होन देत.

पोवारी समाज मा माय बेटी को लगत मान से अना मरद माना भी साथ देसेत. समय को बदलाव मा सब नेंग दस्तूर कम भय रही सेत. पर असा कई दस्तूर आमरो पुरखा गिन ना जतन लक सबको ख्याल राख कर बनाई सेत, जिनला सहेजनों अना नवी पीढ़ी ला सिखावनो भी आमरी मोठी जिम्मेदारी से जेला सब झन संग मा मिलकर पुरो कर सक सेजन.

# बोधकथा
# शीर्षक: पंढ-यान

डॉ. प्रल्हाद रघुनाथ हरिणखेडे (प्रहरी)
उलवे, नवी मुंबई- मो. 9869993907

बैरागीटोला को दिवस उंगती करकी तीन मोठी मोठी हळकींको बिचमाको वोर्याको संग्रामपुर अना खाल्याको जलकन्या तरा (डॅम) की झिरपन को पानी सालभर एक मोठो नाला तेवीस किलोमीटर बह्यक्यार धापेवाडा जवर वैनगंगा नदिमा उबळावं. जलकन्या पासना अढाई कोस पर, यव नाला जहां दिवस उंगतीलका एकदम उत्तरमा काटकोन मा मुळं, वोनं मोळपरच दिवस बूळती काठपर लगक्यानी भानुदास गौतम को दस एकर को एकमेव चौरस सुपीक पिवर कन्हार होतो. बराबर की आठ बांधी नाला को पार पर अना बाकीकी बीस बांधी खाल्या होती. भानुदासनं मरण को पयलेच आपला दुय टुरा, मोठो गेंदू अना नहान दवन को बेगरचार करके पाच पाच एकर का पिवर कन्हार का किसान बनाय देई होतीस अना नहान नहान नातू नतराइनको हात को पानी पियक्यारी देह ठेय देई होतीस.

खेतका हिस्सा पाळन ला अळचन नही आई. यव नाला गेंदु को खेतला खो देयक्यानच उत्तरमा मुळं अना दवन को खेत ला समांतर जाय.

गेंदु अना एकच माय का लेकरू पर दुही को स्वभाव मा फरक होतो. मोठो गेंदू लबाळ, हावरा अना चलाक होतो. वन् बिया को सालपासनाच बायकोको कवनो पर चुपचुपके बहुत खम्बुरा जमाई होतीस. गाळदानला लगेव कोंटो मनजे नाला को मोळपर को हिस्सा वोनंच धरी होतीस. मनून बोचारो दवनला आपलो खेतमा जान साठी गेंदूको खेत मालंका जानो पडं. दवन स्वभाव लका गरीब पर बड़ो सरिफ होतो. लबाडीमा अंगठाछाप. बायकोबी सादीसुदीच. पर दुही जीव मेहनती अना खरोबा देव का भक्त होता.

गेंदू भुमसारोच खेतमा जाय अना मोहू, धुंदाळका आंबा, टोरी, जांभुर वगेरे आनले. दिवस हिटेव पर मोहूचेंडू  बेचनकी पारीपर अनखी तयार. असी कय लबाडी करनोमा गेंदूको जोळा गावमा परख्यात होतो.

गेंदू अना दवन इनको सिवधुरो खुप मोठो होतो. वोकोपर तोरकी सय लाईन आय जात. बायकोसंग दवन धुरो पर तोर लागावन साठी माती टाकत होता. परामा गेंदू झुंझुरकाच जाय आपलो बांधीमा चिखल तयार कर ले अना मंग सिवदधुरोला पावडा लक थोडो थोडो कोदरत जाय. वोनं बिया होयेव पासना यव धळाच धर लेइ होतीस. पाच सय सालको बादमा वोनं धुरोपर धिरू धिरू तोरकी लाईन घटन बसी; सय की पाच, पाच की चार, चार की तीन अना आता तं फक्त दुयच लाईन लगावता आवत होती. पोरको सालमा या बात दवन को ध्यान मा आई तं वोनं तयकिकात करीस. वोला वोकी गोम समझमा आय गई. नवत्री सरेव पर आपलो मोठो भाई ला दवननं या बात ध्यान मा आन देईस. कसे, "बड़ोभाऊ, परामा मेर मारन को घनी सिवधुरोमा नांगर ज्यादा खूपसत रहे गा, मनून धुरो खसलत रहे. तं मेर अना कोंटो मारन को घनी जरा ध्यान देवो." यव आयकक्यान गेंदूनं मोठो भाई को तोर्रा देखाइस अना फायदा उठाईस. कसे, "तू मोला नोको सिकाउस. मोरोपर इंजाम लगाव् सेस? तूच धुरोला कोदरत रवजोस. नहान भाई आय, जान दे, असो भलो मन लक मी तोला काई नई कहु, तं येको तू फायदा उठावं सेस? अरे बोट भर जागा खंदजो, का भेटे तोला? सोनो चांदी? का महाल माडी बनावजो?" उलटो चोर कोतवाल लाच डाटत होतो. दवन एक तं नहान होतो. मोठो भाईला जवाब नही देये पायजे असो सोचन बसेव. दूसरो अगर भाईला जास्त बोलू तं सकारी वू मोला खेतमा जानकी रस्ता अळाय देये यव सोचक्यान चुप रवं. यनं बात लका काही दिवस मा दुही नहानांग अना मोठांग बैरी भय गया. भानुदास को एक सूतमा जुळेव घर बब-याबान भय गयेव होतो. दवननं गाव का एक दुय सहानाइनला बी सांगिस अना ऊपाय खबर लेईस पर वोला मीटिंग करनला सांगीन. पर कोरोना कारन लक मीटिंग नही होय सकी. अना गेंदू नं भी आपलो घरलच सहानाइनला भलो बूरो कईस. अवंदा लगातार पंधरा दिवस मुसरधार पानी बरसेव. जितं उत् पंढ़-यान. तरा बोडी उसन फेकण बस्या. तसो नाला बी रन्गमा आवन बसेव. जलकन्या अना संग्रामपुर को उस्यान लका उनका एक एक दरवाजा खोलनोमा आया. येकोलका

नालामा एकदम पानी रिचायेव गयेव अना पुर आयेव. नाला ओकसा बोकसी भरक्यान बोव्हन लगेव. अना वोको बाट मा आवनेवाला जंगल, झाडी, डोबरा, बोडी सप्पा सवान करतंच एकदम गेंदू को धुरोलाच आदळेव. वहां लका वू उजवो हात पर मुळं मनून वोको पुरो दबाव अना बहाव लका गेंदू को धुरो पुरो खसल गयेव. अना वोकी दुय बांधी गुत्ता गुत्ता भर कोलार गई. खेत पंढ़-यान भय गयेव. वोको हिवरो हिवरो पोटरा पर को सोनम धान माती संग नालामा रहू-यान होयस्यान बह्य गयेव. दवन को खेत को समांतर नाला बव्ह् मनून वोकी फक्त पार पर की तोर लोत गई होती अना धान थोडोसोच बगेव होतो. यनं अभुतपूर्व पूर को घटना लका गेन्दुला का भेटेव होतो? वोनं आपलो मर्जीलका गाळदान अना पळ लगेव तुकडा चुनिस. मोहू चेंडू मा लबाडी, कठान की बी चोरी अना धुरो कोदराई. वोकी ये लबाडी दवननं वोको ध्यान मा आन देयेव पर भी मुजोरी ठाकिस तं वोकोपर निसर्ग कोपनो मनजे 'जैसी करनी वैसी भरनी' वाली बात लागू होती. भाई की माया देखो, दवन धावतच गेंदू जवर गयव अना वोला वोनंच हिम्मत देईस. तसो गेंदूनं दवन को खांदापर आपलो डावो अना डोकसी पर उजवो हात ठेइस अना आपलो डोरा को पानी पाळनसाठी खाल्या देखन बसेव. दवननं भाईला घरं लेजाइस अना वोनं दिवस पासना गेंदू अना वोको परिवार दवन संग सूत मा को हार वानी रवन बस्या.

# कुलदेवी

चाल: भजन .. एकदा तू भेट मला,,, पांडुरंगा हरी विठ्ठला

एक गण तू भेट मोला, माता मोरी गढकालिका
आजण आमी टूरा तोरा, आवबिन धारानगरीला।ध्रू।

कुलदेवी आमरो पोवार की आस
प्रगटी सप्तमीला नवरात्रि को मास
ठेव सुखी सबला माय, आशीर्वाद सबपरा..१

माय बसिसेस तू सब पोवार को गांव
मातामाय को नाव ल जानसेत पोवार
अखाडीला करबिन पूजा, आवबिन तोरो द्वारपरा..२

अखाडी साल को पहलो सन आय
. येन दिवस होसे रिमझीम बरसात
भक्तिभावल पुजबिन तोला,दही दूध समर्पित तोला..३

बुड्या सुकूडा को तोरो पाहुणचार
पानबड़ाकी भाजी बनावसेत खास
नवीन नवरी लिजासे ठाव, माता तोरो द्वारपरा..४

साधासुधा आमी पोवार आजण
तोरो भक्तिका भुखा आमी सेजण
भक्ती मा से शक्ती बडी, सुमरबिन माता तोला..५

एक गण तू भेट मोला, माता मोरी गढकालिका
आजण आमी टूरा तोरा,आवबिन धारानगरीला।ध्रू।

**- सौ छाया सुरेंद्र पारधी**

- **लक्ष्मी पूजा -** लक्ष्मी पूजन तो सभी लोग मानते हैं पर हमारे पोवारी में दीपावली के दिन गोबर की डोकरी / बुड्डी व गोवर्धन बना कर गायखुरी (चौक / रंगोली )(चावल और गेरू को पीस कर उसका चौक) चौरी , दरवाजा , सील ,चूल्हा जाता आदि के पास बनाया जाता हैं और उसपर चावल के आटे के दिये रखकर पूजा की जाती हैं। विशेषतः चावल की खीर और सुरन की सब्जी का भोग लगाया जाता है ।कुछ घरो में बलिराजा की भी पूजा की जाती हैं घोनाड और दाभट की घास से बलिराजा बनाया जाता है और फिर  रस्सी की खाट पर रख कर उनकी पूजा की जाती हैं । इसी दिन नवजात बच्चों का  बुजुर्गों द्वारा खीर ख़िलाकर अन्नप्रासन किया जाता हैं। गोवर्धन पूजा के दिन गायों को सजा धजा कर आखर पर ले जाते हैं और गाय खेलाई (पूजन)किया जाता है ।उसके बाद गांव में गोवारी समाज के लोगो द्वारा गोवर्धन के गोबर का टीका देकर एक दूसरे को बधाईयाँ दी जाती हैं।
- **पांड -** पांड के दिन तुलसी के पास विशेष पूजा की जाती है यह पूजा बच्चो के स्वास्थ्य व समृध्दि के लिये की जाती है पांड में तील के गूंजे बनाये जाते हैं.

**चलो हम भी मनाएं अपने पोवारी त्यौहार और करे अपनी पोवारी संस्कृति का प्रचार प्रसार...**

# मी पोवारी

(पोवारी भाषा की आत्मकथा)

मी पोवारी सेव पोवार इन की पहिचान,
होत होतो पहिले मोरो बड़ो गुणगान।
सबको मुख पर पहले मीच - मी होती,
सबलक न्यारी बोली पोवारी होती।
पढ़ लिखकर बन गया मोरा लेकरू महान,
नही करत आता कोनी मोरो बखान,
आपली भाषा बोलन की शरम उनला आवसे।
अंग्रेजी-हिंदी- मराठी आता सबला सुहावसे।
बेटा मी सेव तुमरी माय बोली पोवारी,
मोरो बिना तुमरी पहिचान से अधूरी।
मोला भूल जाओ त तुमरो अस्तित्व मिट जाए,
कोन कहे तुमला पोवार जब पोवारी मिट जाए।
कोनी तरी आपली येन माय ला बचाओ,
येन माय को खातिर समाज मा पुढ आओ।
मोरो लक तुमरो से मान-सम्मान ना पहिचान,
मोरो अस्तित्व बचावन की से आता तुमला आन।
बोली सेव मी तुमरी सब भाषा लक न्यारी,
आता मोला बचावन की से तुमरी जिम्मेदारी।

स्वाति तुरकर

***

# पोवारी के विशेष त्योहार पोवारी रीति रिवाज के साथ

स्वाति कटरे तुरकर (गोंदिया)

- हिंदु त्योहार मनाने के साथ साथ हमारे कुछ महत्वपूर्ण पोवारी त्योहार भी हम मनाते है।जिनके बारे में आज हम बात करते है।
- **तीज -** हिन्दू नववर्ष का पहला त्योहार तीज जिसमे हम चवरी की पूजा कर हमारे पूर्वजो की याद में कलशा भरते हैं और खेती की पूजा अर्थात मोहतुर करते हैं . मोहतुर होते ही हमारे खेती से जुड़े सभी कामो की शुरूवात हो जाती हैं ऐसा मानना हैं।
- **अखाडी -** अखाडी में महिलाएं खासतौर पर नई बहुएं सज - संवर कर ग्राम देवी (माता माय) की पूजा अर्चना करती है ,इस दिन हमारे पोवारो में मुख्यतः कुसुम , बुलीया , पूड़ी ,बडा बनाया जाता है और ग्राम देवी को भोग चढ़ाया जाता हैं।अखण्ड सुहाग की मनोकामना के साथ यह त्योहार मनाया जाता हैं।
- **जीवती -** जीवती में सुनार , लोहार हमारे घरों में हमे बुरी बला से बचाने के लिए खिल्ला , बेगड़ लगाते है और उसी प्रकार ढीमर लोग हमारे घरों में आकर अपनी जाल (मछली पकड़ने की जाल)से हमारा सर ढाकते हैं।
- **नवई -** जीवती के नौवमें दिन नवई की पूजा की जाती हैं इस दिन दीवार पर गेरू से नवई लिखी जाती हैं उसे कोरे कपड़े से ढाक दिया जाता हैं और चावल के आटे की नौ रोटियां बनाकर उसकी पूजा करते हैं और उन्ही रोटी के टुकड़ों से बच्चे अपनी माँ की ओटी भरते हैं.इस दिन सभी माँ अपने बच्चों की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती है और पूजा करती हैं।
- **मोहबैल -** यह पोले के एक दिन पहले मनाया जाने वाला त्योहार हैं , इस दिन बैलो को महुवा और आटे के लड्डू खिलाये जाते है और गोठे में गायकी (गाय चराने वाला) की सेंगोली (आटे से बनाई जाती हैं)से ओटी भरी जाती हैं .पोले के दिन बैलों को नहला-धुला कर सजाया जाता हैं और गांव में एक जगह(आखर पर) एकत्रित कर सभी बैलो की पूजा की जाती हैं और तोरण काटी जाती उसके बाद ही घर पर बैलों को अलवण टोकने पत्तल रखकर खाना खिलाया जाता है और उनकी घर मे पूजा की जाती हैं। उसी प्रकार मिट्टी के बैल (आड़ बैल भी कहा जाता हैं)बनाकर पूजा घर मे उनकी भी पूजा की जाती हैं।
- **नारबोद -** नारबोद में गेड़ी जलाकर सिंगोली गांव के कोटवार को देते हैं .(मिट्टी की एक नारबोद बनाई जाती है और आरती के साथ सुबह सुबह उसे गांव की सरहद पर छोड़ दिया जाता हैं )ऐसा मानना हैं कि नारबोद अपने साथ हमारी सारी बीमारी और परेशानियां लेकर जाती हैं।
- **श्राद्ध -** पितृपक्ष में पितरों का तर्पण किया जाता हैं, यह हमारे पितरों की आत्मा की शांति-मुक्ति के लिए किया जाता है। इस दिन कागुर डाला जाता हैं और विशेषतः काग(कौंवा),कुत्ता, गांय को खाना खिलाया जाता हैं। पहले के जमाने मे श्राद्ध के दिन तीन या पांच कुशार (दूसरी सरनेम वाले लोग )रखे जाते थे पहले उन्हें खाना परोसा जाता था फिर उस परोसे में से थोड़ा खाना मांग कर चवरी पर चढ़ाया जाता था और चवरी की पूजा की जाती थी फिर उनका खाना होने पर ही किसी और को खाना खिलाया जाता था।
- **दशहरा -** दशहरे के दिन सुबह आंगन में रंगोली बना कर वहां गोबर के दस बड़े बनाकर रखे जाते है जिसे गलगली के फूल से सजाया जाता हैं और शाम में चावल के आटे के दस दिये बना कर उन बड़ों की पूजा की जाती हैं, फिर रावण दहन किया जाता हैं । दशहरे में पत्ते की बड़ी , दही-महि की महरी के साथ सभी घरेलू औजारों की पूजा की जाती हैं . हमारे यहां महरी का विशेष महत्व हैं कहा जाता हैं महरी बम्हण होती हैं इसीलिये महरी किसी दूसरे जाती वाले को नही दी जाती ।और जहाँ महरी की हंडी होती हैं वहाँ भी दूसरे समाज वालो का जाना भी वर्जित होता हैं।

# हमारे रीति रिवाज,परिपाटियां संस्कारित हैं

**- व्ही.बी.देशमुख, रायपुर**

हमारा ग्रामीण जीवन यापन बड़ा सरल है।हमारी दैनिक कार्यशैली का कुछ अंश प्रस्तुत कर रहा हूँ। ग्रामीण कृषि पर निर्भर करते हैं। किसानी को सम्पन्न करने के लिए गांव का निर्धन तबका नोकरी चाकरी कर सहयोग करता था। सुबह सूर्योदय के पूर्व ही ये काम में आ जाते थे और ईमानदारी से जिम्मेवारी से कार्य करते थे। बरसात के दिनों में तो दिन निकलने के पूर्व ही खेत में नांगर बैल जोत लेते थे। फसलें जब मिंजाई कि जाति थी,रात में मिंजाई दावन से करते थे। ऐसी कार्य के प्रति सेवाभावी तत्परता निशचित ही प्रशंसनीय होती थी।

निवास के घर,बाड़े,महल आदि के द्वार पर दरवाजे,गेट फाटक आदि होते थे इससे लगी डहेल होती थी, इसके दोनों तरफ कोठे होते थे भूतल के ऊपर पाटन हुआ करती थी जिसमें धान रखने के लिए ढोले तथा जानवरों को बरसात में खिलाने के लिए पैरा, और बरसात से बचाने के लिए अन्य सामान लकड़ी जलाऊ रखी जाती थी। बीच के भाग को आंगन कहा जाता था जो एक छोटे मैदान के आकार का होता था,उस आंगन में जानवर,बांधे जाते थे। अब निवास में सामने की परछी के बाद जोड़नी का भाग उसके बाद माच घर,माच घर में देवघर होता था। उसके बाद और भी कमरे, समान आदि रखने के लिए पोटखोली के बाद जोड़नी, परछी रान्धनखोली, रसोई घर होता था। इसके बाद आंगन और आंगन में तुलसी पेड़ जिसे बिंद्राबन कहते थे और दूध गर्म करने के लिए जगरा इसके बाद कनघर, यह अन्दर का घर होता था। इन घरों में भूतल पर पाटन प्रथम तल होते थे। अब अंत में स्नान घर और पानी के लिए कुआ टाके आदि होते थे। निवास में सामने का भाग बड़े तरफ और पीछे का भाग छोटे तरफ कहा जाता था।

अब अंत में सब्जियों के लिए बाड़ी होती थी। यह बाड़ी बहुत बड़ी होती थी। दिनचर्या बड़ी संस्कारमय होती थी सुबह कि सुरुवात प्रवेश द्वार पर चौक, बृंदावन के पास चौक, रसोई घर के चूल्हे की राख निकालने के बाद चूल्हे कि पुताई से होती थी,इसके बाद रसोई प्रारम्भ होती थी।सायंकाल में दीपक जलाना और गूगल जलाकर धुनि दी जाती थी।रात्रि के भोजन पूर्व परिवार के सभी लोग प्रभु आरती में सम्मिलित होते थे अपनों से बड़ों के चरण स्पर्श कर आशीष प्राप्त करते थे तदुपरांत रात्रि भोजन। बुजुर्ग विश्राम पूर्व बच्चों को अच्छी अच्छी कहानियां सुनाते थे।

***

# बिह्या मा गुडूर की खासर,रेहका

बिह्या को बरात मा गुडूर की खासर की बड़ी सजावट करत होतीन। दूय सुपली की खासर की बड़ी शान होत होती। खासर कि सजावट मा रंगीन पड़दा,अन्दर मा पुढं अना मनघ पड़दि बाँधत होतीन। दुहि पड़दि हुनको बीच मा नवरदेव अना नवरी बसत होतीन, नहाना भाई बहिन भी बस जात होतीन। मनघ की पड़दि को बाद मा एक चाकर, सेवादार बसत होतो। सामने धुरकोरी मा जवाई नहीं त फुप्याजी बसत होतीन। खासर मा बसन की जगहा मा तनिस ला पानी मार मार के भरत होतीन, बसनो पर तनिस दबत नोहोती,अना तनिस पर गोना बिछावत होतीन। गुडूर की खासर मा मोठा बईला हिनला जुपत होतीन। बईला हिनको सजावट मा झूल पड़दा,सिंगोटी, कपारी,मनका अना गरो मा मोठा मोठा घोलर बांधकर सजावट होतीन। धुरकोरी पांढरी धोती कुर्ता टोपी पेहेर कर बसत होतो,जवाई को बड़ो मान होतो पहले।बरात को पुढ गजकोंडी वाला ओको बाद मा, बाजा,सिंग बजावन वाला अना पैदल चलन वाला रवहत होतीन इनको संग कावड़ वालो,बन्दूक वालो भी रवहत होतो। एको बाद मा गुडूर की खासर,मोठी बरात मा कई खासर,छाटी, रेडू की बरात चलत होती। गाँव,मेड़ा अना रिस्तेदार संगी साथी बरात मा जात होतीन। बड़ो मान लक एक दुसरो लक बोलत होतीन । भाली, बरठी, अना काम वाला मानुस हुनला काका भाऊ बडो करके सम्बोधित करत होतीन।

रिस्तो को बड़ो ख्याल ठेवत होतीन।बिह्या मा रिस्तेदार एक दूय दिन पहले च आय जात होती न । सब बरात की तैयारी मा संग देत होतीन। बेटी नाती नातिन भासि भास्या बिह्या को आठ रोज पहले आय जात होतीन, इनला आनन जान पढ़त होतो। कपड़ा लत्ता सीवन लाई दर्जी घर सिलाई मसीन धरके आव, अना सबका कपड़ा सिवत होतो। बरात मा दूल्हा दुल्हन सङ्ग केरोलिन जान की प्रथा होती। एक खास मानुस बरात हिटन को बेरा घर की चवरी जवर अना सब देवी देवता जवर नारेल फोड़ कर पूजा करन की प्रथा पूरी करत होतो,देवी देवता मा मातामाय, महाबीर,ग्राम देवता,दयतीन,पट्टील देव,महादेव आदि की मानता करत होतीन। नवरदेव को घर लक निकलन को बेरा, माय अना माय तुल्य काकी भौजी घर को चौरी ज्वर नवरदेव को पानी ल कुल्ला करावत अना दूध  पिवावन की प्रथा अपलो बाली को पल्लू लक टोंड पोसन की प्रथा होती। असो करन को बाद मा नवदेव घर ल रवाना होत होतो। लगुन की बरात समय पर निकालनो पड़त होतो। बरात गांव को मन्दिर मा पूजा पाठ को बाद मा रवाना होत होती ।

नवरदेव कि गुडूर की खासर की धुर धरन की प्रथा होति, धुर धरन मा माय, मोठी माय, काकी,भौजी, अना काम वाली बाई धुर को आरती धरके उभी रहोत होतीन,धुर सोडाई का रुपया नवरदेव को बाबूजी अना माय, मोठी माय काकी भौजी को मायघर लक भाई बन्ध आवत होतीन ओय बी धुर सोड़ावत होतीन,धुर सोड़ावन को बाद मा बरात रवाना होय। सन्ध्याकाल दिन डूबन को पहले लगीन लगावन की प्रथा होती। बरात बाजा गाजा सिंग अना गजकुंडी को संग रवाना होत होती। गाँव का धीवर जाल अडाय देत होतीन उनला नेंग देन पड़त होतो,कोई आड़ जात की बाई पानी को गुंड धरके गुडूर को सामने ऊभी होय जात होतीन उनला भी नेंग देनो पड़त होतो। बाजा वाला अना कावड़ वाला पाय रस्ता लक जल्दी जल्दी चलके दुसरो गाँव आवन को पहले च बरात को पुढं पोहोच जाट होतीन अना बाजा बजाय के गांव पार कर देत होतीन। दुहुर की बरात होनो पर कोई गांव को स्कूल मा नहीं त पंचायत भवन मा भोजन बनाय के भोजन करत होतीन। और फिर बरात बढ़त होती। वधु पक्ष वाला ख्याल ठेवत होतीन, बरात गांव जवर आवन की खबर लगत च खासर छाटी नहीं त रेडू लक पान देन जात होतीन,असी एक स्वागत की प्रथा होती।

**- व्ही.बी.देशमुख, रायपुर**

# सौर ऊर्जा एक वरदान

राजेश हरिकिशन बिसेन, कारुटोला , दवनीवाडा 9420865624

भारत एक विशाल राष्ट्र से। भारत प्रगति को रास्ता पर चलने वालो  एक राष्ट्र आय। औद्योगीकरण बढ़त जाय रही से। लोकसंख्या वृद्धि को कारण जीवाश्म ईंधन को उपयोग बहूत ही जादा होय रही से। बढ़ती जनसंख्या अन् उद्योग को कारण बिजली की मांग बहुत जादा तौर पर बढ़ रही से, विकसित शहरईनमा  बिजली की  खपत बहुत ही जादा होय रही से । भारत मा आब भी 70%  जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र मा निवास कर रही से । तरी भी ग्रामीण क्षेत्रमा वर्तमान मा पूर्ण रूप लका बिजली की व्यवस्था नहाय, वहां पर आब भी अंधोरा से। भारत को शहरईनमा  ऊर्जा की खपत ज्यादा होय रही से।

भारत भौगोलिक दृष्टि लका एक विशाल राष्ट्र से। भारत की भौगोलिक रचना भी अलग-अलग से यन कारण पूरो साल भर सूर्य की ऊर्जा प्राप्त होत रव्हसे । प्राचीन काल पासुन सूर्य ला भगवान मानेव जासे । ऋषि मुनियनला सूर्य को महत्व की जानकारी होती। मनुन वय सूर्य भगवान की पूजा करत होता । भारत को विश्व वृतीय प्रदेश, पठारी प्रदेश मा स्पष्ट रूप लका सूर्य ऊर्जा प्राप्त होय सक से । वहां पर सोलर पैनल लका विद्युत ऊर्जा प्राप्त करी जाय  सक से। जेको लका कोयला पासुन उत्पन्न होने वाली बिजली की बचत होय  सक से। वर्तमान मा सौर ऊर्जा आमरो साठी एक वरदान से। सौर ऊर्जा को उपयोग करकन मोठो-मोठो उद्योग क्षेत्र मा यको  विकास करेव जाय सक से। सूर्य पासून  प्राप्त किरणों लका सोलर पैनल द्वारा ऊर्जा प्राप्त होत रव्हसे । अन या मुफ्त मा मिलने वाली ऊर्जा से । बढ़ती जनसंख्या ला  देखकर आज वर्तमान मा सौर ऊर्जा को उपयोग करनो अच्छो रहे । पुराना जीवाश्म ईंधन खत्म होन को कगार पर सेत । अगर पारंपरिक ऊर्जा स्रोत ला बचावनो से , त् सौर ऊर्जा आपलो भारत देश साठी बहुत ज्यादा उपयोगी होय सक से ।

वर्तमान मा सौर ऊर्जा को निर्माण साठी बढ़ावा देयव जाय रही से ।आम्ही भारत का एक जीम्मेदार नागरिक रहेव लका सरकारी योजना को फायदा लेयकर घर को छत पर सोलर पैनल लगाय  सक सेजन । वोको लका बिजली को निर्माण होये अन् कोयला लका निर्माण होने वाली विद्युत की बचत भी होये । भारत को प्रत्येक नागरिक को कर्तव्य से की ऊर्जा बचावन साठी  ठोस कदम उठावनो जरुरी से।

वर्तमान मा ऊर्जा की बढ़ती जरूरत ला देखकर सौर ऊर्जा एक पर्यायी साधन से, अन या बिल्कुल मुफ्त मा मिलने वाला नैसर्गिक स्त्रोत से । सौर ऊर्जा को द्वारा बिजली निर्माण लका भारत ला एक प्रगतिशील राष्ट्र बननो मा मदद होये , भारत मा पारंपारिक जीवाश्म ईंधन समाप्त होने वाला सेती। बढ़ती जनसंख्या साठी यह जीवाश्मों ईंधन पूर्ण रूपलका जीवन भर साथ नहीं देय सकत, ऐको कारन सौर ऊर्जा  भारत देश साठी एक नई उम्मीद की कीरन से, अन् ओकी बहुत ज्यादा तौर पर जरूरत भी से ।आओ आमी सब मिलकर भारत देश ला परम वैभव कर लीजान साठी एक छोटो सो प्रयास करबीन।

आओ करबीन सौर ऊर्जा को उत्पादन।
पर्यावरण अन जीवाश्म ईंधन को होये संरक्षण।

# पोवारी बालकथा - जनमदिनकी भेट

लेखक - गुलाब बिसेन

वैनगंगा नदिक् थळीपर बसेव एक महानगरमा ओंकार नावको टुरा आपल् परीवारसंग् रवत होतो. सुखवस्तू घरको ओंकार पाचवीमा शिकत होतो. वोको शाळामा पार्थ नावको टुरा वोकच वर्गमा सिकत होतो. वू शाळा जवरक् मोहल्लामा रव्. पार्थको पप्पाजी किराणो दुकानमा कामला होतो. त् ओंकारको पप्पाजी स्टिल कंपनीमा साहेब होतो. दुयीनक् परीवारक् परिस्थिती मा जमिन अस्मानको अंतर होतो. पर दुयीनक् दोस्तीमा कोणतोच अंतर नोहतो.

ओंकार अना पार्थ दुयी शाळाक् अभ्यासमा हुशार होता. ओकार साहेबको टुरा रयेलक वोला जेव लग् वू समय समयपर मिलजाय. पर पार्थको तसो नोहतो. वोलात् घरकी परिस्थिती देख , शाळाक् कपळा अना पुस्तक बिगर काही मांगनकी हिंमतच नोहती होत. अना एकानघन तसी हिम्मत करस्यान मांगिसबी त् काही मिलत नोहतो. ओंकारक् घर् पार्थको आवनो जावनो होय. पार्थको स्वभाव अना घरकी परिस्थिती देख ओंकारकी मम्मी वोला इचबीचमा काही देत रवं. पर पार्थला असो दुसरोकनलक लेनो पसंद नोहतो आवत. पर मोठयीनको मान थठेवनसाती वू देयी चीज धरले. एकघन पार्थकी फाटी प्यांट देख ओंकारन् आपली नवीकोरी प्यांट पार्थला देन लगाईस. ओंकारक् मम्मीनबी हासीखुशी देयीस. पर पार्थला साजरो नही लगेव. वोन् सबको मान ठेवनसाती प्यांट धरीस. पर आपलंच दोस्तकी नवीकोरी प्यांट धरणला वोको मन तयारच नोहतो होत. आखरीमा ओंकारक् मम्मीन् वोला , " आमर् घर् आवनको रयेत् तोला अस् फाटे प्यांटपर आवता नही आवनको." असो कहेपर वोकोजवर काहीच इलाज नही बचेव. वोला आपली दोस्ती तोळनकी नोहती.
उनारो सरस्यान बरसात आयी. दुयीझनकी शाळा चालु भयी. दुयीझन संगच शाळामा जात. ओंकार पार्थक् आवनकी बाट देखं. ओंकारजवर नवो रेनकोट होतो. पार्थ आपली जुनी छत्री धरस्यान आव्. असो रोजच वय एकमेकसाती थांबत अना संगच शाळामा जात. बरसात रोजक् रोज बळत होती. असोमा एकरोज ओंकार पार्थकी बाट देखत होतो. शाळाकी बेरा भयीतरी पार्थको काही पत्ताच नही. आखरीमा ओंकारकी मम्मी कवन बसी ,
"अगा , कवरीक बाट देखजो. वू तोर् पयलेच चली गयी रये शाळामा. जाय शाळामा जायस्यान देखजो."
मम्मीक् कयेपर ओंकार शाळामा गयेव.

पर शाळामाबी ओंकारको पत्ता नही. दुय रोजक् बाद ओंकारको बारावो जनमदिन होतो. वोक् पप्पाजीन् सायकलक् दुकानमालक सायकलको कॅटलाग आणीतीन वोकंमालक पार्थक् संग् वोला सायकल पसंद करनकी होती. पर दुय रोज पार्थ शाळामाच नही आयेव. दुयरोजक् बाद पार्थ शाळामा आयेवत् वोकी पुस्तक् अना दफ्तर अर्धो फिजेव होतो. कपळायीनकोबी बास आवत होतो. वोन् पार्थला येको कारण बिचारीस तब् वू सांगन बसेव. “ दुय रोज पयलेको जोरदार बारीस अना तुफानलक आमर् घरपरका टिनच उळाय गया. रातवा बारीस आयेलक आमरो पूरो सामान फिजेव. वा रात आमी वोल् आंगपरच काहाळ्या. दुसर् रोज सकारीच पप्पाजीन् दुकानपरलक मोठी ताळपत्री लेयस्यान आणिस. वा कसीतरी घरपर लगाया. दुसर् रोज दिवसभर वोलो सामान वारावनको काम कऱ्या. पर येन् बारीसमा काहान वारसे. कपळा प्रेस लगायस्यान कसातरी वाराया. वोकोच बास आय रयीसे."

"मंग आता घरपर टिन नही बिछायात ?”
" पप्पाजीन् बहुत ढुंढीस पर टिन कहान गया त् काही पत्ताच नही चलेव. आता पैसापानी आयेपर बसावबीन कसेत."
पार्थकी या कहानी आयकस्यान ओंकारक् डोरामालक पानीकी धार बव्हन बसी. वोन् शाळामा जाताबरोबर आपल् गुरूजीनला या बात सांगिस. अना पार्थला मदत करणसाती शाळाकनलक चंदा जमावनकीबी परवानगी मांगिस. पार्थ शाळामाको हुशार अना प्रामाणिक विद्यार्थी होतो. ओकंपर आये संकटलक सबला दुख भयेव. ओंकारकी बात आयकस्यान शाळाक्  सपाई गुरूजीनन् पार्थला मदत करनसाती शाळाकनलक मदतनिधी जमा करनकी ओंकारला जबाबदारी देयीन. वोनंरोज ओंकारला अनको घास गोळ नही लगेव.

कंपनीमालक घर् आयेपर ओंकारको पप्पाजी वोला जनमदिनक् भेट साती कोणती सायकल निवळेस असो बिचारन बस्या. तब् पप्पाला चिपकस्यान ओंकार रोवनलाच बसेव. ओकारक् पप्पाला अना मम्मीला काही समजमाच नही आयेव. कालवरी सायकलसाती रोवनेवालो टुरा अज असो काहे रोय रयीसे. रोवता रोवताच ओंकारन् पार्थसंग घटी घटना सांगिस. पार्थकी कथा आयकेपर ओंकारक् मम्मी पप्पाकबी डोरामा आसु आया. ओंकार आसू पोसतच आपल् पप्पाजीला कवन बसेव , " पप्पाजी , मोला जनमदिनला सायकल नही पायजे. आपन सायकलक् पैसाकी पार्थक् घर् मदत करबीन." येकंपर ओंकारका मम्मी पप्पा खुशी खुशी तयार भया.
दुसरो रोज शाळामा पार्थक् घरसाती मदतनिधी जमा करनोमा आयी. वोन् मदतनिधीमालक शाळाक् गुरूजीनन् जायस्यान पार्थक् घरपर नवाकोरा टिन बसाय देयीन. ओंकारन् आपल् जनमदिनक् रोज पार्थक् घर् जायस्यान वूनक् घरको खराब भयेव बिस्तर , अनाज अना कपळालत्ताक् जाग् दुकानपरलक पुरो सामान लेयस्यान आपल् पप्पा मम्मीसंग् लिजाय देयीस. पार्थक् घरचं ओंकारको जनमदिनको केक कापनोमा आयेव. असो अनोखो जनमदिन देख पार्थ अना वोका मम्मी पप्पात् देखतच रय गया. अना आपल् टुराकी या सूजबूझ देख ओंकारका मम्मी पप्पा खुदला भाग्यशाली समजस्यान वोक् लंब् उमरकी कामना करन बस्या.

# पोवार समाजमा नारी को स्थान

सौ. छाया सुरेंद्र पारधी, सिहोरा

संसार रथ का दुय चाक स्त्री अना पुरुष.ये संसाररूपी रथ का दुही चाक जब बराबरीका रहेत तब उनको संसार सुखी होये.एक चाक कमजोर रहे त रथ बराबर चलनको नहीं. मुन स्त्री पुरुष दुही ला समान दर्जा पाहीजे.

**" जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"**

येन संस्कृत श्लोक मा लिखी से नारी अना जन्मभूमि दुही स्वर्ग दून महान सेत। येकों अर्थ नारी पहले भी श्रेष्ठ होती , अज़ भी से, सकारी भी श्रेष्ठ रहे। नवसृजन की प्रक्रिया साती नारी अना नर दुही समान की आवश्यकता से.नव सृजन सिर्फ नारी कर सकसे,मुन नारी को स्थान श्रेष्ठ से।

**नारी तू नारायणी, विश्व जन्मदायनी माय। देवी रुप सकल नारी,नारायणी रूप आय।।**
**गर्भ मा ज्योति तू नव महीना जगावसेस । मरणककळा सहस्यानी नवजीवन देसेस।।**

अससि से आंमरी पोवारी संस्कृती.जहा नारीला उच्च स्थान से. नारी को मानपान से .बेटीला लक्ष्मी, सरस्वती मानेव जासे. बडी बाई, छोटी बाई असो मान लक उनला बुलायेव जासे.

**"यत्र नार्यस्तू पूज्यन्ते रमण्यते तत्र देवता"** अर्थात जहान नारी की पूजा होसे वाहान देवता को वास रवसे.
२० वो शतकमा पोवारी नारी घर अना खेतीबाडी को काममा निपुण होती . खेतीबाळी अना जोडधंदा मून पशुपालन पोवार को मुख्य व्यवसाय होतो.परंपरागत खेती को हर काममा नारी को योगदान महत्वपूर्ण होतो.बाहेर का काम घर का माणसं करत,घर, टूरुपोटू संभालन की जिम्मेदारी स्त्री परा होती.

लहानपनच बिहयां होत होता .घर की सत्ता सासू जवर रवं. सासुच घर की मुखिया रवं. घर मा कायकी भाजी बने याहापासून त पाव्हणा को पाहुणचार का बने याहावरी सासू को राज रवं. मनजे घर को सबजनला एकता को सूत्र मा बांधकर ठेवनको काम करत होती. घर को मोठो भासरो, सुसरो पासून त गाव को मानवाइक वरी सबला मान देनसात डोसका पर सेव(पदर) लेनकी प्रथा होती. मानमर्यादा , डोई पर सेव पहचान होती.नारीला मान भी होतो.घर को हर निर्णयमा ओकी सहमती लेत होता.

हर तिज त्योहार बडो श्रद्धालका मनावने वाली स्त्री,कलागुण मा निपुण, धागा का थैला ,बिजना बनावनो, जूनो कपडा की कथडी, सुंदर थईला,झोलना खलता बनावनो मा निपुण होती.गायन कला मा जातो पर का गाना, बीह्या का गाना कवनोमा निपुण होती.

**कुंभार घरकी कोरी मथनी, झाकेव गयेव सेला! वोरूमाय सीताबाई आपलो बेटाबहुला लेवावसे कुरा!!**

शिक्षा को क्षेत्रमा टुरीला जादा सिकावन को पक्षमा नोहता. काहे की शिक्षा की सुविधा नोहती. दुर पठावणो पडत होतो, मुन शिक्षा को क्षेत्रमा नारी की वोत्ती प्रगति नहीं भईती. पर शतक को उत्तरार्धमा या परिस्थिती बदली , धिरू-धिरु समाजमा नारी शिक्षा को प्रती जागृकता आई. अज मायबाप टूरी ला उच्च शिक्षण देनको पक्षमा सेती.अज डॉक्टर, इंजिनियर, ऑफिसर ना बोहोतसो क्षेत्रमा घर की जिम्मेदारी को संग अनेक उच्च पद पर कार्यरत सेती.दुनिया को संग संग चल रही से , उत्तोरोत्तर प्रगती पथ पर अग्रेसर से पोवार नारी.

अज २१ वो शतकमा पोवार नारी पूर्णतः बदल गई से पर संस्कार नहीं बदल्या.. नवो जमानो को संग चल रही सेती. घुंघट जायके आता आधुनिक वस्त्र परिधान कर सेती. पर मोठो को मान ठेवनो,पूजापाठ, तिज त्योहार, वोत्तोच श्रद्धा लक करसेती.असो नारी शक्ति ला शत शत नमन.

**घूंघट मा रवणे वाली,बदल गई से पोवार नारी, आता उच्चशिक्षित नारी बाहेर भुसावसे पद भारी**
**संस्कार मा तसिस से वोको हातमा कुटुंब की दोरी , काली दुर्गा याच नारी संकट आयेपर बनसे आरी**

***

# राजा भोजदेव

सौ. छाया सुरेंद्र पारधी, सिहोरा

राजा भोजदेव एक बार आपलो दरबार मा् बस्या होता. तब एक साधु महात्मा हरिद्वार लक दरबार मा आयेव्. राजा भोज देव न बड़ों आदर सत्कार करीन. आदर सत्कार लक साधु बडो प्रसन्न भयेव्. अन् राजाला कवन लगेव "राजन,तुमरो सेवा लक मी बहुत प्रसन्न सेव्, काहि भी वरदान मांगो" राजा बिचार करीस "महात्मन ,धनधान्य लक मी सम्पन्न सेव,सब से मोरो जवड,देनोच रहे त ज्ञान की दुय गोष्टी सांग देव" महात्मन खुश भय् गया ज्ञान किं बात बोल्या, पहली बात - **" सोयात त खोयात, जाग्यात त् पायात् "**

दूसरी बात -. **" अतिथि देवो भव् "**

महात्मा आशीर्वाद देयकर चलो गयेव.

राजा भोजदेव बड़ा ही प्रजावत्सल होता एक दिवस वय प्रजा की खुशहाली जानन साठी अर्ध रात्रि को समय मा भेस बदलकर निकल पड़या. फिरता फिरता उनला एक आवाज आई एक बूढ़ी स्त्री बड़ को झाड़ खाल्या जोर -जोर लक रोवत होती. राजा भोज शिपाई को भेष मा ओन स्त्री जवड़ गया अन् रोवन को कारण बिचारिंन. बहुत बिचारेपर ओन सांगिस,"राजा भोज ला सकारी येन ढोलिमा जो नागराज रवसे ,ओको दंश लक राजा की मृत्यु होए"येत्तो आयकश्यान राजा भोज वहां लक आपलो माहाल मा वापस आया. तब साधु की बात याद आयी,"अतिथि देवो भवं"

आता राजा न् साक्षात आपलो काल को स्वागत करण साठी सेवकला आज्ञा देईस की महाल पासुंन त् ओनं बड़ को झाड़ वरी रस्ता फूल लक सजाओ अन दूध भी ठेवो. सेवक न् आज्ञा को पालन करीन. रात्रि को समय मा कारो नागराज आप लो ढोली मा लक निकलेव्, राजा को प्राण हरण, राजा को महल मा पोहचेव .नागराजला राजा न जसो देखिस, तसो दंडवत प्रणाम करिस. नागराज आदर तिथ्य लक प्रसन्न भयेव् अन राजा भोज ला वर देइस की " हे राजन,तू हर प्राणी की भाषा समझ सकजो "असो कहकर नाग राज निकल गएव.

असो होता आमरा महान प्रतापी प्रजा वत्सल अतिथि को सम्मान करने वाला। जय राजा भोज ।।

**बोध:**अतिथी देवो भव घर आयेव अतिथी चाहे दुश्मन काहे नहीं रव उनको सन्मान करनो मंजे भगवान को सन्मान आय.

# वृद्धावस्था - एक सामाजिक समस्या

✍ चिरंजीव बिसेन परमात्मा एक नगर, सुर्याटोला वार्ड, गोंदिया (महाराष्ट्र)

---

आदमी क् जीवन मा तीन अवस्था आवसेती. १)बचपन २)जवानी ३)बुढापा. बचपन लाड प्यार मा बीत जासे. जवानी कर्तव्य पालन करनो मा बीत जासे. पर बुढापा की बात अलग से. आदमी सब जिम्मेदारी पूरी करस्यारी बुढापा मा कदम ठेवसे. टूरू पोटू इनकी पढाई, बिह्या (विवाह) निपटायस्यारी तसोच नौकरी धंदाल् बी मुक्त होयस्यारी येन अवस्था मा जासे. या अलग बात से कि काही की जवाबदारी पहले निपट जासे त् काही की बुढापा मा बी रव्हसे. टुरी बिह्या होयकर आपल् घर चली जासे. टुरा नौकरी चाकरी साती मोठ् शहर मा रव्हसे. घर मा सिर्फ दुय झन, पती ना पत्नी. गावमा रव्हनेवाला तरी थोडं मजामा रव्हसेती. आजू बाजू का कोणीना कोणी मुलाकात करनला आवसेती. थोडो बहुत काम बी कर देसेती. पर शहर मा असो नही होय. दिवस भर दुयच झन रव्हसेती घर. समय काटेव लका नही कट.असो मा एखाद छंद रहेव त् टाईमपास चांगलो होसे. आपस मा बोलेत बी त् दिवस भर का बोलेत. कभी कभी त् बात बात मा खटपट होय जासे, अना दिवस भर अबोला रव्हसे. तरी दुही झन एक दूसरो क् सहारा ल् रव्हसेती. जब ओरी हात पाय चलसेती आपलो काम व्यवस्थित करत रव्हसेती.

असली समस्या तब आवसे जब हात पाय चलनो बंद होय जासे. अना सहायता करनला कोणी नही रव्ह. दुय माल यदि एक झन चली गयेव त् समस्या अनखी गंभीर होय जासे. जीवन बोझ लगन लगसे. अना भगवान जवर जल्दी बुलावन की विनंती करनो मा आवसे. नौकरी ल् रिटायर्ड ना जिनला पेन्शन भेटसे, वोय पैसा पानी ल् ठीक रव्हसेती. पर तबियत खराब होयेपर, डॉक्टर क् यहॉ जानो, दवाई आननो, सामान आननो ये सब मोठी समस्या लगसेती. घर का कामकाज करनो बी भारी जासे. टुरी क् यहॉ जानो संभव नही रव्ह. अना टुरा बी लिजानला तैयार नही रहेव त् तब बुढापा सबसे बडी समस्या से असो लगसे. केवल पुराना दिवस याद करस्यारी दिवस बितावनो पडसे. जीनला पेन्शन बी नही रव्ह ना खेती बाडी बी नही रव्ह उनकी समस्या अधिकच गंभीर रव्हसे.

पोवार समाज मा अशी समस्या कम देखनो मा आवसे. पर दुसरो समाज मा ना मोठ मोठो शहर इनमा धीरू धीरू या समस्या बढ रही से. बुजरूक लोकईनला आपलो घर सोडस्यारी वृद्धाश्रम की रस्ता धरनो पडसे.

समस्या क् जड मा जानकी कोशिश क-यात् काही बात् सामने आवसेती. आदमी टुरू पोटू इनको बचपन पासून बिह्या होत वोरी सम्भाळ करसे. टुरा नौकरी मा लगसे वोको बिह्या होसे, वु आपल् पत्नी संग नौकरी क् ठिकान मा मोठ् शहर मा चली जासे. तब बाप की उमर ६०-६२ की रव्हसे. हात पाय चलसेती, तब वु आपलो गाव या शहर सोडस्यारी जानला तयार नही होय. हात पाय थकन की बाट देखसे. टुराइन को कासे, पहले पढाई क् कारण लका अना बाद मा नौकरी क् कारण ल् बाहेर रव्हसेती. उनको माय बाप संग लगाव कम होय जासे.

बहू बिह्या क् बाद मा तुरत टुरा संग चली जासे. वोको सासू सुसरो सब भावनिक लगाव जुडच नही. गाव मा खेती बाडी करने वाला या घरलक् नौकरी करनेवाला टुराइन क् संग या समस्या नही आव. पर घर सोडस्यारी मोठ् शहर मा नौकरी करनेवाला टुराइन का मायबाप बुढापा मा एकटाच रव्हन की संभावना ज्यादा रव्हसे. दुसरी बात एकच टुरा रहेव त् उनक् जवर दुसरो पर्याय बी नही रव्ह. मुहून उनको एकटा रव्हन की संभावना ज्यादा रव्हसे.

येको पर काही उपाय करता आहे का येको पर बिचार करनो जरूरी से. जब टुरा को बिह्या होसे ना वु बहू ला धरस्यारी नौकरीपर जासे अना माय बाप का हात पाय चलसेती तबच उनन् टुरा जवर जायस्यारी रव्हन को सोचे पाहिजे. अना यदि बेटा बहू तैयार रहेत त् उनन् टुरा जवर जाहे पाहिजे. वोन् समय माच् बेटा बहू ला उनकी जास्त जरूरत रव्हसे असो मोला लगसे. काहे का बहू की डिलेवरी, लहान बच्चा इनकी देखभाल करनसाती बुजरूक लोक संग रव्हनो जरूरी रव्हसे. येको लका उनको बहू संग ना नाती नातीन संग भावनिक लगाव जुड जाहे. नाती नतरू लहान रहेव ल् उनला सम्हालन ला आजी आजी की मदत होये. अना बेटा बहू को काम हलको होये. ना इनला बी वहॉ क् माहौल मा एकजेस्ट होनला सोपो जाहे.

पूरा लागर होये क् बादमा टुरा जवर जानोपर नाती नातीन १५-२० साल का होय जासेती. तब उनमा भावनिक लगाव निर्माण होनो कठिन जासे. बेटा बहू ला बी मंग वोय बोझ लगन लगसेती. यदि बेटा बहू ठीक रह्या त् ठीक नही त् निभाव लगनो कठिन जासे. मुहून हात पाय चलसेती तबच् टुरा जवर रव्हन ला जाहे पाहिजे. असो मोला लगसे.

दुसरी बात बेटा बहू ना माय बाप क् उमर मा जनरेशन गॅप म्हणजे करीब २५-३० साल को उमर मा फरक रव्हसे. मुहून घरसाती बेटा बहू जेव निर्णय लेसेती वोला हासी खुशी ल् मान्य करे पाहिजे. वोक् पर टिका टिप्पणी ल् बचे पाहिजे. लेन् देन् क् काममा बी वोय जब वोरी तुमरी राय नाही मांगत तब ओरी राय नही देहे पाहिजे. वोक् लका रिश्ता ना घर को माहौल खराब होन् की संभावना रव्हसे. उनका निर्णय उनला लेन् देहे पाहिजे. आफुन सिर्फ हॉ मा हॉ मिलाहे पाहिजे. असो लका माय- बाप, बेटा-बहू ना नाती नातीन को जीवन बी सुखमय होये. असो मोला लगसे.

# शिक्षा एवं संस्कृति से होगा पोवार/पँवार समाज उत्थान
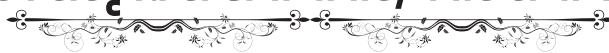
प्रा. डॉ. हरगोविंद टेंभरे

**भूमिका:** किसी भी समाज के विकास के लिए उस समाज के लोगों की शिक्षा के प्रति जागरूकता के साथ संस्कृति के ऊपर आधारित हैं। हमारे पोवार/पँवार समाज में शिक्षा एवं संस्कृति दोनों ही समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

**शिक्षा:** हमारा पोवार समाज  सबसे ज्यादा कही बसता है तो वो है। गांव समाज के लोगो का मुख्य व्यवसाय भी कृषी ही है। अब  पोवार/पँवार समाज बडे शहरो में भी बसने लगा है किंतु आज हमे समाज उत्थान के दृष्टीकोन से कृषी शिक्षा के साथ ही विज्ञान एवं प्रद्योगिकी शिक्षा के साथ प्रतियोगी परीक्षा में सहभाग की ओर अधिक बल देने की आवशकता है। हमार देश विकसित देश की ओर अग्रसर हो रहा है इस में समाज का योगदान महत्वपूर्ण सबित होगा। इस काम के लिये समाज के युवा वर्ग को आगे आकार भागीदारी एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य पालन के दायित्व का निर्वाहान करणे की आवशकता है। कुछ युवा पिढी आज समाज के लिये आदर्श सबित हो रही हैं हम देखते है की हमारे युवा सात समदंर पार होकर भी आज समाज के उत्थान के लिये तत्परता से सहभागी हैं। देश के विकास में भी समाज का युवा अपना योगदान दे रहा है। ये हमारे लिये शुभ संकेत है।
जय जवान जय किसान के नारे के साथ समाज अन्नदाता के साथ देश की रक्षा के लिये अपने प्राण देने हमेंशा तत्पर हैं।

**संस्कृती:** किसी भी समाज के उत्थान के लिये उस समाज की संस्कृती संस्कार का जीवित होना बहुत महत्वपूर्ण होता हैं हमारी पोवारी संस्कृती एवं संस्कार हमारी सच्ची धरोहर है। समाज उत्थान के लिये इन तत्व का होन आवश्यक हैं  जितने भी विकसित समाज को हम देखे तो हम पाते हैं की उस समाज की संस्कृती एवं संस्कार कितने उपयोगी हैं। हमारी पोवारी संस्कृतीक मुल्यो को जिवीत रखाने की आज आवशकता हैं तभी हम अपने समाज को विकास के नई बुलंदी की ओर ले जाने में सफल होगे।

# महान कोन

✍ कु. कल्याणी पटले दिघोरी, नागपुर

एक बगीचा मा एक आंबा को अना एक कड़ूलिंब को झाड लग्यो होतो. वय नहान पन पासुन मोठा होत वरी संगमा अच्छो लक पल्या बढ़या. काही साल को बाद मा दुही झाड इनला फल आवन ला सुरवात भई, तब माली न आंबा को झाड का फल तोड़कर बिकन लिजाईस अना तब वोन माली की अच्छी खासी कमाई भई. वोन फल की सब तारीफ भी करन लग्या होता..........

तब आंबा को झाड ला खुद पर अभिमान आय गयो अन कडुलिंब को झाड संग वोन बोलनो बंद कर देईस, तब कडुलिंब को झाड न कहिस तु मोरो संग पहिले जसो काहे नहीं बोलस. तब आंबा को झाड न कहीस का तोरो मा अन मोरो मा केतरो फरक से. कहा तोरो फल को कडू स्वाद अन मोरो फल को मीठो स्वाद, मोरो फल खान को काम मा आवसे, तोरो फल कोनसो काम मा आव से, तोरो अना मोरो कहीच मेल नहाय. मी त महान सेव, तोरो संग बोलके का करू. ये सब बात दुही को बीच मा लग्यो पपई को झाड न आयकीस, तब पपई को झाड न आंबा को झाड ला समझाईस का सब को आपरो जागा पर आपरो अस्तीत्व से. तु खान को काम मा आवसेस त कडुलिंब दवाई बनावन को काम मा आवसे. जो काम तु कर सीक सेस वू कडुलिंब नहीं कर सीक, जो कडुलिंब कर सीक से वू तु नहीं कर सीकस. सब को आपरो अलग महत्व रवसे. यहा कोई महान नहाय. यो समझायो पर भी आंबा कडुलिंब संग बोलत नवतो. काहीं दिन को बाद मा आंबा का पान झडन लग्या, अन बुड मा उदई लगन लगी. तब मालीन कडुलिंब को फल को रस निकालकर आंबा को झाड को जड़ मा टाकीस अन काहीं दिन बाद आंबा ला नवा पान आया. तब आंबा को झाड ला समज मा आयो का वू गलत से. अज कडुलिंब को झाड नहीं रवतो त वोला डबल पाकुरा नहीं फुटता अना वोला फल नहीं लगता, तब आंबा को झाड ला आपरो गलती पर पछतावा भयो अन वोन कडुलिंब ला माफी मांगीस अन वू पहिले सारखो कडुलिंब संग बोलन लग्यो . तब वोला समझ मा आयो का सब को आपरो महत्व रवसे. यहा कोई महान नहाय.

बोध: जीवन मा कोई महान नहीं रव. सबको आपरो अलग स्थान रवसे, खुद पर स्वाभिमान करन ला होना पर अभिमान नहीं, अभिमान करयो लक आपुन आपरो लोकईन पासुन दुर जासेज. अन हमेशा गलत साबीत होसेज.

# पोवारी लोक संस्कृति, कला, पूजापद्धति

✍ राजेश हरीकिशन बिसेन कारुटोला, दवनीवाडा मो.न.9420865624

हम पोवारो की धार्मिक विरासत बहुत पुरानी है । सदियों पहले धारा नगरी से यहां आने के बाद भी हमने अपने सांस्कृतिक धरोहर को बचाए रखा है यह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात है। हम लोग पुरातन एवं सनातन संस्कृति को मानने वाले लोग हैं। हम अपने घर में देवघर भी रखते हैं। पोवारो के घर में महादेव का बोवला भी होता है। हमारे समुदाय के लोग गांव के अंदर माता माई, बजरंगबली इनकी भी पूजा बड़ी श्रद्धा के साथ में करते हैं। हम पोवार लोग गांव में संध्या काल के समय बजरंगबली के मंदिर एवं माता माई के मंदीर में दीया लगाया करते थे मगर यह प्रथा अब धीरे-धीरे लुप्त होते जा रही है। इनके साथ में हमारे खेती-किसानी में अन्य देवता भी होते हैं जैसे नागदेव ,बाघदेव,पाटिल देव, काली माता ,खील्यामुठिया तथा स्थानिक मान्यताओं केनुसार अन्य देवताओं की भी पूजा अपने परंपरा के अनुसार करते हैं। हमारे समाज के द्वार पर यदि कोई मांगने वाला गुसाईं, पंडा, पांगुड, हरदास ,जोगी, फकीर ,साधु ,संत,आता है तो उनका बड़ा मान सम्मान और आदर सत्कार होता है। वह लोग खाली हाथ कभी वापस नहीं जाते। दान धर्म में पंवार समाज हमेशा आगे रहा है।

हमारे समाज में कुछ कुरीतियां भी थी। धन-ढोर , संतान प्राप्ति, धन प्राप्ति ,भूत बाधा, इस तरह के विषयों पर हम लोग अंधश्रद्धा में लिप्त थे। मगर जैसे-जैसे हमारे समाज के कदम शिक्षा के और बढ़ते गए वैसे वैसे हमारा समाज इन कुरीतियों और अंधश्रद्धासे भी दूर होते गया। हमारा समाज वेसन नशा-पानी से हमेशा दूर रहा है। वर्तमान के नई पीढ़ी को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए हमें उचित कदम उठाने पड़ेंगे । शिक्षा के क्षेत्र में समाज को परम वैभव की ओर ले जाने के लिए हम सभी समाज के लोगों को इस चुनौती का सामना कर समाज के नौजवानों को नई दिशा देने का काम करना पड़ेगा।

पोवार समाज के लोग धर्म-कर्म में बहुत ही विश्वास रखने वाले लोग होते हैं। देश के अंदर जितने भी त्यौहार होते हैं सभी त्योहारों को बड़े धूमधाम से और उल्लास के साथ में मनाते हैं। हमारे समाज के लोग अपना क्षेत्र छोड़कर यदि दूसरे राज्यों में वास्तव्य कर रहे हैं तो उस राज्य की संस्कृति में विलीन होकर वहां के संस्कृति का सम्मान करते करते हुए वहां के मूल निवासियों के साथ मे अपनेपन का भाव रखते हुए वहां के संस्कृति में विलीन हो जाते हैं।

हमारे समाज के लोग बहुत ही भोले, सच्चे एवं स्पष्टवादी होते हैं। समाज में पुरुष बहुत धष्ट- पुष्ट एवं चौड़े माथे के होते हैं तथा स्त्री बहुत ही सुशोभित एवं सुंदर होती है । मानो भगवान ने खुद धरती पर उतर कर इनको तरासा हो। एसे हमारे समाज को गौरवपूर्ण संस्कृति के साथ में भगवान ने इस धरती पर दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है।

# मातृभाषा / मातृबोली संरक्षण - महत्व एवं आवश्यकता

- ज्योत्सना पटले टेंभरे (मुंबई, मू. नि. बालाघाट)

**अम्ही पोवार आजन । अम्हरी बोली पोवारी आय ॥**
**पोवारी संस्कृति असी बिराज से । जसी टिकली अम्हरी माय की आय ॥**

कितनी मिठास, कितनी मधुरता लिए ये शब्द जो हमने सुने थे कभी अपने दादा दादी, नाना नानी के मुख से। किसी अनजान शहर में दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर जुड़ाव की भावना उत्पन्न करने की योग्यता अगर किसी में है तो वह है मातृ भाषा या मायबोली।

आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम काफी कुछ भुला बैठे हैं, हमारी मायबोली "पोवारी" भी इस सूची में शामिल हो चुकी है।

भाषा/बोली संस्कृति के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण और अपरिहार्य भूमिका निभाती है।

भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (पीएलएसआई) द्वारा किए गए गहन शोध के तीन साल बाद यह निष्कर्ष निकाला गया। पिछले दो दशकों से, डॉ जीएनडेवी उन भाषाओं को संरक्षित करने के लिए गहन रूप से काम कर रहा है जो विलुप्त होने का जोखिम रखते हैं।

दुनिया की सैकड़ों भाषाओं में से एक हर दूसरे सप्ताह गायब हो जाती है और अधिकांश भाषाविदों का अनुमान है कि दुनिया की शेष भाषाओं का 50% इस सदी के अंत तक चला जाएगा। अन्य भाषाविदों का अनुमान है कि व्यावसायीकरण और वैश्वीकरण वर्तमान में बोली जाने वाली 90% भाषाओं को विलुप्त होने के कगार पर ला देगा। इसलिए हमें न केवल जैव विविधता के बारे में चिंतित होना चाहिए, बल्कि भाषाई विविधता के संरक्षण के लिए भी हमारी चिंता को प्रदर्शित करना चाहिए।

जेसी शर्मा ने अपने पेपर लैंग्वेज एंड स्क्रिप्ट इन इंडिया: कुछ चुनौतियां, नोट्स, “देश में विभिन्न क्षेत्रों में फैली कई अलिखित भाषाएं हैं। कोई भी राज्य अलिखित भाषाओं के बिना नहीं है।भारत की विशाल भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के लिए इसकी विशेष प्रासंगिकता है। जबकि शर्मा का प्रस्ताव है, अलिखित भाषाओं के लिए उपयुक्त स्क्रिप्ट प्रणाली, मुझे लगता है कि डिजिटल उपकरण और आईसीटी हमें एक स्क्रिप्ट के अभाव में भी एक भाषा का दस्तावेज बनाने की शक्ति देता है।

भारत जैसे मुख्य रूप से मौखिक संस्कृति वाले देश में, जो हजारों आदिवासी समुदायों और सैकड़ों भाषाओं का घर है, आप भाषाओं को कैसे संरक्षित करते हैं? आप उन भाषाओं को कैसे प्रलेखित करते हैं जो केवल लोकगीतों में गाए गए हैं या बिना स्क्रिप्ट के लोक कथाओं में सुनाए गए हैं? आप उस संस्कृति, परंपराओं और इतिहास का दस्तावेज कैसे बनाते हैं जो रोजमर्रा की जिंदगी में अंतर्निहित हैं? भाषाओं/ बोलियों के संरक्षण में डिजिटल माध्यम कि महत्ता:- अतीत में डिजिटल टूल और इंटरनेट के अभाव में, पाठ के माध्यम से प्रलेखन इतिहास, संस्कृति, कला और यहां तक कि भाषाओं के संरक्षण का एकमात्र माध्यम था। फिर डिजिटल उपकरण आए, और इतिहास, संस्कृति, कला और यहां तक कि (लिपियों की) भाषाओं को फोटो और संरक्षित किया जा सकता है। और अब हमारे पास ऑडियो विजुअल प्रारूप हैं, जो किसी भाषा को दस्तावेज या संरक्षित करने के लिए एक स्क्रिप्ट की आवश्यकता को समाप्त करते हैं।

यूनेस्को का दावा है कि अगर कुछ नहीं किया गया, तो आज बोली जाने वाली अधिकांश भाषाओं में से आधी इस सदी के अंत तक गायब हो जाएंगी। इस प्रकार यह जरूरी है कि दस्तावेज़ भाषाओं के लिए ऑडियो-विज़ुअल का उपयोग करने के लिए अधिक प्रयास किए जाएं क्योंकि यह विशेष माध्यम शोधकर्ताओं और भाषा के प्रति उत्साही को एक भाषा को समझने की अनुमति देता है, भले ही उन्हें स्क्रिप्ट पता न हो। प्रलेखन के माध्यम में यह अंतर (पाठ्य-श्रव्य-दृश्य) वह है जो वास्तव में किसी भाषा को संरक्षित कर सकता है, भले ही इसके मूल वक्ताओं / लेखकों को लंबे समय से चले गए हों।

आइए मातृभाषा का पोषण करें। रचनात्मकता को पूरी तरह से पनपने दें। मातृभाषा अभिव्यक्ति की आत्मा है।

***

# व्यसन आज की सें सिर्फ एकच पुकार समाज मा नशा को करो बहिष्कार

✍ सौ. शारदा चौधरी / रहांगडाले भंडारा

आबं को युग मा व्यसन अधिक प्रमाण मा बढ गयी सें.बुजुर्ग,लहान अना देश, समाज ला संभालनेवाली जवान पिढी बी व्यसन को चपेट मा आय गयी सें. अना या बहुत बिचार की बात सें. कभी-कभी तं असो लगं सें देश ना समाज को भविष्य कसो होये?

आता व्यसन मंजे का? तं व्यसन मंजे एखाद चीज को अति घातक प्रमाण मा वापर.वोनं चीज की येतरी सवय लग जासें की वोको पासून पुरो तन, मन अना समाज ला नुकसान पोहोचसे.

नाहाय उम्मीद नाहाय आशा<br>
चारही आंगं सें निराशा<br>
बरबाद कर देये तुमला<br>
नशा की सें या परिभाषा

येव व्यसन नस, तंबाखू, गुटखा, बिडी, सिगारेट, चरस, गांजा, मोबाईल, पबजी सारखा ऑनलाइन खेल इनको बी लग सकं सें.अति पैसा को वापर,अति उत्सुकता,बुरी संगत,मार्गदर्शन को अभाव, निराशा, एकलोपणा, वास्तविकता पासून दूर जानसाती दारू या अन्य चीज को व्यसन लग जासे.व्यसन एक असो तुफान आय का जेको लक माणूस की पुरी जिंदगी तहस-नहस होय जासे. माणूस येको लक बिचारं करन की बुद्धी खोय देसे. भलो-बुरो की पयचान नही रवं.कई बार तं व्यसनी माणूस आत्महत्या करलेसे.कईपिढी बरबाद होसेती.येनं व्यसन को तुफान मा कई बाई लोग भी फस गयी सेती. गाव-खेडा मा बहुत बाई लोग तंबाखू खासेंती.वोको असर बी बच्चा पर पडं से.नस लक दात घासन की बहुत जन ला आदत पड गयी सें.नस लक दात घासें लक दात को झीज होसे.डोरा की रोशनी बी कम होसे.
नस,तंबाखू मा निकोटिन नाव को जहरिलो पदार्थ सें जो अति घातक सें.वोको लक कॅन्सर सारखी बिमारी होय जासे. गुटखा, तंबाखू तोंड मा भरकर ठेये लक तोंड को कॅन्सर होसे.बिडी,सिगारेट पिवनेवालो माणूस खुद को बरोबर आजूबाजू को लोकं इनला बी रोग को घेरा मा आनं से.प्रदूषण फैलावंसे.असो माणूस का फेपडा सडं सेती.मरण ला वू खुद बुलावा देसें.

येव व्यसन नाव को तुफान ला अगर आबं रोक नही लगाया तं पुढं मोठो प्रलय आय जाये. कारण सद्सद् विवेक बुद्धी को अभाव को कारण माणूस अविवेकी कृत्य करे. जितं-उतं बर्बादी फैले. घर का लेकरूबार बेघर होयेत.हत्या,मारपीट सारखा गुन्हा घडेती. कई लोक दारू पियकर गाडी चलावं सेती अना अपघात होसेती.व्यसनी माणूस कभी-कभी या बात समजंसे.पर वू आदत को पायी लाचार होयस्यांन व्यसन को आहार मा जासे.वोको खुद पर ताबा नही रवं.

कई व्यसनी माणसं लहान बच्चा को हात लक दुकान पर लक गुटखा,तंबाखू बुलावं सेती.येनं कारण लक बच्चा बी तंबाखू खानला शिकं सेती.घर पर दारुड्या बापला देखंकर जवान होये पर बच्चा बी दारू पिवन लगं सेती, शाळा महाविद्यालय मा बी पार्टी होसेत. या एक फॅशन बन गयी सें. पार्टीमा बीयर,सिगारेट चलं सें. काही विदयार्थी अभ्यास को ताण कमी करन साती व्यसन करं सेती.कई विद्यार्थिनी बी मादक पेय सेवन करं सेती.या समाज साती अति घातक बात सें.ज्या पिढी नवीन जीव निर्माण करं सें वाच अगर नशा करे तं वोका दुष्परिणाम आवनोवालो पिढी होय सकं सेती.

आजकाल मोबाईल बी एक व्यसन बन गयी सें.मोबाईल पर का ऑनलाइन खेल,पबजी लक कई विद्यार्थी की जिंदगी करिअर बरबाद भया सेती. मोबाईल अति देखेलक
डोरा कमजोर होसेत.

सब बात को बिचारं करे पर समज मा आवं सें की व्यसन कोणतो बी रवं वोका दुष्परिणाम बहुत भयंकर सेती.मुन व्यसन मुक्त माणूस होये पायजे.व्यसन सोडन साती प्रबल इच्छाशक्ती, प्रयत्न की जोड, सही दवा, सही सल्ला, सेवाभावी संस्था को हातभार जरुरी सें.बच्चा को बाऱ्या मा देखे जाय तं माय बाप नं उनला बिश्वास मा लेयकर,संवाद साधकर उनको पर ध्यान देये पायजे.फिजुल खर्च साती पैसा देनो बंद करे पायजे.माय-बाप नं खुद की बी पार्टी बंद करे पायजे.तबं या स्थिती नियंत्रण मा आये.अन्यथा पुरी पिढी येनं व्यसन रुपी तुफान मा बरबाद होय जाये.

***

---

# स्वाभिमान

कोमल सेव कमजोर नही आज की नारी मी बलवान
मी एक स्त्री आव येको मोला से स्वाभिमान ॥

बेटी आव मी कोणी की आता पत्नी को मिलेव मान
निभायकर बहू-माय को रिश्ता माय-बाप की राखूसु आन ॥

रवुसू हर हाल मा खुश सयकर मान-अपमान
संकटमा बी डटकर रवुसू बढावुसू परिवार की शान ॥

कई रूप सेत मोरा भूत-भविष्य ना मीच वर्तमान
रामायण-महाभारत की सूत्रधार आय मोरीच खाण ॥

शांत-संयमी-सक्षम सेव देसू मी ममता को दान
सुंदर-सुशील-त्याग की मूर्ती देसू जगला जीवनदान ॥

परिधान करुसू साडी-पातल दिसुसू बडी रूपवान
पयनूसु गाऊन-सलवार पर राखुसू संस्कृती को भान ॥

धनी सेव लक्ष्मी वानी सुंदरता से पार्वती समान
शक्ती से दुर्गा की सरस्वती वानी सेव गुणवान ॥

हर क्षेत्र मा सेव कार्यरत येव ले तू जमानो जान
दर्जा देव बराबर को देव हर बात मा सम्मान ॥

✍ **सौ. शारदा चौधरी / रहांगडाले भंडारा**

---

***

# बोधकथा : मोऱ्या

✍सौ.वर्षा पटले रहांगडाले बिरसी, आमगांव जि.गोंदिया भ्रमणध्वनी:8669092260

काल बहुत बढिया पाणी आये होतो। रातभर बादर आपलो अंदर को पाणी खुलो हातलका धरतीमाता ला देत होतो। धरतीमाय की तहान मिटावत होतो। धरतीमाय बी बादर को भट्टीमाको तपन लका पुरी हतबल भय गयी होती म्हणून पाणी पीयके आपली त्रृष्णा भगावत होती।

सखाराम भाऊ अना सखुबाई आपलो खाट पर सोयेव सोयेवच मनमा पाणीला धन्यवाद देत होता। उनको पाच एकर को खेत पानी को नही आयेव लका पड्यावच होतो। म्हणून पानीला मनको मनमा धन्यवाद देत होता। 'सखु आमरी आयकीस वो येन पानीन, सकाळी लवकर उठके खेतमा जाबीन' असो सखाराम भाऊ कव्हन बसेव। सखु बाई कवन बसी, 'अवो मी का कसु मोऱ्या टुट गयी से मोरो ,अना वोकी झील्ली बी फाट गयी से पर्हा लगावनको भारी पानी आवसेत मी सप्पा फीज जासु।
अवो तू परेशान होऊ नोको मी झुंझुरका उठके तोरो मोऱ्या सुधराय देऊ।

असो सखु बाई अना सखाराम भाऊ को वार्तालाप भयेव अना सकाळी लवकर उठनो से मून वय दुहीझन सोय गया।सकाळी झुंझरका दुहीझन उठ्या अना आपलो आपलो कामला लग गया। सखुबाई उठी अना चुल्हो की राखळ काहाळीस अना चुलो ढीगायके भात को अंधन मंडायीस।रातीच तोर माती को बांगली मा सीजन मंडाई होतीस। वन तोर की भाजी बनाईस। सखाराम भाऊ मोऱ्या को दुरूस्ती को कामला लग गयेव। अना सोचन बसेव मासी इंधारो होये तब खेतमा जाऊ। आता मोऱ्या सुधरावन बसेव पर मोऱ्या की ठटाळी बहुत जुनी भय गयी होती। सखाराम भाऊन बहुत कोशीश करीस वोला जोळजंतर करनकी पर वा कायी सुधरच नही। जसो जोळन जाय तसीच वा टुट जाय। सखाराम भाऊ थक गयेव सुधराय सुधरायकू पर ठटाळी त सप्पा जुनी भय गयी होती।

सखाराम भाऊन सखुला मोठांग बुलाईस,"सखु इतत आव वो, देख वो मोरो डोस्का सळ गयेव तोरो मोऱ्या सुधराय के पर यव भय गयीसे सप्पा जुनो त टुटताच टुटसे,आता का करू"?

सखुन देखीस की मोऱ्या आता कायी सुधर नही। वा कवन बसी "अवो रव्हन देव मी झील्लीच पंघरके पर्हा गाळ लेवू"।
अना लहानांग सयपाक करन चली गयी।पर आपलो मनमा सोचन लगी की, पयले कसो खार भरके भयी की,मोऱ्या,घोळा,दतार,पावळा,कुदर सब चीज घरमा बरोबर सेती का नही येव देखेव जाय।

मोऱ्या ला माऊर को पानालका सीवत होता अना वरत्या झील्ली झाकत होता।आठ दिवस पानीकी झळ रव्ह तरी पर्हा गाळनको भारी ठंडी नही लगत होती। पर आब ताताताेळी सब काम होसेत।आपली पूर्वज की परंपरा आम्ही कसा भूल गया।कसो कलजूग आय गयेव बाबा।आब जबको तब काम कर सेत अना मंग टाईम परा काही धडगतको होय नही।

बोधः जब को तब काम करन त काहीच धडको होय नही। म्हणून हर काम की चार दिवस पयलेच कामला सुरुवात करे पायजे।

# बोधकथा : अजी की पैदल यात्रा

प्रा. डॉं. हरगोविंद चिखलु टेंभरे

---

आज मोला मोरो बी अजी/दादाजी की याद आय गयी, मी बहुत लहान रही राहू दुसरी या तिसरी कक्षा मा गांव को स्कुल मा शिकत होतो मोरा अजी नांव स्व.श्री. महादु धोंडू जी टेंभरे मोला स्कुल मा आपरो संग लिजाय देत होता अजी कव की आमरो गांव को लिल्लहारे गुरूजी अना इंदूबाई बिसेन शिक्षक साजरा शिकावनो मा मास्तर/मास्तरीन सेत, गांव मा सबला सांगत होता की मोरो नाती बी एक दिवस बहुत कागज सिके मोरो अजी ला सायकल चालावता नही आवत होती, अजी फुपाबाई को गांव सोनेगाव आमरो गांव लक करीबन तीस पस्तीस किलोमीटर रहे वाहा पैदल जात होता वोन समय मा येतरा साधन बी नही रया रहेत, अजी जहाँ बी जात होता रस्ता मा अगर गांव की टूरीपोटी जेन गांव मा बी से त अजी व्हा तैयार होय जाय , आपरो गांव की बेटी-बहु को घर जात होता वाह की खबर बातमी, तबियात पानी, हालचाल बिचारत बिचारंत गांव मा वोन टुरी को घर जाय स्यारी, कहान ग्यात बहुबैदी सेती की नहाती ,आवो मामाजी आजी आवो बसो उतलक आवाज आव अरे भाऊ तोरो मोटो अजी महादु बाबाजी आयी से दुय कप चाय मंडावो,मामाजी सकारीच, सकरीच नही बेटी /बहु तुमरो माय घर ग्येव होतो काल सब बाका से काजी माजी माय/बाबूजी गिन की तबियत ठीक से ना....आं.. गये होतो बाटा सोनेगाव अमरायान बाई को गांव क्येव की रस्ता मा तुमरो माय को गांव गोंडमोहाडी भेटेव त लवट ग्येव बेटी सब ठीक से तुमरो अजी की पाय ला लग गयी से जरासो.. अवो माय कस कस जी मामाजी ,भाऊ सांग की लमढिको बाटा आजन की डगाल तोंडात तोडता झाड परलक पाय घसर गयेव जी ..आराम होय जाये चिंता नोको करो बेटी भगवान सब ठिक कर देये ...एखाद दिवस खासर लक भाऊ संग चाली जाजो बेटी मुलाखत होय जाये। आता जसु बेटी काल आवता आवता नवेगाव मा बाई घर जेय लेयव होतो एक दिवस खाजो लिजाय देऊ कसू भाऊ मंग खरी दोरी पेरण की सेत...हो जी मामाजी जसु भाऊ अता राम राम जी। अजी गांव मा कोनी घर मयत भय गयी रहे त अजी ला बुलावा पयले, बावस्या देन/खबर देन साठी अजी जात होता अजी काहे की अजी ला नांव मूपाट याद होता। अजी ला बाडकाम बी आवत होतो एक गण को किस्सा सांगूंसू तब टीव्ही पर शुक्रवार शनिवार दिवस शाम ला ४बजे पासून पिक्चर आवत होती आमी कामत मा जनवर/गाय भसी चरावन जात होता, बावनकर बाबू घर टीव्ही देखत होता संगी साथी वोन दिवस आमला बहुत टाईम भय गयी टीबी देखता देखता अजी ला चिंता भारी मोरो नाती आबवरी घर नही आयी से अजी कामत कामत खेत बाडी ढुढता बानकर बाबू घर आया ना देखीन .....आमरो घर को बाबल्या से का बाटा दुर्गाबाई आहे बाबाजी...अजीन मोला देखीस ना.... अजी को पार गरम भयव ....एक कांडी मारू बाटाला केतरो डाव का जनावर घर आय गया सेती .....तो ला टीबी काम आहे टीबी.....मी भाग परात परात घर आयेव मोर बाबूजींन एक कान पर तड न्यारी मरिस पाचयी बोट गाल पर उतर गया।

आई कसे जान देव आता अजच गयी रहे चल बेटा...घास भर भात खायले इंधारो पड गयी से !
अज बी गांव मा लोक कसेती की महादु महाजन की बात निराली होती,मोरो बाबुजी ला बी उनकी पदवी भेटी.....! असा होता मोरा अजी....अजी तुमरो बेटा अना नाती तुमरो सिखायेव/ देयव मार्ग पर चल स्यारी समाज व गांव परिवार को नाव उंचाई पर लिजावंबींन तुमाला मोरो सादर प्रणाम स्वीकार करो.....!

# वैनगंगा क्षेत्र के क्षत्रिय पँवार (पोवार)

तथ्य संकलन : **सरोज सिंह बिसेन** निवास-मोहगांव (खुर्द), तह किरनापुर,जिला -बालाघाट

मालवा राजपुताना से आये ३६ क्षत्रिय कुलों का संगठन पँवार (पोवार) अपनी वीरता और अपनी उन्नत कृषि कार्यों के लिए जाने जाते है। ये क्षत्रिय मालवा के प्रमार वंश को अपना पूर्वज मानते है और धार पंवारों की कुलदेवी माँ गढ़कालिका को अपनी कुलदेवी मानकर उनकी अराधना करते हैं।

राजा भोजदेव, राजा मुंज, राजा जगदेव पँवार की वीरता, शौर्य और ज्ञान की प्रतिछाया आज भी इन क्षत्रियों में दिखाई देती हैं। मराठा काल में इन क्षत्रियों ने उनके साथ सैन्य भागीदारी की और नगरधन, आम्बागढ़, रामपायली, सानगढ़ी, लांजी आदि किलों से मराठाओं का सहयोग कर कटक और पूर्व के अन्य सैन्य अभियानों के समय कई युद्ध में विजय प्राप्त की।

इन्ही विजय के परिणाम स्वरूप उन्हें पवित्र वैनगंगा नदी के उपजाऊ क्षेत्र प्राप्त हुए जिसमें आज के बालाघाट,गोंदिया,भंडारा और सिवनी ज़िले शामिल हैं। ३६ कुलों में से अधिकांश कुल इन क्षेत्रों में स्थायी रूप से बस गए और कृषि को उन्नत तरीकों से करके इन क्षेत्रों को धन धान्य से परिपूर्ण कर दिया। आज भी ये पोवार भाई अपनी विशिष्ट पोवारी बोली और संस्कृति को सहेजकर आधुनिकता के साथ सामंजस्य कर हर क्षेत्रों में तेजी से विकास कर रहे हैं।

# संस्कृति-:-संस्कार

**मानीकचंद छगनलाल पारधी**, गंगानगर नागपुर.

आमरो समाज एव क्षत्रिय जाती मा प्रमुख वर्ग माआवसे. क्षत्रिय का कार्य आपलो कर्म पर विश्वास,अन्याय पर आवाज उठावनो, सत्य लाईक लढनो, दया, दान, धर्म, पुजापाठ,कुलदेवता ला स्मरण करनो, क्षत्रिय धर्म मा आमरो समाज की संस्कृति की अलग पहचान से आम्ही हर त्योहार, हर कार्यक्रम ,अक्षय तृतीया,श्राद्ध, दशहरा, दिवाली, बिह्या,रिती रिवाज लक कर सेज्ज. पर टाईम को अभाव को कारण बिह्या को नेंग दस्तुर मा कटौती करनो मा आइसे.पर अफसोस की बात से की. आपली संस्कृति लाईक आमरो जवर टाईम नाहाय. पर दुसरो समाज की रिती रिवाज आमरो समाज मा अपनायो जासे. जसो की बिह्या सारखो शुभ कार्य मा मदिरापान करनो. मासांहार करनो छत्रीय धर्म को मार्ग लका भीन्न से.

दुसरी बात आमरी मातृभाषा पोवारी भाषा विलुप्त होय रही से. प्रमुख कारण मातृभाषा को प्रती आत्मसम्मान नहाय असो प्रतीत होसे. एको प्रमुख कारण की समाज मा एकता की कमीसे.आपलोला एकजुट होन की बहुत गरज से तबच एकता बने. एकता बनी रहे त विचार विमर्श होयेत. ना विचार विमर्श होयेत त समाज की उन्नति होये. उन्नति होये त आत्मविश्वास बढे. आत्मविश्वास बढे त रितीरिवाज, नेगं दस्तुर,पोवारी भाषा, मातृभाषा, संस्कृति ,संस्कार,कायम रहेती.तबच पोवार समाज को उत्थान होये. ***

# कथा - बबलीको बिया

**लेखक - गुलाब रमेश बिसेन,** मु. सितेपार , ता. तिरोडा , जि. गोंदिया 441911 मो. नं. 9404235191

राजेगावको सुखदेव बिसन्या च्यार एकरको कास्तकार. घरवाली , एकटुरी अना एक नहान टुरा असो सुखी परीवार. सुखदेव बिसन्याकी घरवाली सगुणा बाई. सगुणा बाईला बितभर रहेवत् हातभर सांगनकी आदत ! कोणतोबी काममा तुळ् पुळ् करनो अना बढाई मारनो वोको स्वभावच होतो. घरवालीक् येन् स्वभावलक बहुतबार सुखदेवला खाल्या मान करनो पळ्. येकंशिवाय वोकंजवर दुसरो ईलाजच नोहतो. सगुणाबाईक् येन् स्वभावलक वूनकी सखीगोई परीचित होती. पर नवो जाग् येकी बढाईखोर बात् सबला सच्चीच लगत. वंज्याग् सगुणाबाईको तोरा देखनलायक रव्.

एकघन गावमाच शिवशंकर भाऊक् घर् बेटिको बियामा सगुणाबाई अहेरक् जेवणला गयी. संगमा बाईकी सखीगोई होती. नविन पाऊनी देख वहान सगुनाबाई पोथी बाचन बसी. "आमर् कुटुंबमा बाई कोणतोबी काजकारण होसेत् अहेरला बसनेवालयीनको अहेर पोताईनमा माव् नयी बाई !" जवर एक पावणी बसीती. वा बोलनला जरा मुजोरच होती. वोन् सगुणाला पोथी बाचन देयीस अना कवन बसी , "सगुणाबाई , तुमी अहेरला आयात ना ? मंग् अहेरत् मंडावता नही दिस्यात. अहेरवाला मांडोमालक उठबी गया. अहेर करनला आयात का सिर्फ भात खानलाच आयात !" भयी सगुणाबाईकी बोलती बंद. "तुमीच अहेर नही करोत् कहानलक भरेत पोता !" सगुणाबाई दबकच गयी. का बोलनको येव वोला सुचेवच नही. सगुणाबाई पाणी पिवनक् मिसलक दुसर् कोनटोमा जायस्यान बसी.

सुखदेव बिसन्या आपल् घरवालीक् येन् बढिईखोर स्वभावलका परेशान भय गयेतो. पर कसाईक् खुटला बांधी सेरी करेबीत् का ? नशिबमा आयेव भोग वोला भोगनोच होतो. आता सुखदेवकी मोठी टुरी बबली बियाला आयीती. बबलीसाती टुराकी खोज रिस्तेदारीमा अना रिस्तेदारीक् बायराबी चालु होती. टुरीन् बारावी सिकस्यान शाळा सोळीतीस. एरोज वूनको एक रिस्तेदार टुराको इतल्ला धरस्यान आयेव. टुरा डिवटीवालो होतो. वोला बी. एससी. टुरी पायजे होती. डिवटीवालो टुरा देख सगुणाबाई बीतभरकी हातभर सांगन बसी.

माहातीन् टुरीला देखीस अना वू शिक्षण बिचारन बसेव , " बेटा , केतरोक कागज सिकिसेस ?" महातीको पूरो नही होयत् सगुणाबाई कवन बसी , " आमरी बबली , आब् बी. एस. सी. सिक रयी से. सामने साल् पुरो होयजाये." सगुणाबाईकी बात आयकस्यान माहाती खुश भयेव. " दुय रोजमा टुराला टुरी देखन पठावूसु." असो कवत वू चली गयेव. माहाती घरलक निकलताच सुखदेव सगुणाबाईपर चिल्लानेव , " अवो अड्री , आपली बबली बारावी सिकीसे. तु वूनला बी. एस. सी. सांगसेस. तोला बी. एस. सी. को मतलब तरी समजसे का ?" " चुपचाप रवो. मोलाबी मालुम से. एकघन बिया भयेव मंजे कोणी नही बिचार् शिक्षण !" सगुणा आपलो हेका पुरावन बसी. सुखदेव बिचारो चुपचापच बसेव.

दुय रोजमा माहाती टुराला धरस्यान टुरी देखन आयेव. टुरी पूर् गावमा एक नंबर देखनी होती. टुरान् टुरीला देखता बरोबर पसंद करीस. मयनाभरमा पायलगनीबी भयी. सगुणाबाई टुरीक् बियाक् तयारीला लगी. सगुणाबाई खुश होती. " देख्यात मोर् अड्रीको दिमाग. भेटेव का नही डिवटीवालो जवाई." सगुणा सुखदेवला कवन बसी. सुखदेव बिचारो चुपचापच ! वोलाबी डिवटीवालो जवाई भेटेकी खुशी होतीच. पर बी. एस.सी. को भेव वोक् मनमा होतोच. सगुणाबाईत् हवामाच उळान बसी. वा जित् उत् जवाईक् पगारपान् बाऱ्यामा अव्वाकी सव्वा फेकन बसी. आता वोको सांगनोच असो काही रव् का पुळकोला खरोच लग्.

बबलीक् येन् बोलनोलक सुखदेव अना सगुणा वोला देखतच रहेव. "बेटी , एकसाल भयेव तुन् शाळा सोळस्यान. आता जमे तोला अभ्यास करनो ?"
" बाबुजी , काहीबी होय जाय पर मी अभ्यास करून अना बी. एस. सी. पुरी करखन देखावून." बबली अलगच निर्धारलक बोलन बसी. वोक् डोरामा सुखदेवला अलगच चमक दिसी.

उनारोक् सुट्टिक् बाद बबलीन् कॉलेजमा जायस्यान कागजपत्रकी पूर्तता करस्यान बी. एस. सी. ला प्रवेश लेयीस. एक सालक् अंतरलक कॉलेजमा जायेलक बबलीला अभ्यासको काहीच नोहतो उमजत. पर वा मेहनत करत होती. नही समजेव भाग प्राध्यापकयीनला अना आपल् सखीनला बिचार होती. रोज दिवसभर कॉलेज अना राती अभ्यास असो वोको दिनक्रम चालु होतो. आपल् बबलीला दुबारा शाळा सिकता देख , आपली भयी गलती सुधारनकी याच साजरी संधी से. असो समजकर वा बबलीला अभ्यासला पूरो समय देन बसी. एखादबार सुखदेवन् बबलीला हाकाबी मारीसत् सगुणाबाईच कव् , " का काम से ? मोला सांगो. बबली आब् अभ्यास कर रहीसे."

देखता देखता बबलीको एक साल पूरो भयेव. बबली दुसर् श्रेणीमा पास भयी. सुखदेव अना सगुणाबाईला श्रेणीदून वोको पास होनोच बहुत होतो. एकरोज बबलीसंग् बिया टुटेव टुरा डिवटीपर जात होतो. वोतरोमा वोन् बबलीला कॉलेजमा जाता देखीस. बबलीला कॉलेजमा जाता देख वोला अचंबाच लगन बसेव. वोन् तुरंत माहातीला फोन लगायस्यान बिचारीस तब् बबली बी. एस. सी. क् दुसर् सालमा सिक रहीसे या खबर वोला मिली. बिया टुटेपासून वूबी कुवारोच होतो. बिया टुटेपर वोन् दुय च्यार टुरी देखुस पर वोला पसंद नही पळी.

एकरोज सुखदेव आंगणमा पळेव मुरूमको डुंगा बगरावत होतो. " सुखदेव भाऊ , रामरामजी." आवाज आयकस्यान सुखदेव रस्ताकन देखन बसेव. वोला पुरानो माहाती घरकनच आवतो दिसेव. " राम रामजी , आवो." माहाती गाळी डहेलमा लगायस्यान सपरीपर आयेव. अना खुर्चीपर बसेव. पावना आया मुहुन बबलीन् पिवनको पाणी आणिस. पाणी देयस्यान बबली अभ्यास करन घरमा गयी. घळीभरमा सगुणाबाई चाय धरस्यान मोठांग् आयी. " भाऊ , बबलीको बिया नही करो का ?" चाय पिवता पिवता माहाती बिचारन बसेव. "आबत् वा बी. एस. सी. कर रहीसेजी." " नही , टुरा डिवटीवालो से." "काहानकोजी ?" सुखदेव बिचारन बसेव. " वू गयेबारको टुरा. वूनकोच मोला फोन आयेतो." माहातीकी बात आयकस्यान सगुणाबाई मनक मनमा बहुत खुश भयी. पर एकबार जीभ जलेव आदमी महीबी फूक फूकस्यान पिवसे. सगुणाबाई चूपचाप खाली कप धरस्यान लायनांग् चली गयी.

"मी का सांगुजी. बबलीलाच बिचारो बाबा वा का कसेत्." असो कवत सुखदेव बबलीला बुलावन बसेव. आपल् बाबुजीको आवाज आयकस्यान वा मोठांग् आयी. बबलीला देख माहाती बिचारन बसेव , " बेटा , बियाको बाऱ्यामा तोरो का बाचार से ?" " काही नही बाबाजी. कॉलेज पूरो होयेपर देखून." " नही , गयेबेरक् टुराको इतल्ला आयीसे मुहुन कयेव." माहातीक् बातलक बबलीलाबी खुशी भयी. वोला वू टुरा पसंदच होतो. पर वोको कॉलेज पूरो करनको निर्धार पक्को होतो. वा कवन बसी , " बाबाजी , मी बियाला तयार सेव. पर मोरी बी. एस. सी. पुरी होतवरी वूनला रूकनो लगे." माहाती समज गयेव.

तीन सालक परीश्रमलक बबलीन् बी. एस. सी. पयल् श्रेणीमा पास भयी. सुखदेव अना सगुणाला बहुत आनंद भयेव. बबली पास होनकी खबर लगता बराबर माहाती धावतच आयेव. वोन् बबलीकी अनुमती लेयस्यान टुरी देखनसाती दुबारा टुराला धरस्यान आयेव. बबलीला टुरा अना टुराला बबली पसंदच होती. आलुपोवा खायस्यान होयेपर बिया पक्को भयेव. बियाकी तारीख निकली. सुखदेव बिसन्यान् धुमधामलक बबलीको बिया करीस. साजरो जवाई मिलेलक सगुणाबाई मनक् मनमा बबलीका आभार मानन बसी. ***

एकरोज फोनपर बोलता बोलता जवाईन् बबलीला बी. एस. सी. क् बाऱ्यामा बिचारीस. बबलीलात् बी. एस. सी. को नाव ना गाव नोहतो मालूम. बारावी सीकी टुरी का सांगे बी. एस. सी. को. तब् जवाईला शंका आयी. वोन् बबलीला खोद खोदस्यान बिचारीस. तब् बबलीला खरो खरो सांगनो पळेव. बबली बारावीच सिकी से येव समजेपर जवाईको पाराच सरकेव. वोन् तुरंत माहातीला फोन लगायस्यान खरी खोटी सुनाईस. माहातीलाबी आयकेपर धक्काच बसेव. वोन् सुखदेव बिसन्याला फोन लगाईस. माहातीको फोन आयेपर सुखदेवबी घबराय गयेव. माहातीलाबी सुखदेवक् दबकत दबकत बोलनोपर शंका आयी.

तातातुळ दुसर् रोज माहाती ,जवाई, बियायी अना दुय रिस्तेदार सुखदेवक् घर् आया. सगुणाबाईबी असा अचानक पावना आया देख अचंबामाच पळी. पावनाईनको चाय पानी होयेपर जवाईन् बबलीला बी. एस. सी. का कागजपत्र मांगिस. आता वा बारावीक् वऱ्या सिकीच नोहती त् काहानलक बी. एस. सी. का कागजपत्र आने. " सुखदेव भाऊ , तुमीन् आमला फसायात. फसावनला आमीच मिल्याता ?" सुखदेव काहीच नही कय सकेव. जवाईन् वाहानच बिया तोळीस अना गुस्सामाच वाहानलक निकल गयेव. असो अचानक बबलीको बिया टुटेलक वोक् पाय खाल्याकी बारूच सरकी. वू डोस्काला हात धरस्यान मुंडाला टेकस्यान बसेव. घरमा बबली मायको गरो धरस्यान रोवन बसी. आपल् टुरीकी असी परिस्थीती देख सगुणाबाई सरमक् मारे काहीच बोलबी नही सकी. आता वोला खुदकीच लाज लगत होती. पर समय निकल गयेतो. शोक करनोशिवाय वोकंजवर काहीच चारा नोहतो.

सगुणाक् बढाईखोर स्वभावलक जुळेव बिया टुटेलक बबली पूरीच टुट गयी. वैवाहिक जीवनका देख्या सपना चकनाचूर भया. बबलीक् टुटे बियाकी चर्चा पुर् रिस्तेदारीमा रंगन बसी. सुखदेवलात् कहीं तोंड देखावनकी जागाच नही रही. सुखदेव ज्याहान जाय वहान वोला बबलीक् टुटे बियाकी आपबितीच सांगनो लग्. काही लोक वोला धीर देत त् काही वोको मजाक उळावत.
" तोर् बायकोला सांग भाऊ अदिक लंबी चौळी बात् हानन !"
" माणूसन् चादर देखस्यानच पाय पसरावन् !"

" बारावी सिके टुरीला कोणी डिवटीवालो मांगे काजी. सिखीपळी टुरीत् घरघर पळीसेत."

लोकयीनका पलासा सुखदेव , सगुणा अना बबलीला रोजक् रोज परेस्यान करत होता.

सगुणा बाईला आपली गलतीका परीणाम आपल् बेटीला भोगनो लग रही से. येव येन् बेरा साजरोच समजमा आय गयेव. एक रोज रातवा जेवनक् बेरा सगुणाबाई आपल् बबलीला कवन बसी , " बेटी , मोर् गलत स्वभावलक अज तोला अना पुर् परिवारला परिणाम भोगनो लग रही से. मी मोरंकारण भयेव येन् गलतीकी माफी मांगुसु." बबली चूपचाप जेवतच होती. वोन् काहीच प्रतिक्रिया नही देयीस.
"अवो , सरप जायेपर ढोसरला मारस्यार का फायदा !"
सुखदेव कवन बसेव. बबली जेवता जेवताच फूटफूटस्यान रोवन बसी.

बबलीको अवतार सुखदेवला देखेव नोहतो जात. कोणतोच मायबापला आपल् टुरीकी खुशीच प्यारी रवसे. पर भयी गलती सुधारणला कोणतीच संधी नोहती. बबलीला रयरयस्यान बी. एस. सी. को बिचार सतावत होतो. काही करे वोकमनमालक वू बिचार जातच नोहतो. एकरोज सकारी सकारी सोयस्यान उठी. तोंड धोयस्यान गॅसपर सबसाती चाय ठेयीस. सुखदेव अना सगुणाबी तोंड धोयस्यान चायकी बाढ देखत सपरीपर बस्या. चायला उकळी आयी. बबलीन् चायमा दूध सोळीस अना चाय गारता गारता वा सुखदेवला कवन बसी , "बाबुजी , मी बी. एस. सी. करून."

# बोधकथा : मास्टर जी की सफलता

बिंदु बिसेन, बालाघाट

एक मास्टर जी होता न उनकी पदस्थापना आदिवासी क्षेत्र को नहान सो गांव मा होती. मास्टर जी सादा स्वभाव का अन मेहनती होता. उनला रामायण, भजन मण्डली मा गावन न समाज मा उठन - बसन को शौक होतो.

उनका तीन बेटा होतीन जब उनको मोठो बेटा पांचवी कक्षा मा गयो तब वरी मास्टर जी न आपरा मण्डली, भजन गावन को शौक करीन. आता गुरुजी ला आपरा बेटा गिन की पढ़ाई की फिकर जादा होन लगी त मास्टर जी न आपरा सब शौक ला भूलाय के तिनही बेटा की पढ़ाई पर ध्यान देंन लगया.

इत गाव मा त पांचवी कक्षा तक च स्कूल होतो,कक्षा छठी लक दूसरो गाव जावनो पड़त होतो. त ब काँहाका गाड़ी - रिक्शा..........
न काँहाकी चप्पल..........
बच्चा गिनला बीगुर चप्पल का च पैदल - पैदल स्कूल जावनो पड़त होतो. न बारिश मा नाला, जंगल,कोई-कोई रोज त जंगली जनावर को भी भय होत होतो.

गांव मा गिल्ली डंडा, कंचा, डीप, छिया छायी जसा जूना खेल को संग क्रिकेट न वॉलीवाल खेलत होता. वोय मोठा होत गईन न पढाई को क्षेत्र मा तरक्की करत गईन. मास्टर जी को सपन होतो की उनका बेटा भी उनको जसा बनहेत. वोनो जमानो मा मोठी नौकरी डॉक्टर, इंजीनियर न मोठो सरकारी अफसर बनन की उनको जवर जास्ती मालूमात नो होती.

समय बीतत गयो न वोय आपरा आपरा पढाई को क्षेत्र मा बढ़त गयीन. दुई बेटा इंजीनियर अना एक बेटा डाक्टरी की पढ़ाई पूरी करिन. वोको बाद वोय आपरी पढ़ाई ला जारी राखिन न प्रतिस्पर्धा परीक्षा देत गईन. आखिरकार आपरी मेहनत न माय बाप अना भगवान को आशीर्वाद nलक मोठो बेटा मोठो इंजीनियर न दूय बेटा भारत सरकार मा मोठा लोक सेवक बनीन. माता पिता को त्याग न व्यवस्थित दिनचर्या लक उनका तिन्ही बेटा आपरा आपरा क्षेत्र मा लगत सफलता अर्जित करीन.
ग्रामीण परिवेश न नवीन संसाधन गिन की कमी कोनी सफलता मा बाधक नहीं होय सिक. बढ़नवाला हर माहोल मा पढ़ लिख कर मोठी मोठी सफलता पाय सिक सेत .
बस जरूरत से मजबूत इच्छाशक्ति की, लगन अना आपरो पर भरोसा राखन की.

# बोधकथा : बुद्धिमान कोन ?

धनराज खुशालजी भगत बाम्हणी /आमगांव 9420517503

---

जब् आम्ही लहान - लहान तब् घर का बुजुर्ग बोधात्मक कहानी (दंतकथा)सांगत होता ना वोको बदला मा उनका पाय दबावनों पड़, ना पाठ खजावनो पडत होतो।

एक गावमा मा एक बनिया रव्हत होतो, वोकि ख्याति दूर दूर वरी फैली होती।

एक दिवस वहाँ को राजा न् गप्पा गोष्टी करन बनिया ला बुलाईस, बहुत डाव वरी ईत् उत् की चर्चा भयी राजा न् बनिया ला कहिस.....

अरे बनिया महाशय तुम्ही त् बहुत हुशार ना मोठा धनीसेठ सेव,येवड़ो मोठो कारोबार से पर तुम्हरो बेटा येतरो मूर्ख काहे से? ओला भी काही सिखाओ?

**ओला त् सोनो -** चांदी मा मूल्यवान वस्तु का से ,येव भी पता नहाय कहेकर राजा जोर- जोर ल् हासन बसेव...

**बनिया -** राजा को कहेंव बुरो लगेव, घर आयकर टुरा पूछन लगेव...

बेटा सोनो ना चांदी मा अधिक मूल्यवान वस्तु कोनसी से?

**बेटा -** सोनो बिना समय गमाये कहिस ।

तोरो उत्तर त् ठीक से मंग राजा न् असो कसो कहिस? ना मोरी मजाक काहे उड़ाईस

बेटा को समझ मा आयेव होतो की राजा गांव को जवळ एक खुलो दरबार लगाव से।

जेकोमा दरबार मा सब प्रतिष्ठित व्यक्ति सामिल होसेत।येव दरबार मोरो गुरुकुल जानको मार्ग पड़त होतो।

मोला देखकर बुलावत होता । आपलो एक हात मा सोनो को ना दूसरों हात मा चांदी को सिक्का ठेयकर, जो अधिक मूल्यवान से वू सिक्का धरन कव्हत होता.....

पर मी चांदी कोच् सिक्का धरत होतो। सबजन मोला ठहाका लगाय लगाय हासत होता,ना मोरी मजा लेत होता। येव प्रकार हर दूय दिवस मा होत होतो।

**बनिया -** मंग तू सोनो को सिक्का काहे नही उठावस,च्यार लोकहिन को सामने आपली फजीती काहे कर् सेस आपलो बरोबर मोरी भी काहे करसेस कसु

**बेटा -**हासत .... हासत.......!!!!

आपलो पिता ला हात धरकर अंदर को कमरा लिजायकर एक पेटी निकालकर देखाइस जेकोमा पेटी मा चांदी को सिक्का इनल् भरी होती।

भरी पेटी देखकर बनिया हतप्रभ भय गयेव।

**बेटा -** जेन् दिवस मी सोनो को उठावू वोन् दिवस येव खेल बंद होय जाये।वोय मोला मूर्ख समझकर मजा लेसेती त् लेन देव ,अगर बुद्धिमानी देखाउ त् काहीच नहीं भेट्न को। बनिया को बेटा आव ,अक्कल लक काम लेसु।मूर्ख होनो अलग बात से ना मूर्ख समजनो अलग .....

स्वर्णिम मौका को फायदा उठावनो पेक्षा हर मौका ला स्वर्णिम ला तब्दील करनो।

जसो समुद्र सब साठी समान से, काही लोक पानी को अंदर टहलकर आव सेत.... काही लोक मछली ढूंढकर धरकर आवसेत ....ना काही लोक मोती चुनकर आवसेत।

बुद्धि पर कभीच शक् करनो गलत से।

**तात्पर्य - बुद्धिमानी दृष्टिकोन पर निर्भर कर् से।** ***

# जन्माष्टमीविषेश

**पोवारी अनुवाद : पालिकचंद बिसने**

---

भागवकार कसे,"बाकिका अवतार परमेश्वरका फक्त अंस होता,पर श्रीकृष्ण मात्र साक्षात परमेश्वरच होतो."
वक् अष्टपैलू चरित्रको करो त समजमा् आयजाये का वला एतरा विशेष नाव् काउन लगावसेत. एकमा् काइच नवल नयि वाटनको.वू जसो अपूर्व संन्यासी होतो तसोच अपूर्व गृहस्थीबि होतो.वकमा् विलक्षण रजोगुणबि होतो अना् विलक्षण त्यागबि होतो.गीताक् अभ्यास बगर वको व्यक्तिमत्त्व आमला नयि समजनको कारन वू खुदक् उपदेशको खुदच मुर्तिमंत उदाहरण होतो.तसो साराच अवतार खुदक् उपदेशका मुर्तिमंत उदाहरण होता.

भगवान श्रीकृष्ण को जिवन गीताको मुर्तिमंत उदाहरण होतो.वको जिवन अनासक्तिको एक महान उदाहरण होतो.वन आपलो राज सोड देइस. वकि वन कबि चिंता नइ करिस.
वक् एक शब्दलका राजा आपला सिंहासन सोडस्यान खाली आवत होता ,वन् भारतक् नेताला राजा बननकि इच्छा नव्हती.वू कृष्ण गोपियसंग खेलनोवालो कृष्ण आखिरवरी साधोच रयेव.बापरे!!
वको जिवनको वू भव्य अध्याय समजणो मोठो कठीण से!अना्
सोतः पुर्ण शुद्ध ,पवित्र होयबगर वू अध्याय समजनको कोनी प्रयत्न नयि करे पायजे.वृन्दावाक लिलामालका नाना रुपकलका् व्यक्त भयोव य उदात्त ना् व्यापक प्रेम होतो.वू प्रेम भक्तिलक् धुंद अना् भक्ती रस आकंठ पिये बगर कोणला समजनो शक्य नाहाय. गोपियकि प्रेमजनित विरहदुखकि उत्कटता कोन समजे?
वको प्रेम म्हणजे प्रेम को चरम आदर्श होतो.वकोमा्कायकिच आस नोहती. वहानि स्वर्गकिबी अभिलाषा नोहती. इहलोककि अना् परलोक किबि कोणती आस नोहती.यन् गोपिप्रेम मालकाच सगुण ईश्वरवाद अना् निर्गुण ईश्वरवाद इनको विवाद दूर करनको रस्ता सापळसे.आमला मालुमसे माणुस ईश्वरक् सगुण रुपदुन अधिक उचो ईश्वरकि धारना नयि कर सक्.अना आमला योवबि मालुम से का ईश्वर जगमा कणकणमा व्याप्त से.
पर आमला कोणतयि साकार वस्तूकि आस हदयमा रवसे.वको आकलन करनसाठी सर्वस्व अर्पण करनसाठी आमला सगुण ईश्वर कि गरज से.या मनुष्य कि सर्वोच्च कल्पना आय.पर तर्कशक्तिला या बात हजम नयि होय.

द्रोपदिन् अरण्यवासमा यवच प्रश्न युधिष्ठिर ला बिचारी होतीस. ईश्वर सगुण से त एतरो नरक, कोनी सुखि कोनी दु:खी काहे सेती? कायसाठी दुनिया बनिइस? यन् प्रश्नोको उत्तर गोपिप्रेममा् भेटसे.
कान्होला कोणतोच विशेषण आवडत नोहतो. वू सृष्टि को कर्ता से यव जाणनकिबि वला जरुरत नोहती. वू अनंत प्रेममाच रत होतो.गोपिंसाठी वू गोपालच होतो. मोला धन नोको, लोक्यको परिवार नोको,विद्वत्ता नोको,स्वर्गहि नोको.मोला बारबार जनम लेनो पडे तरी चले पर प्रभु तमरसाठी मनमा उत्कट भक्ती वाटे पायजे.
प्रेमसाठी प्रेम,कर्तव्यसाठी कर्तव्य, कर्मासाठी कर्म.असो तत्वज्ञान श्रेष्ठ अवतार श्रीकृष्णक् तोंडमालक् भारत भूमीपर पयलीबारच आयकनला भेटेव.
श्रीकृष्ण को यव अवतार प्रेमकी शिकवन देनसाठी होतो.वक् प्रेममा्
गुरू ,शिष्य, उपदेश, शास्त्र सारा एक भया सेती.ईश्वर,स्वर्ग, भय यक सबला विसर पड जासे.फक्त रवसे प्रेमको उन्माद. सबजन कृष्ण मय होय जासेती,कृष्णक् रंगमा रंग जासेती."

आमीबि कृष्णक् आब् रंग जाबिन

मूल विचार----स्वमी विवेकानंद

# पालतू पशु

✍ रणदीप कंठीलाल बिसने निवासी शिक्षक भोसला सैनिकी स्कुल नागपूर

सृष्टी मां अनेक प्रकार का जीवजंतू रव्हसेत्,उनमां सूक्ष्मजीव,अळी,पक्षी,जंगली प्राणी,अना पालतू प्राणी इ.को संचार जगत मां रव्हसे.

काही प्राणी पशु मनुष्य कं सहवासलका मानसाळ जासेती असा पशु मनुष्य संगं रव्हसेती.उनको पालनपोषण करेपरा आर्थिक लाभ भी होसे असा जो भी पशु सेत् उनला "पालतू पशु" कयेव् जासे.

पालतू पशु मां कृषकला सबदून महत्वपूर्ण साबित होसे वु म्हणजे गाय.गाय दूध,गोबर अना गोमुत्र देसे.गाय मां परमेश्वर को निवास रव्हसे.गाय संगाच बैल बी फायदेमंद रव्हसे.बैल ला नंदी म्हनजेच भगवान शिवजी को वाहन कहेव् जासे.खेतीबाडी मां बैलदून दुसरो पर्याय नही रव्हं.
बकरी येव् पशु बी किसान ला आर्थिक हातभार लगावन् साटी मदत करसे.कुत्रा,बिल्ली,ससा,बंदर इत्यादी पशु बी पालतू पशु मुहून पालन करेव् जासे.

सृष्टी का हरेक प्राणी पशु आपलो अलग अलग पहचानलका वरकसेती.जसी गाय पूजनिय मानेव जासे.कारण का गाय को दूध,शेण अना गोमुत्र औषधीयुक्त सेती.दूध मां सुवर्ण रव्हसे कसेत्.तं गोमुत्र मां कैंसर की पेशी मारन की क्षमता रव्हसे.शेण मां गुणकारी जीव रव्हसेती जो जमीनला सुपीक बनावसेती अना पीक उत्पन्न बढावसेती.
पालतू पशु मां सुमार कुत्रा प्रामाणिक रखवालदार रव्हसे.येन् कुत्रासरीखो प्रामाणिक कोनी नही रव्ह.जंगल क् बाजु क् गावमां का लोक कुत्रा ला आपलो घर को सदस्य समजसेत्.

पालतू पशु को प्रमाण आजक् जमानो मां कम् होय् रही से.यंत्रयुग को समय से.येन् युग मां झटपट काम् पाई ट्रैक्टर बढ रह्या सेती.मुहून बैल कम भया.
पर दुध को व्यवसाय गाव मां आब् जोरपर् से.मुहून गाय को अना भैस को महत्त्व बढ गई से.

पालतु पशु गावखेडा मां घर का सदस्य रव्हसेती.जेतरी सेवा टुरू संतान करसे किसान वतरीच सेवा  पालतू पशुइनकी करी जासे.बिल्ली को महत्त्व बी वतरोच से.उंदीर, जो घरमां क् अनाज की नासाडी करसे वला स्वर्ग दिखावन् को अमूल्य कार्य बिल्ली करसे.

सब् ईश्वर की संतान से भाई
पालतू रहे या जंगल मां कोई

सब् प्राणी पक्षी जीव सेती उनको संवर्धन अना संरक्षण आमी करे पायजे.पालतू पशु क् संगमां जंगली पशु की बी रखवाली होये पायजे.वनवसी क्षेत्र मां का लोक हरीण ला बी घर मां पालसेत्.हाथीला संग मां जगावसेत.
हेमलकसा मां डॉ.प्रकाश आमटे इननं तं बाघ,बिबट्या सरिखो पशु ला बी घरमं ठेवसेत्.अना ललनपालन करसेत्.

***

# मेहनत को फल

✍ रणदीप कंठीलाल बिसने निवासी शिक्षक भोसला सैनिकी स्कुल नागपूर

---

अडकुटोला नाव को एक नहानसो गाव होतो. वंज्या नामदेव आपलो परिवार संग रवत् होतो. नामदेव कं संसारबेलीपरा रघु अना रमा असा दुई सुंदर फुल फुल्या होता.नामदेव की घरवाली नामदेव कं संगं खांदाला खांदा लगायस्यार् साथ देत होती. पयलोको मायजन थाट नामदेवक् आंग मां होतो. पर् कर्जलका बेजार भय गयेव होतो.गाव मा कं भजनपूजन मां नामदेव की ढोलक ढुढूनटंढूडून बजत रव्हत होती.बेभान होयस्यर् वु जसो डग्गा पर थाप देत होतो तसोच बेताली जीवनबी जगत होतो.येकोच कारन् मायजनकी फक्त नावलाच लगी रही.खेतमां जानको पन् गडीमाणुस संगंच.एकटो कबं गयेवच नही.रोजी तं देनोच पडे ना..पर नामदेव मायजन् ला काही खाज लगत् नोहोती. इतन रघु बी उमरमां आयेव्.रघुकं आंगमां बाप की कलाकारी डिकटो आयी होती.शाळा मां बी रघु नाटक गाना असा सांस्कृतिक कारेक्रम मां हिस्सा लेत होतो.वनं आपलं कलाकारी लका परिसर मां बाक्को नाव कमाईस. गाव कं बुजुर्गईनला बी वकी नाटक मां की कलाकारी भावन् लगी.रघु नं आपलो विनम्र स्वभावलका बी सबको मन बी जिकी होतीस. रघु कं बाबुजीला सप्पा येव् मालुम होतो. पर् नामदेव कं अक्कलला काही चेव नोहोतो मुहून का कातं नामदेव आपला टुराटुरी कं भविष्य कं बार्या मां बेफिकिर होतो.

रमा हात पिवरो होन क् उमर मां आयी पर नामदेव जवर् फुटकी कवडी जमा नोहोती.पर् वको मायजनकी थाट मां बदल नोहोतो.रमा देखनला बाक्की होती.एक बाक्को रिस्ता आयेव्.पटील खानदान कोच टुरा होतो.सबला टुरी पसंत आयी.उनकं करलका पक्की भयी.इननं बी हो कय देईन. आब् आफत नामदेव परा असी आयी का भारीच.बिया कसो करबीन...? धडीपर बसेव बसेव एक कल्पना वला आयी अना बड्डापरकी बचीकुची दुई एकर मां की एक एकर बिकनकी वनं मन मां ठानीस. गावमां कं जनु पटल्याको टुरो आबं आबंच पोलीस भयेव होतो.जनु पटल्याकटं आपलो मन की बात सांगीस.जनु नं बी आपलो होकार सांगीस.पर बिया कं बाद मां रजिस्टरी करबीन पर पैसा पयलेच पायजे मुहून सांगीस.सौदा भयेव. पर भनक कोनीला नही लगन् देईन. बिया भयेव्.रमा ससुराल चली गयी.रघु आपलो बाबुजी कं आज्ञा को पालनहार होतो. बिया कं बाद मां नामदेव अना वकी घरवाली कं बिच मां काहीतरी कारनलका खडाजंगी यी.बोलता बोलता जमीन बेचनको विषय आयेव्.पयलेच सनकी नामदेव वको मां घरवाली को फुत्कारी शब्द..! ताण ताण मां नामदेव नं वावरकन को रस्ता धरीस.वको मन मां मायजनकी,पयलो को थाटबाट,रघु को भविष्य अना खाली हात,एक एकर बचीकुची खेती....टेन्सन येतरो बढेव का नामदेव नं गणा पटील कं रस्तो परकी बिहीर मां डुबकी मारीस.तडफड तडफड भयेव् अना मर गयेव्.कोनला तरी आवाज आयेव्.एकजन नं सांगीस का घडिभरकं पयले नामदेव वुतन् जात होतो.गर आनीन् नं मुरदोला बाहेर काडीन् तं वु नामदेवच होतो. इतन रघु कालेजलका आयेव.पुरो गाव नामदेव की मईतकी खबर फईल गई ! रघु अना रघु की माय दुख कं सागर मां डुब गया.रमा बी आपलो घरवालो संगं मयतमां आया. सतीगती भयी.आबं रघुकं सामने माय अना वको भविष्य तोंड फाडकन् उभो होतो.लोक अना रिस्तेदार तं घडीभरसाटी सहानुभूती दिखायेपरा चला गया पर रघु कं कोवरो खांदापर परिवार की जिम्मेदारी आयी.

रघु ला गाव कं बुजरूगइननं रस्ता दिखावनो चालु करीस.रघु कं आंग मां की कलाला उत्तेजन भेटनो चालु भयेव्.रघु भजन मधूर सूर मां गात होतो.एकजन नं सांगीस रघु तु दंड्यर मां काम कर.गायन कर.तोला खूब भाव भेटे.रघु मयफील मां जान लगेव.

रघु को व्यक्तिमत्त्व गुणोइनको भंडार होतो.वन् किरानो की दुकान उघडीस.वको प्रेमळ ना विनम्र स्वभाव को कारन् चलन् लगी.बिया भयेव्.टुरी बी गुणीच भेटी.टुरी सिलाईकाम मां माहीर होती.संसार को बिगडेव गाडा रस्तोपर आवनो लगेव.देखता देखता रघु नं धान भुसारा बी चालु करीस.रघुला मुनाफा भेटन लगेव.असो करता करता रघु नं आपली जमीन बी बढाईस.संगमां टुरुपोटुइनला सिकावनो बी लगेव.बाप नं गमाईस वु मायजनकी रघु नं वापस कमाईस पर बाप सरीखी भोगीस नहीं.

*सीख*- मेहनत थांबी का बुरो दिवस सुरू होसेती.मुहून केतरी बी संपत्ती रहे मेहनत नही सोडे पायजे.

***

# धरोहर

प्रस्तुती : यादोराव चिंधुलाल चौधरी, न्यू गजानन कॉलनी, गोंदिया

**मळणी यंत्र (बेलन)-**किसान धान चुरनसाठी काममा आनत होतो. दुय बैललं आपली चुरनी करत होता.दावनला सय बैल लगत होता .यन बेलनको चुरनो सोईस्कर होतो.दावन्या चलके थकत  होतो.पर बेलनपर बसके मोळा मुरावत होतो.आता मशिन को जमानो आयोव हे यंत्र कालबाह्य भय गया.

**छाटी खाचर_(रेंगी)** - गाव जानसाठी उपयुक्त असो साधन होतो.चार मानुसकी सवारी ना घोड़ागाड़ी मुहुन प्रसिद्ध होती.चक्काला रबरको धाव लगायश्यानी जोरलं जानसाठी उपयोग करत होता.
आता हे साधन लुप्त होय रह्या सेती.
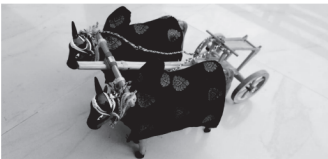
**छेकड़ा-** बैलक शंकरपटमा उपयुक्त साधन मुहुन काम आवसे.आता शंकरपट पर बंदी आय पासुन हे छेकडा कमी दिससेती.लहान गो-हा शिकावनसाठी उपयोगमा आवसे. दुय माणुस क स्वारी साठी उपयुक्त से.

**रेहका-**आवागमनको साधन म्हणून उपयोगी होतो.बिह्याक बरातमा नवदेव नवरी यनचं गुडुर पर बसत होता.समय बदलेव ना हे पारंपारीक साधन लुप्त भया.यलाच झुल पळदाकी खासर कवत होता.

***

● **श्री राहांगडाले धनपाल दौलत-** जन्म-१९२२, येरली, जिला-भंडारा, शिक्षा मराठी प्राथमिक, इन्हे सन १९४२ मे पाठशाला पर. राष्ट्रीय ध्वज फहराया, सबब: ६ माह क सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई।

● **श्रीमती राहांगडाले पारबती बाई जानबाजी-** जन्म -१९१३,जन्मस्थान -साकडी, जिला-भंडारा, इन्हें जंगल सत्याग्रह तथा १९42 के भारत छोड़ो आंदोलन मे भाग हिस्सा लेने की वजह से ६ माह सश्रम कारावास की सजा हुयी

● **श्री राहांगडाले भोलाजी दसरुजी-** जन्म-१९२२, जन्मगाव-येरली, जिला-भंडारा, शिक्षा-प्रौढ साक्षर, सन १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन मे भाग लेने की वजह से ७ माह की सश्रम कारावास की सजा हुयी .

● **श्री राहांगडाले सुकाजी बुधाजी-** जन्म-१९१३, जन्मगाव-येरली, जिला-भंडारा, शिक्षा-प्रौढ़ शिक्षा. इन्होंने सन १९३२ के जंगल सत्याग्रह तथा सन १९४१ के कांग्रेस वयक्तिक सत्याग्रह तथा १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन मे भाग लेने के कारण ६ माह का सश्रम कारावास की सजा हुई।

हमारे समाज मे जो स्वातंत्र्यता संग्राम सेनानी हूए वे संपुर्ण पोवार/पंवार समाज के लिए स्वाभिमान और गौरव स्वरुप है।

संदर्भ :- पंवार दर्पण

(पंवार संदेश अंक 2 वर्ष 1985 मे प्रकाशित)

- सौ. मालतीबाई धारपुरे

## पोवार प्रतिभायें , समाज गौरव

**कु. सृष्टि सुरेंद्र पारधी, सिहोरा**

कु. सृष्टि पारधी, सिहोरा निवासी श्री. सुरेंद्र एवं छाया पारधी इनकी सुपुत्री हैं। 2019 में ली गई NEET परीक्षा में उन्होंने 99.76 परसेंटाइल हासिल कर 720 में से 624 अंक प्राप्त किए। उनकी ऑल इंडिया रैंक 3469 और स्टेट ओबीसी रैंक 22 थी। उन्होंने कक्षा दसवीं में CBSC बोर्ड की परीक्षा में 94.6%अंक प्राप्त किए थे। कक्षा बारहवीं में स्टेट बोर्ड की परीक्षा में 87% प्राप्त किए थे। वे अभी शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय नागपुर में MBBS की छात्रा है।

कु. सृष्टी सुरेंद्र पारधी अपने शैक्षणिक जिवन में अन्य आयोजित परीक्षाओं में भाग लेकर भी प्राविन्यता प्राप्त किया है।

**उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामानाएं।**

***

# !! पोवार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी !!

प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

• **श्री कटरे पृथ्वीराज दशरथ-** जन्म १९१९, जन्मगांव खडकी (डोंगरगांव), ता. तिरोडा जिला भंडारा, (वर्तमान गोंदिया जिला) शिक्षा मराठी प्राथमिक। इन्होने १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन मे ध्वज वंदना तथा प्रभातफेरी निकालकर जनजागृती की, फलस्वरुप उन्हे ६ माह का कारावास हूआ।

• **श्री चौधरी हरिचंद सेगोजी-** जन्मगांव शिहोरा,तह. तुमसर, जिला भंडारा,शिक्षा ७वी. सन १९३० मे राष्ट्रीय आंदोलन मे भाग लिया. राष्ट्रगीत गाकर तथा कांग्रेस की घोषनाए करते हूए जनजागृती की। १९३०-३१ मे विदेशी कपडो की होली एवंम् जॉर्ज पंचम की फोटो जलाने के लिए उन्हें कारावास की सजा हुयी.

• **श्री ठाकरे जगपाल धानु-** जन्मगांव येरली तह+जिला भंडारा। सन १९३० मे जंगल सत्याग्रह मे भाग लिया और सन १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन मे पाठशाला पर राष्ट्रिय ध्वज फहराया. उन्होंने प्रभातफेरी निकालकर राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया, जिस बाबत उन्हे ४ माह का सश्रम कारावास हूआ।

• **श्री पटले धोंडुजी नंदाजी-** जन्म १९१० जन्मगांव, येरली, तह. तुमसर, जिला भंडारा. सन १९४१ के सत्याग्रह मे भाग लेने के कारण उन्हें १९ दिन की सजा हूई थी, सन १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन मे पाठशाला पर राष्ट्रीय ध्वज लगाने के कारण उन्हें ६ माह की सश्रम कारावास शिक्षा हूई।

• **श्री पारधी शामराव बाबाजी-** जन्म १९२१, जन्मगाव - गोंदिया, जिला भंडारा शिक्षा -मॅट्रिक. सन १९४२ मे विद्यार्थियों का जुलुस पोलिस स्टेशन ले जाने के कारण वे नजरकैद किए गए।

• **श्री पारधी सुकोबाजी विठोबाजी-** जन्मगाव-येरली, जिला- भंडारा, शिक्षा-प्रौढ साक्षर। सन १९३० मे जंगल सत्याग्रह मे भाग लिया एवं १९४२ के भारत छोडो आंदोलन मे सम्मिलित होने के कारण ९ माह की सजा हूई।

• **श्री बिसेन दशरथ भागरथ-** जन्म -१९०४, जन्मगाव-बडेगांव, तह.-तिरोडा,जिला-भंडारा, शिक्षा-प्राथमिक। १९४२ में भारत छोड़ोआंदोलन मे हिस्सा लेने की वजह से नागपुर जैल मे ७ माह की सजा हूई।

• **श्री राहांगडाले जयपाल तुलसीरामजी-** जन्म १९०४, जन्मगांव येरली, जिला भंडारा शिक्षा प्रौढ साक्षर। इन्हे १९४० के जंगल सत्याग्रह तथा १९४२ के सत्याग्रह तथा सन १९४१ के वयक्तिक सत्याग्रह भाग लेने कारन कारावास हूआ।

• **श्री राहांगडाले जानबाजी धोंडबाजी-** जन्म १९०९, येरली जिला भंडारा, सन १९४१ -४२ मे वयक्तिक सत्याग्रह करने की कारण नजरकैद व १९४२ के सत्याग्रह मे सहभाग लेने की वजह से १ वर्ष सश्रम कारावास।

# पोवार प्रतिभायें , समाज गौरव

**कु. पूर्वी महेंद्रकुमार पटले , नागपुर**

कु. पूर्वी पटले , नागपुर निवासी श्री महेंद्रकुमार व सीमा पटले इनकी सुपुत्री है । इन्होंने हाल ही में JEE mains B Planning की परीक्षा दी जिसमे उन्होंने 99.935 परसेंटाइल प्राप्त कर ऑल इंडिया 6वी रँक प्राप्त की है ।

उन्होंने कक्षा दसवीं में CBSE बोर्ड की परीक्षा में 95.2 % मार्क प्राप्त किये थे । उन्होंने संस्कृत विषय मे 100 में से 100 मार्क लेकर CBSE बोर्ड से विशेष सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट भी प्राप्त किया । उन्होंने कक्षा बारहवीं में स्टेट बोर्ड की परीक्षा में 83 % प्राप्त किये ।

कु .पूर्वी पटले अपने शैक्षणिक सफर में अन्य आयोजित परीक्षाओं में भाग लेकर प्रावीण्यता प्राप्त करते आयी है । उन्होंने निम्नलिखित सफलताये प्राप्त की है ---

- उन्होंने सन 2015 में इंटरनेशनल बेंच मार्क (IBT )टेस्ट में आन्तर राष्ट्रीय स्तर पर 92.1 परसेंटाइल प्राप्त कर सर्टिफिकेट ऑफ डिस्टिंक्शन प्राप्त किया ।
- उन्होंने सन 2016 में हावर्ड मॉडल यूनाइटेड नेशन्स के अंतर्गत भारत के हैदराबाद में हुए कांफ्रेंस में भाग लिया।
- उन्होंने सन 2015 में इंडियन इंटरनेशनल मॉडल यूनाइटेड नेशन्स के अंतर्गत भारत के भीलवाड़ा में हुए कांफ्रेंस में भाग लिया।
- उन्होंने सेन्टर फ़ॉर टैलेंट सर्च एंड एक्सीलेंस पुणे द्वारा आयोजित महाराष्ट्र प्रज्ञाशोध परीक्षा में मेधावी प्रदर्शन के लिए प्रावीण्यता सर्टिफिकेट प्राप्त की ।
- उन्होंने महाराष्ट्र राज्य परीक्षा परिषद द्वारा आयोजित माध्यमिक शाला शिष्यवृति परीक्षा में 16 वा स्थान प्राप्त किया था ।
- उन्होंने इतिहास शिक्षक महामंडल महाराष्ट्र द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय इतिहास प्रज्ञाशोध परीक्षा में दो बार इतिहास बाल प्रज्ञावन्त का प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया ।
- उन्होंने महाराष्ट्र राज्य परीक्षा परिषद द्वारा आयोजित पूर्व माध्यमिक शाला शिष्यवृति परीक्षा में 20 वा स्थान प्राप्त किया था ।
- उन्होंने abacus vision द्वारा आयोजित wisdom mathematics परीक्षा में सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट प्राप्त किया ।
- उन्होंने 49वी नेशनल मैथमेटिक्स टैलेंट कांटेस्ट 2017 में भाग लेकर जूनियर लेवल पार कर लिया था।
- उन्होंने संस्कृत भाषा प्रचारिणी सभा नागपुरम द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा में प्रावीण्यता प्राप्त की ।
- रमन साइंस सेन्टर नागपुर द्वारा आयोजित साइंस क्विज कांटेस्ट में उन्होंने तीसरा स्थान प्राप्त किया था ।
- उन्होंने मुम्बई साइंस टीचर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित डॉक्टर होमी भाभा बाल वैज्ञानिक कॉम्पिटिशन भी पास की ।
- उन्होंने इंटरनॅशनल मैथमेटिक्स ओलिंपियाड में भाग लिया व उसमे इंटरनेशनल रैंक 524 व 1571 प्राप्त किया ।
- उन्होंने नेशनल साइंस ओलिंपियाड में भाग लेकर इंटरनॅशनल 997 वी रैंक प्राप्त की ।

और इनके अलावा अन्य करीब 16 शालेय विभिन्न पारितोषक प्रमाणपत्र प्राप्त किये ।
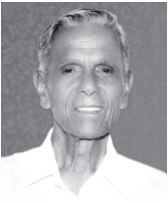
# !! वैज्ञानिक मानिकलाल पटेल !!
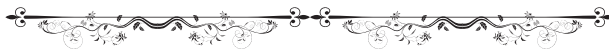
प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

श्री मानिकलाल पटेल (पिताजी - टेकचंद पटेल) :
आपका जन्म सन १९४० में ग्राम सोनेगाव, तह. कटंगी, जिला बालाघाट में एक मालगुजार कृषक परिवार में हूआ था। आपकी प्राथमिक शिक्षा ग्राम खैरलांजी, कटंगी (मामाजी के घर) से कक्षा चौथी तक हूयी। ५वी से १२वी तक की शिक्षा आपके काकाजी के सानिध्य मे मल्टिपरपज गव्हरमेंट स्कुल दुर्ग से हूयी। बाद में आपने सिव्हिल इंजिनिअरिंग में डिप्लोमा, किरोडीमल गव्हरमेंट पॉलिटेक्निक रायगढ से किया। रविशंकर युनिव्हर्सिटी रायपुर से आपने वर्ष १९६७ मे B.E., metallurgical engineering प्रथम श्रेणी से किया.

वर्ष १९६७ से १९७२ तक आपने REC(NIT) राउरकेला, ओड़िसा में कनिष्ठ व्याखाता के रुप मे कार्य किया। वर्ष १९७२ से १९७८ तक आप कॉलेज ऑफ मिल्ट्री इंजीनिरिंग, पुणे में सिनियर साइंटिफिक ऑफिसर (grade 2nd, class 1st gazzeted) के पद पर सेवा दे चुके हैं . वर्ष १९७८ से १९८३ तक आप defence metallurgical research laboratory, kanchanbagh, hyderabad में senior scientific officer (grade 2nd) पद पर सेवा दे चुके हैं. वर्ष १९८३ में आपने पुणे युनिव्हर्सिटी से metallurgical engineering मे M.E. किया.

डिफेंस मेटलर्जिकल रिसर्च लॅब (DMRL, DRDO) कंचनबाग, हैदराबाद मेँ आप वर्ष १९८३ से २००० तक अनेक पदों पर देश के लिए सेवा दे चुके हैं. आप वर्ष २००० में director-II/scientist 'F' के पद से सेवानिवृत्त हूये हैं . आप DRDO के अनेक मिशन में भारत के पुर्व राष्ट्पति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के साथ कार्य कर चुके हैं, जैसे वर्ष १९८३ से १९८९ तक "नाग मिसाईल प्रोजेक्ट" के लिए सहयोग करना आदि.

१९९३ - १९९६ तक आपने TIFAC + NFTDC + DRML के संयुक्त प्रोजेक्ट प्रोग्राम में division head magnets & leader के पद पर कार्य किया है।

*TIFAC (Technology information forecasting & assessment council) under deptt of science & technology gov. Of india
*NFTDC (Nonferrous material technology development center hyderabad)
*DRML (Defence metallurgical research laboratory hyderabad)

आपने कोललंपुर (मलेशिया), हनोई (वियतनाम), सिंगापुर में इंडो एशियन को-ऑपरेशन सायंस & टेक्नोलॉजी में वर्ष १९९६ से २००० co- ordinator in advance materiel में भारत का प्रतिनिधित्व किया था साथ ही अन्य अनुसंधान संस्थाओं से संवाद एवं संयुक्त रुप से अनुसंधान भी कर चुके हैं जिनमें निम्नलिखित रिसर्च सेंटर शामिल हैं.

१) bhabha atomic research center mumbai
२) indian space research organization trivendram
३) osmania university hyderabad
४) DEAL deharadun

५) BHEL bangalore
६) meter factory jaipur
७) satya sai pretisthan putta parthy
७) TIFAC delhi
८) NFTDC hyderabad
९) ARC hyderabad
आप वर्ष १९९३ से २००० तक मॅग्नेटिक सोसायटी ऑफ इंडिया के सेक्रेटरी रह चुके हैं. यहां रहते हुए आपने विभिन्न जगह, विभिन्न मॅग्नेटिक मटेरियल्स पर seminars आयोजित कर चुके हैं । उपरोक्त सेमिनार
* भोपाल: in collabration with RRL bhopal in 1993
* हैदराबाद: at DMRL 1989
* जयपुर : in collaboration with MREC (NIT) jaipur 1997
* पुणे : jointly with institute of engineer & MSI 1996

आपने DRDO में सेवा देते हूये विभिन्न मिशन, प्रोजेक्ट, और अनुसंधान किये हैं. आप पावरफुल Rare Earth मॅग्नेट का आविष्कार करने वाले भारत के प्रथम व्यक्ति है वही जापान, अमेरिका के बाद विश्व मे आप तृतीय है जिन्होने पावरफुल मॅग्नेट पर अविष्कार कर उसकी विधि विकसित की है। वर्ष २००० मे आप सेवानिवृत्त हूये और बाद मे आपकों मल्टिनॅशनल कंपनियो के साथ काम करने के लिए अनेक अवसर आये लेकिन आपने अपने पैकृत गांव आकर खेती करने का फैसला लिया। सेवानिवृत्त होने के पहले आपको डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुडी माहिती संकलन की जिम्मेदारी मिली। आपने वह जिम्मेदारी पुर्ण कर आप अपने पैकृत गांव सोनेगाव आकर खेती करना प्रांरभ किया. आप खेती के साथ पशुपालन भी करते हैं और इस कार्य मे आपकी धर्मपत्नी का भी विशेष सहयोग आपको मिलता है। आप हमेशा कहते है की "वृक्ष कितना भी बडा क्यु न हो जाये उसे जड़ो के साथ ही रहना चाहिए तभी उसका अस्तित्व टिका रहता है।" राष्ट्रीय सेवा क्षेत्र में आपको अनेक बार सन्मानित किया गया है लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा की वजह से वह जानकारी आप किसी से साझा नही कर सकते। आपका जीवन आदर्शों और प्रेरणाओं से भरा पडा है, बस हमे आपके आदर्शों को समाज तक पहूंचाने की जरुरत है। आप समाज की प्रेरणा हैं और संपुर्ण समाज को आप पर गर्व है। हम आपके दिर्घायु एवं अच्छे स्स्वास्थ्य की कामना करते है।

# रायबहादुर श्री टुंडीलाल पंवार

**प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया**

लगभग ५. ६ फिट उंचा छरहरा कद सांवला रंग, चौडा माथा, नुकिली उंची नाक, सिना ताने चुस्त तथा सौम्य प्रभावशाली व्यक्तित्व था स्व. श्री टुंडीलाल साहाब का। आपका जन्म १ जुलाई १८७७ को ग्राम दोंदीवाडा, जिल सिवनी मे हूआ था तथा जीवन की अत्यंत्य उंचाई प्राप्त करने के बाद आपकी मृत्यु १५ जनवरी १९६० को बालाघाट मे हूयी।

आपके पिताजी श्री ओखाजी पटेल, साधारण कृषक थे। आपकी प्रारंभिक शिक्षा ग्राम दोंदीवाडा मे हूयी। मिशन हायस्कुल, शिवनी से मॅट्रिक की परीक्षा मे आप प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए. तद्पश्च्यात रॉबर्टसन कॉलेज, जबलपुर से इंटरमिजिएट में प्रथम श्रेणी के साथ संस्थान में उनका द्वितीय स्थान रहा। उनकी प्रथम आने की चाहत थी और हिस्लाप कॉलेज, नागपुर से बी. ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर ही संतोष किया । बी. ए. मे उनके विषय अंग्रेजी, गणित, भौतिकशास्त्र और संस्कृत थे।

कला स्नातक होने के बावजुद कृषि विभाग की शासकीय सेवा मे आप नागपुर में फार्म सुप्रिटेंडेंट के पद पर नियुक्त हूये। कुछ दिन तेंदला दुर्ग मे केनाल कलेक्टर भी रहे। वे पुन: कृषी विभाग मे आये एवं पदोन्नती पाते हूये सन १९३० मे "डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रिकल्चर छत्तीसगढ़ डिविजन, मप्र. के पद पर सेवामुक्त हूये। आपने लगभग ३० वर्षो तक शासकीय सेवा की तथा मृत्युपर्यंत आप पेन्सन पाते रहे। आपको वर्ष १९२६ मे ब्रिटिश शासन द्वारा "रायबहादुर" की सन्माननीय उपाधी से सम्मानित किया गया। आपको रायबहादुर की उपाधी क्यु मिली? इसका प्रमुख कारण आपकी शासन के प्रति तथा अपने देश के प्रति इमानदारी पूर्वक कार्य किया. आपका उत्कृष्ठ चरित्र अनेक आदर्शों से भरा पड़ा है। आप अपने विद्यार्थी जीवन में अपने हाथों से ५ रोटियां बनाते, ३ रोटियां दोपहर को एवं २ रोटियां रात को खाते थे। आप चाय और दुध नही लेते थे।

मितव्यक्तिता और धन का समुचित उपयोग आपके आदर्श थे । आप अपने चौथाई वेतन से परिवार का खर्चा चलाते थे। शेष वेतन बैंक खाते मे जमा करते थे। आप दोंदीवाडा के साधारण कृषक परिवार में जन्में थे और बाद मे स्वंय की कमाई से कई संपत्तियाँ अर्जित की। आपने ग्राम खैरलांजी, टेकाडी, तथा देबठाना की मालगुजारी खरिदी। बालाघाट मे बंगले खरिदे एवं बनवाये। आपने आधी पेन्सन सरकार को बेच दी और ग्राम टेकाडी खरिदा। शेष आधी पेन्सन आजीवन लेते रहे। आपका कहना था की "सही चीज का सही उपयोग करो" आप कठोर अनुशासन प्रिय इमानदार प्रशासक थे। आपके उत्कृष्ठ शौक पढना, घुमना, बागवानी, कृषि एवं शिकार थे। आपको चाय, तंबाखु, सिगारेट, का कोई व्यसन नही था। दोपहर को आप कभी सोते नही थे। यद्यपी आप आधा घंटा आराम जरूर कर लेते थे। आप मृत्युपर्यंत काम मे लगे रहे। आप अक्सर कहते थे "जितना काम करोगे उतना अधिक जिओगे"

उन दिनो रायबहादुर के समकक्ष व्यक्तियो के प्रमाण पत्र पर अनेको का भाग्योदय होता था। रायबहादुर टूंडिलाल इतने कडे थे की अपात्र को कभी प्रमाणपत्र नही देते थे। चाहे वह उनका निकट संबंधी क्यु न हो...

ऐसे कुशाग्र बुद्धी, कुशल प्रशासक, इमानदार, सादगीपुर्ण, मितव्ययी, नियमबद्ध कठोर चरित्रवान व्यक्ती ने समाज और राष्ट्र को अपनी बहूमुल्य सेवाये अर्पित की।

आपके काकाजी लखाराम पंवार से उन्हे शिक्षा की प्रेरणा मिली। लखाराम पंवार पटवारी थे और बाद मे रिव्येन्यु इन्सपेक्टर बने। वे पंवार समाज के प्रथम शासकिय सेवक थे। तथा उनके भतिजे टूंडिलाल पंवार प्रथम स्नातक थे। श्री यदूराजसिंह तुरकर एंव रामकुमार तुरकर आपके पुत्र है।

**संदर्भ :** भोज पत्र, स्मरण ग्रंथ १९८६. संपादक स्व. श्री पन्नालाल बिसेन

***

# श्री नामदेवजी पारधी

प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

अथक परिश्रम अना संघर्ष सफलता की चाबी से, वर्तमान मा आमरो पोवार समाज मा असा आदर्श प्रेरणास्त्रोत सेती जिनन् ग्रामिण क्षेत्र मा जन्म लेयस्यानी असुविधा वालो क्षेत्र मा भी अथक परिश्रम लका समाज तथा पैकृत गाव मा एक आदर्श स्थापित करी सेन असा आमरा विनम्र इन्सुलेशन, दाहेज का मालिक श्री नामदेव अनंतरामजी पारधी इनको जन्म एक कृषक सामान्य परिवार मा ८ अगस्त १९७८ मा गाव कवलेवाडा तह. तिरोडा जिला गोंदिया मा भयोव। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाव को सरकारी माध्यमिक शाळा मा लका भयी, १० वी को बाद मा शिक्षन की सुविधा गाव मा नही रहेव्ह लका उनन् १२ कीमी दुर केसलेवाडा लका आपली पायाभुत शिक्षा ग्रहण करीन। वय प्रती दिवस शिक्षा साती १२ कीमी सायकल लका आवनो जावनो करत होता। वन घडी मा घर की आर्थिक परिस्थिती नाजुक होती, वय घर को मोठो बेटा होता म्हणुन उन परा घर की भी जिम्मेदारी होती। १२ वी पर्यंत शिक्षा ग्रहण करस्यानी घर की आर्थिक परिस्थितीला ध्यान मा ठेयस्यानी कर्नाटक राज्य मा कामगार म्हणुन नौकरी करन चली गया, वन बेरा उनकी उमर १६ साल होती। कर्नाटक मा ३ महिना काम करस्यानी वय गाव वापिस आया अना आपलो जिवन की पहली कमाई उनन् आपलो माता पिता को चरन मा अर्पित कर देईन।

वर्ष १९९७ मा महाराष्ट्र को रायगढ जिला को रेवदंडा औद्योगिक क्षेत्र मा खंडेलवाल इंश्युलेशन कंपनी प्रा. लिमिटेड मा स्टोर कीपर की नौकरी उनला भेटी, उनकी उम्र कोमल होती म्हवुन वय फक्त स्टोर को काम संभालत होता। वर्ष १९९८ पासुन उनन् २००३ पर्यंत उनन् वनच कंपनी मा काम करिन बाद मा उनकी पोस्टिंग सुपरवाईजर यन पद पर भयी। यन कालावधी मा उनन् तिरोडा को सि. जे. पटेल कॉलेज मा लका बि. ए. भी पुर्ण करीन। वर्ष २००३ खंडेलवाल इन्सुलेशन कंपनी ला गुजरात को दहेज औद्योगिक क्षेत्र की मोठी कंपनी "बिरला कॉपर लिमिटेड" मा कंत्राट भेटेव, यन कंपनी साईट पर कंपनी द्वारा नामदेवजी पारधी इनको प्रमोशन भयोव अना उनला बिरला कॉपर साईट को साईट इंचार्ज बनायेव गयोव। तब पासुन तिरोडा, गोरेगाव, तुमसर, गोंदिया, बालाघाट क्षेत्र का हजारो पोवार समाज को लोकईन ला उनन् आपको कार्यक्षेत्र मा रोजगार देवाईन; विषेश बात या की वन् हजारो कामगारईन मा बहूसंख्य ग्रामिन गरिब पोवार होता। काही कालावधी वय कामगार वहान अकुशल कामगार पासुन कुशल कामगार बनस्यानी अरब देशईन मा नौकरी करन जात होता जेको लका कामगार वर्ग ला मोठी तनख्वा भेट। वर्ष २००३ पासुन २०१० पर्यंत उनको कार्यक्षेत्र मा काम करनेवाला गोंदिया, भंडारा, बालाघाट जिला का कामगारईन की संख्या दस हजार पेक्षा जास्त से। वहान लका लगभग ७ हजार लोक अरब देश मा नौकरी कर चुक्या सेती अना आब भी वय अरब देशईन मा नौकरी कर रह्या सेती। विदेश जायस्यानी कमावन को मार्ग तिरोडा क्षेत्र ला पंचमभाऊ बिसेन इनन् देखाईन तथा वोला बढावा नामदेवजी पारधी इनन् देईन। वर्ष २०११ मा श्री नामदेवजी पारधी इनन् खंडेलवाल इंन्सुलेशन कंपनी प्रा. लिमिटेड ला आपलो राजिनामा सौपिन अना उनन् "विनम्र इन्सुलेशन" कंपनी की स्थापना करीन। सुरवात मा उनला अनेक कठिनाई को सामना करनो पडेव तरिपन उनन् मंग नही देखीन, रात ला दिन करस्यानी उनन् विनम्र इन्सुलेशन ला उभारिन। यन वर्ष विनम्र इंश्युलेशन ९ वर्ष की भय गयी वर्तमान स्थिती मा वहान सेकडो कामगार काम कर सह्या सेती जहान बहूसंख्य ग्रामिन पोवारजनच् सेती। तसोच उनको ऑफिस स्टाफ की संख्या २५ से जहान लका २२ पोवार सेती। दुनिया मा विनम्र इंश्युलेशन दहेज ता. वागरा जिला भरुच गुजरात, या एकमात्र कंपनी से जहान का कामगारईन की प्रतिदिन उपयोग की भाषा पोवारीच् से। तसोच उनको स्टाफ मा मुख्य भाषा हिंदी अना गुजराती उपयोग होसे लेकिन आमरी मायबोली पोवारी भाषा को उपयोग वहान हर दिन होयेच् यव निश्चित से। विनम्र इंश्युलेशन का मालिक श्री नामदेवजी पारधी आपलो स्टाफ ला जब प्रेरित कर सेती त पोवारी भाषा माच् बोल सेती। उनको असो माननो से की मातृभाषा मा संवाद करेव लका आपलोपन को अहसास होसे अना कर्मचारी तथा कामगार ला भी काम करनो मा रुची पैदा होसे। अना दुसरो फायदा यव की जेला गुजराती सिखनो से वोला पयले पोवारी आवनो जरुरी से। जेला पोवारी भाषा आवसे वय लवकरच गुजराती भाषा सिख जासेती असो नामदेवजी पारधी इनको माननो से। विनम्र इन्सुलेशन मा काम करने वाला काही बंगाली तथा बिहार का कामगार भी पोवारईन संग रह्यस्यानी पोवारी सिख गया सेती अना वय समय समय पर पोवारी मा संवाद भी कर सेती। तसोच नामदेवजी पारधी को परिवार मा सब पोवारी मा संवाद कर सेती। उनको १० वर्ष को बेटा विवेक इंग्लिश मिडियम स्कुल मा सिख से तरी भी वू घर मा मायबोली पोवारी माच् संवाद कर से। विनम्र इन्सुलेशन आता दहेज औद्योगिक क्षेत्र की इंश्युलेशन क्षेत्र मा अग्रणी कंपनी बनन जाय रही से। १५ मल्टिनॅशनल कंपनिईनमा बतौर कॉन्ट्रॅक्टर काम कर रही से। कंपनी को सफलता को श्रेय नामदेवजी पारधी आपलो कर्मचारीईनला देत आया सेती, उनको माननो से जेन कंपनी मा बहूसंख्य पोवार काम कर सेती वा कंपनी दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करसे।

नामदेवजी पारधी सादगी अना स्वाभीमान लका जिवन व्यतित करत आया सेती, उनको पोवार समाज को प्रती बहूत लगाव से। तसोच दहेज गाव जेकी जनसंख्या १५००० से वहान उनकी प्रतिष्ठा, मान, सन्मान बहूत ज्यादा से। वय पाच भाषाईन मा निपुन सेती। (पोवारी, मराठी, हिंदी, गुजराती, इंग्लिश) एक सामान्य परिवार मा जन्म लेयस्यानी श्री नामदेवजी पारधी न समाज मा एक आदर्श उदाहरण स्थापित करी सेन्। उनको संघर्षमय जिवन पोवार समाज को युवाईन साती च् नही त् समस्त युवाईन साती प्रेरणा से।

***

# वैज्ञानिक डॉ. योगी पारधी

प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

हमारा ग्रामीण समाज प्रतिभाओ का धनी है, ग्रामीण युवाओं को सही मार्गदर्शन एवं दिशा मिले तो वह आसमान छू लेते है। यह लेख उस व्यक्ति का जीवन परिचय है जिसने ग्रामीण क्षेत्र एवं क्षत्रिय पोवार समाज को प्रतिष्ठा एवं सम्मान दिलाया है। गोंदिया जिले के तिरोडा तहसील के ग्राम ठानेगाव के उन्नत कृषक परिवार में श्री उरकुडाजी पारधी के घर १ अगस्त १९८० को श्री योगी पारधी जी का जन्म हूआ। ४ भाई बहनो मे योगीजी मंझले भाई हैं. उनके परिवार का प्रमुख व्यवसाय खेती एंव पशुपालन था इसलिए योगीजी को बचपन से ही कृषि कार्यो में रुचि एवं उनका सहयोग रहा। वे शनिवार एवं रविवार की छुट्टियों में घर की गाय चराने हेतू खेतों में ले जाया करते थे तथा बारिश के दिनों में खेती मे सहयोग भी करते थे।

श्री योगी पारधी जी की प्राथमिक शिक्षा, छत्रपती दुबे प्राथमिक शाला तिरोडा से प्रारंभ हूई एवं बाद मे उन्होने ५वी कक्षा से शहिद मिश्रा हायस्कुल तिरोडा से १०वी तक अपनी शिक्षा पुर्ण की। वें ठानेगाव से तिरोडा तक १६ किलोमीटर प्रतिदिन राज्य परिवहन की बस और सायकल से आना-जाना किया करते थे। ११वी और १२वी की पढाई के लिए उन्होने समर्थ ज्युनियर सायंस कॉलेज लाखनी से शिक्षा प्रारंभ की एवं स्कूली शिक्षा पुर्ण होने के बाद उन्होनें वर्ष २००२ में रामटेक के कवि कुलगुरु इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी & सायंस कॉलेज से BE मैकेनिकल इंजिनियरिंग से पुर्ण किया। उन्होने IIT रुडकी (उत्तराखंड) से वर्ष २००५ में Industrial Metallurgy से M. Tech किया। अपने Masters पाठ्यक्रम के दौरान उन्हे जर्मनी के Technical University of Munich से एक वर्ष की अवधी के लिए DAAD (German Academic Exchange Service) स्कॉलरशिप से सन्मानित किया गया था। वर्ष २०१० मे ब्रिटेन के University of Birmingham से उन्होने Metallurgy & Materials Science से PhD किया। उनके डॉक्टरेट शोध के दौरान Universities UK द्वारा प्रतिष्ठित ORSAS फेलोशिप से सन्मानित किया गया था. वर्ष २०१३ में वे ख्यातीप्राप्त Rolls Royce कंपनी से जुड गये और Advance Manufacturing Engineer के पद पर कंपनी के लिए अपनी सेवा देने लगे। वर्ष २०१४ में उन्हें प्रमोशन मिला और उनकी पदस्थापना Principal Manufacturing Engineer के पद पर हुयी. वर्ष २०१६ में उनकी पदोन्नति Staff Manufacturing Engineer पद पर हुयी. उन्हे वर्ष २०१९ मे rolls Royce द्वारा दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ Sir Henrry Royce award for Technology and Innovation in Manufacturing सन्मान से सन्मानित किया गया| यह सन्मान उन्हें 3D Printing अथवा Additive Manufacturing के क्षेत्र मे अत्युत्तम योगदान के लिए दिया गया। डॉ. योगी पारधी "Metallurgy- Advances in Materials and Procesess" किताब के संपादक है। उनके वर्तमान आविष्कार उपरोक्त प्रकार पेटेंट उनके नाम पर दर्ज है।

• manufacturing method & post- processing treatment. US2018221955A1; EP3357605A
• Heat treatment after ALM of gamma- strengthened nickel based supperalloy component. US2018361478A1; EP 3415253A
• Crack reduction for additive layer manufacturing. US2019366438A1; EP 3575018A1
• Method of manufacture US2019255617A1; EP3530759A2; EP3530759A3; GB2571280A
• Method of manufacturing a component. GB2570723A; US2019240783A1
• Heat treatment method. US2018361475A1; EP3403748A1
• Nickel base superalloy and use thereof. US2018073106A1; EP3293276A1; EP3293276B. उनके तीन आविष्करों के पेटेंट अभी दर्ज होना बाकी है. फिलहाल उनका प्रकाशन के लिए पंजियन हेतू भेजे गये है। अप्रैल २०१९ मे उन्होने Rolls Royce से त्यागपत्र देकर दिया और विश्व ख्यातीप्राप्त Sulzer कंपनी मे Global Lead-Additive Manufacturing के पद पर पदस्थ हुए. वर्तमान में वे Sulzer कम्पनी में कार्यरत हैं.

डॉ. योगी पारधी, कृषक परिवार से हैं लेकिन ऐसे पिता के पुत्र है जिन्होंने कृषी क्षेत्र में आधुनिक परिवर्तनों को स्वीकार की और जैविक खेती प्रांरभ की जिसके लिए उन्हे राज्यपाल द्वारा 1982 मे पुरस्कार प्रदान किया गया. साथ ही उन्होंने विचारक्रांति परिवर्तन के लिए गायत्री शक्तिपीठ की स्थापना आचार्य श्रीराम शर्मा के आदर्शों को प्राप्त करने हेतु की। उन्होंने जनमानस में अच्छे

संस्कारो को प्रस्थापित करने हेतु अविरत व बहुमूल्य योगदान दिया साथ ही आदर्श सामूहिक एवं कम खर्चे वाली वैदिक विवाह पध्दति को प्रचारित भी किया। श्री योगी पारधी भी गायत्री परिवार के सदस्य है और विदेश में रहकर भी भारतीय संस्कारो का पालन करते है व ध्यान, यज्ञ आदि नियमित रूप से करते हैं . उनके पिता श्री उरकुडाजी पारधी जी के द्वारा अपने बाड़े में ही गायत्री मंदिर का निर्माण कर परिसर में पवित्र वातावरण का निर्माण कर लिया है। उस पवित्र वातावरण के संस्कार एवं कठिन अनुशासन में ही श्री योगीजी की परवरिश हुई है। और उन्होंने भी एक आदर्श पुत्र के अपने उत्तरदायित्व पूर्ण किये है।

# डॉ. शिल्पक अंबुले, पोवार समाज मे प्रथम IFS Officer

**प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया**

---

डॉ. शिल्पक अंबूले : आपका पैतृक गांव चुल्हाड तह. तुमसर जिला भंडारा है। आपका जन्म १३/०७/१९७७ को पुणे में हूआ था। आपके पिताजी स्व. श्री नामदेवजी अंबूले, अभियंता पदस्थापना पुणे में होने की वजह से आपका बचपन पुणे में बीता।

आपकी प्राथमिक शिक्षा अभिनव विद्यालय, पुणे तथा माध्यमिक शिक्षा फरग्युशन कॉलेज, पुणे से हूयी। आपने B. J. Medical collage से MBBS की शिक्षा ली। आपने MBBS के पहले वर्ष की परीक्षा में विश्वविद्यालय में तीसरा स्थान अर्जित किया। MBBS द्वितीय वर्ष में आपने विश्वविद्यालय से द्वितीय स्थान अर्जित किया। फॉर्म्याकॉलॉजी एवं मायक्रोबॉयोलॉजी में आपने महाविद्यालय मे प्रथम स्थान प्राप्त किया था। आप तीसरे वर्ष भी MBBS कोर्स की परिक्षा मे प्रथम आये थे। नेशनल टॅलेंट सर्च परिक्षा मे आप संपुर्ण महाराष्ट्र से १०वे स्थान पर थे। वही आप १२वी की विज्ञान परिक्षा मे संपुर्ण महाराष्ट्र मे ८वे क्रमांक तथा विज्ञान शाखा मे ४थे क्रमांक पर थे।

आंतरमहाविद्यालय राज्यस्तर पर एड्स क्विज स्पर्धा मे आप वर्ष १९९९ मे महाराष्ट्र से द्वितीय स्थान पर थे। आपने MBBS की शिक्षा ग्रहण करने के बाद MD के लिए प्रवेश लिया।

इसी दौरान आपको UPSC की परिक्षा देने की रुची पैदा हूयी। आपने UPSC की परिक्षा की तैयारी के लिए कोई कोचिंग इंस्टिट्युट मे दाखिला नही लिया। आपने UPSC की पुर्ण तैयारी घर से ही की। वर्ष २००२ की UPSC की परिक्षा में पहली ही कोशिस मे यश संपादित कर महाराष्ट्र से पहले रैंक तथा भारत मे २३वी रैंक रही है। आपका चयन IFS(Indian Foreign Service) में हूआ। वर्तमान मे आप विदेशमंत्री श्री एस. जयशंकर के सचिव है।

आप माता पिता के एकलौते पुत्र होने से आपके यश संपादन से माता पिता का सपना पुरा हो गया। आपके पिता इंजिनिअर तथा माता डॉक्टर थी. आपके उत्कृष्ठ यश संपादन से पुणे तथा महाराष्ट्र के अखबारो मे वर्ष २००२ मे आपने अनेक इंटरव्ह्यु दिये है। आप पोवार समाज के ही नही तो अपितू महाराष्ट्र के भी गौरव है। आपका अनेक जगह पर सत्कार भी हूआ लेकिन आपके जीवन का सबसे अनमोल सत्कार आपके पैतृक गाव चुल्हाड मे तत्कालीन सरपंच के द्वारा हूआ जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को विशेष प्रेरणा प्राप्त हुयी. आप हमारे समाज के युवाओ के लिए प्रेरणा है, अवश्य ही आपका उत्कृष्ठ यश संपादन समाज के लिए गौरव स्वरुप है।

# डॉ विशाल बिसेन – एक व्यक्तिमत्व

प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

डॉ. विशाल बिसेन एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की डिग्री प्रबंधन विज्ञान से ली है। उनके पास 25 साल से अधिक का पेशेवर अनुभव है।वह श्री जियालाल लाखनलाल बिसेन (देवसर्रा, तुमसर, जिला- भंडारा) के सुपुत्र हैं। उनके जीवनसाथी का नाम सपना बिसेन, जो श्री गजानन प्रथ्वीराज कटरे (तिरखेड़ी) की सुपुत्री है। उनका वर्तमान मुकाम सी.बी.डी. बेलापुर, नई मुंबई है । डॉ. विशाल बिसेन ने अपनी शिक्षा (भंडारा, गडचिरोली, औरंगाबाद) नागपुर एवं औरंगाबाद विद्यापीठ  से पूर्ण की । श्री विशाल बिसेन जी ने 2 वर्ष तक विभिन्न कंपनियों के लिए काम किया है। उन्होंने 2006 में सरकारी नौकरी छोड़ दी और वरिष्ठ प्रबंधन स्तर पर निजी कंपनी में शामिल हो गए। मुंबई में एक लॉजिस्टिक कंपनी के सीईओ / निर्देशक के रूपमें सफलतापूर्वक सेवा देने के बाद, उन्होंने 2014 में अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया। उन्होंने पूरे भारत में 1000 से अधिक परिवारों के लिए रोजगार उपलब्द्ध कराया है। वर्तमान में वह सामवेदा ग्रुप और लैंडमार्क सी.एफ.एस प्राइवेट लिमिटेड के मालिक / संस्थापक और प्रबंध निर्देशक हैं। "सामवेदा ग्रुप" संपूर्ण लोजिस्टिक सेवाओं, सीएफएस / आईसीडी / डिपो प्रबंधन और कंटेनर मरम्मत की सुविधा, अकादमी,  प्रशिक्षण और विकास (प्रस्तावित) "एक्जिम, लोजिस्टिक और सप्लाई चेन प्रबंधन" के क्षेत्र में लगी हुई है और न्वाव्हाशेवा( जेएनपीटी), मुंद्रा, हजीरा, पीपावाव, विषाखापट्टनम पोर्ट में शाखाएं हैं और सीबीडी बेलापुर, नवी मुंबई में प्रधान कार्यालय है ।

लैंडमार्क सी.एफ.एस प्राइवेट लिमिटेड जून,2017 से  मुंदरा- कच्छ, गुजरात में "कंटेनर फ्रेट स्टेशन" है।  उन्हें भारत के उत्कृष्ट व्यावसायिक उपलब्धि और प्रेरणादायक सामाजिक योगदान के लिए "उत्कृष्टता पुरस्कार – 2019 (Man of Excellence Award) " दिनांक 14 जून, 2019 को भारत अंतराष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन नई दिल्ली में सम्मानित किया गया । उन्हें गुजरात स्टार अवार्ड के द्वारा दिसम्बर - 2018 में "डायनेमिक लॉजिस्टिक्स प्रोफेशनल ऑफ द ईयर – 2018 अवार्ड, गुजरात जंक्शन द्वारा मार्च- 2018 में "डायनामिक शिपिंग एवं लॉजिस्टिक्स प्रोफेशनल ऑफ द ईयर - 2017 अवार्ड", "इंडिया 5000" बेस्ट एमएसएमई अवार्ड्स "2017 में क्वालीटी एवं कस्टमर सैटिस्फैक्शन में उत्कृष्टता के लिए" सम्मानित किया गया है. रामोजी फिल्म सिटी, हैदराबाद में 25 सितंबर, 2016 को लॉजिस्टिक्स एवं सप्लाई चेन सेक्टर में पेशेवर उत्कृष्टता के लिए अंतराष्ट्रीय  स्तर का "इंडीवुड मैरीटाइम एक्सीलेंस अवार्ड" से भी सम्मानित किया गया है। ।
हाल ही में उन्होंने “पोवारी इतिहास साहित्य अना उत्कर्ष" समुह के माध्यम से समाजोत्थान कार्यक्रम के तहत समाज के अग्रणी तथा सफल व्यक्तियों का आनलाइन चर्चा, कार्यक्रम की शुरुआत की है। वह व्यापार और समाज के विकास में विभिन्न सामाजिक,शैक्षणिक और प्रेरक गतिविधियों में बहुत सक्रिय है और इसलिए वह व्यापार मंडलों, रोटरी क्लब, रेडक्रॉस और गैर सरकारी संगठनों के साथ जुडे हुऐ है।

वर्तमान में उन्होंने “सामवेदा एकेडमी” की स्थापना की है। वह अपना अनुभव तथा रसद प्रबंधन (Logistics Management) में विशेषज्ञ ज्ञान को अपने समाज के युवाओं को मार्गदर्शन के तौर पर देना चाहते हैं । वह “जी.एच. रायसोनी  विश्वविद्यालय, नागपुर के द्वारा शुरू किए गए बीबीए शाखा के अंतर्गत रसद प्रबंधन(Logistics Management) पाठ्यक्रम और आईटीएम – खारगर नई मुंबई के प्रबंधक पाठ्यक्रमों को आकार देने के लिए नियुक्त की गई समिति में सलाहकार के लिए अपनी सेवा दे रहे हैं । वह 2013 में रोटरी क्लब ऑफ मुंद्रा के "अध्यक्ष" थे और 2009 से 2014 तक मुंद्रा के सीएफएस एसोसिएशन के वे "अध्यक्ष" रह चुके है। उन्होंने लॉजिस्टिक्स एवं सप्लाई चेन मैनेजमेंट पर मॉडरेटर, पैनलिस्ट, स्पीकर और गुजरात/ मुंबई में विभिन्न पुरस्कार कार्यों में जूरी सदस्य के रूप में भी अपनी भूमिका निभाई है। उन्होंने दो आंतराष्ट्रीय सम्मेलनों में लोजिस्टिक ऐवं सप्लाई चेन मेनेजमेन्ट के विषय पर अपने लेख भी प्रस्तुत किये है।
वह 1994 से 2000 तक भारतीय पोवार संघ - भंडारा के युवा विंग "पोवार युवा मंच" के "अध्यक्ष" रह चुके है ।
वह अपने सफलता का श्रेय अपनी जीवनसाथी सपना कटरे बिसेन, माता - पिता, परिवार एवं शुभचितंकको देते है।

***

# सांसद केशोराव पारधी

प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

पोवार(पंवार) वंश के गौरव स्व. श्री केशोरावजी अनतरामजी पारधी का जन्म २१ अगस्त १९२९ को तुमसर शहर मे सामान्य कृषक परिवार मे हूआ था । आपकी शिक्षा तुमसर मे ४थी कक्षा तक हूयी। आपके माता पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर होने से आप आगे की पढाई नही कर पाये। आप कृषि कार्य में माता पिता को बचपन मे मदत किया करते थे। बाद मे आपने तुमसर के बडे व्यापारी, श्री सेठ रायबहादुर दुर्गाप्रसाद सराफ के यहां नौकरी चालू की। आपकी ईमानदारी एंव कर्तव्यनिष्ठा देख आप उनके विश्वासपात्र बन गये। दुर्गाप्रसादजी आपको अपने बेटे जैसा मानते थे। आपकी ईमानदारी एंव कर्तव्यनिष्ठा देख कर आपको वर्ष १९५९ मे दुर्गादासजी ने नगरपरिषद तुमसर का पार्षद का चुनाव लढवाया। आपको उस चुनाव मे भारी मतों से सफलता प्राप्त हूयी। पांच वर्ष का कार्यकाल खत्म होने के बाद १९६४ मे फिर से नगरपरिषद तुमसर का चुनाव आप भारी मतों से जिते एवं आप पहली बार नगरपरिषद तुमसर के नगराध्यक्ष बने। आप १९६४ से १९७२ तक नगराध्यक्ष पद पर रहे। इस कार्यकाल मे आपने वैनगंगा पेयजल योजना से तुमसर को समृद्ध किया। इस बीच आपने शिक्षा क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य किये. आपने सड़के एवं अन्य विकासकार्य को गती प्रदान की.

आप अल्पायु से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से संबधित रहे थे। आपको वर्ष १९६७ मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से महाराष्ट्र विधानसभा तुमसर विधानसभा से उतारा गया एवं आपने इस चुनाव मे भारी मतो से जितकर विपक्ष की जमानत जप्त कर दी थी। आप १९७२ मे फिर से तुमसर विधानसभा से भारी मतो से विजयी हूये। १९६७ से १९७७ तक आप महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य रहे इस बिच आपने महत्वकांक्षी "बावनथडी सिंचाई योजना" को स्विकृती दिलाकर एक लाख एकड़ सिंचाई वाले इस योजना से क्षेत्र मे हरितक्रांति लायी। वही आपने इस काल मे अनेक कार्य विकासकार्य किये जिसका वर्णन बहूत लंबा है।

१९७७-७८ मे जनता पार्टी के शासनकाल मे प्रियदर्शनी इंदिरा गांधी को गिरफ्तार किया गया। उस समय देश मे अशांती की लहर फैल गयी थी। गिरफ्तारी के विरुद्ध हूये जनांदोलन का नगर नेतृत्व कर आपने स्वत: को गिरफ्तार करवा लिया था। आपकी पार्टी के प्रती निष्ठा देख आपको वर्ष १९८० के लोकसभा चुनाव मे भंडारा लोकसभा क्षेत्र से भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेस ने उम्मीदवारी दी एंव आप भारी मतों से चुनकर सांसद पहूंचे। आप महाराष्ट्र पोवार समाज से पहले व्यक्ती थे जो संसद पहूंचे थे।

आप सांसद बनते ही छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस, को तुमसर, तिरोडा, आमगाव मे स्टॉपेज् दिलवाया। वही आपने वरठी (भंडारा) ओव्हरब्रिज बनवाकर यातायात सुलभ बनाया। आपका रेल्वे क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य गोंदिया जबलपुर रेलमार्ग को बडी लाईन मे तब्दिल करना रहा। आपके कार्यकाल मे यह कार्य बालाघाट तक ही हो सका। आपने इस कार्यकाल मे चिखला मे तांत्रिक महाविद्यालय तथा भंडारा मे टेक्निकल स्कुल की स्थापना करायी। गोंदिया का दुरदर्शन केंद्र एंवम इंजिनियरिंग कॉलेज आपके प्रयासो की ही देन है।

आप वर्ष १९८४ मे पुन: भंडारा लोकसभा से चुनाव जितकर संसद पहूंचे एवं आपने इस कार्यकाल मे शिक्षा के साथ बेरोजगारी दुर करने हेतू सदैव प्रयत्नशिल रहे है। क्षेत्र मे कृषी उद्योग जल के अभाव मे लोगो को आर्थिक राहत नही दे पाता था। शिक्षित बेरोजगारो की बढती संख्या देख आपने उद्योगो को अपने क्षेत्र लाने के लिए भरपुर प्रयास किये। आपके प्रयासो से युनिव्हर्सल फेरो अलाईज् खंबाटा तुमसर, सनफ्लॅग, ऐलोरा पेपर मिल, वैनगंगा सहकारी शक्कर मिल जैसे बडे उद्योग क्षेत्र मे ले आये।

आपने शिक्षा क्षेत्र पर भी विशेष ध्यान दिया है, आप सुदामा एज्युकेशन सोसाइटी तुमसर अध्यक्ष थे। एंव सहकार क्षेत्र मे भी आप BDCC बँक के अध्यक्ष रहे है। धार्मिक क्षेत्र मे आप हनुमान मंदिर ट्रस्ट चांदपुर के १९७० से फाउंडर ट्रस्टी रहे।

श्री केशोरावजी पारधी आप मृदुभाषी एवं मिलनसार व्यक्ती थे। आपसे परिचित लोग बताते है जो आपके पास रोता हूआ आता था वह हसता हूआ वापिस जाता था। आप जिले समस्या सुलझाने मे हमेशा अग्रस्थान पर रहते थे। आपका नम्र व्यक्तित्व तथा निष्ठा ने आपको जनता के हृदयो पर राज करते थे। आप वर्ष १९५९ से १९८९ तक निरंतर ३० वर्षो तक राजनिती मे सफलता प्राप्त करते रहे। आप १ बार नगरपरिषद तुमसर के सदस्य, २ बार नगराध्यक्ष, २ बार विधायक, एंव २ बार सांसद रहे है। आप वर्ष १९८९ मे जिवन का पहला चुनाव श्री खुशालचंद्रजी बोपचे से अल्प मतो से हार गये। उसके बाद आपको भारतीय राष्ट्रिय कांग्रेस ने विधानपरिषद की उमेद्वारी दी लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नही हो सकी। इसके बाद आप सामाजिक संस्थाओ से जुड कर एंव व्यक्तिगत रुप से समाजसेवा मे लग गये। दि. २९/०७/२०१८ को हृदयघात से आपका ८९ की उम्र मे स्वर्गवास हूआ। आप पोवारों को उन्नत जीवन देने वाली वैनगंगा नदी को प्राणदायिनी मानते थे इसलिए आपकी अंतिम इच्छा के अनुसार आपका अंतिम संस्कार मां वैनगंगा के किनारे माडगी मे कोष्ठी घाट मे किया गया। आपका अपनी मात्रभुमी से प्रेम ने आपको हमेशा के लिए क्षेत्र के इतिहास मे अमर कर दिया। निश्चित ही स्व. श्री केशोराव जी पारधी क्षत्रिय
पोवार(पंवार) समाज के लिए के सदैव ही प्रेरणाश्रोत बने रहेंगें.

# डॉ. निलाक्षी पटेल

- Sumit Patle IOFS, Ministry Of Defence

---

डॉक्टर नीलाक्षी पटेल, सुपुत्री डॉक्टर नरेंद्र हरिनखेडे बालाघाट, की शिक्षा दीक्षा लोधीखेड़ा तथा मुलताई के साधारण से सरकारी विद्यालय से हुई तथा इसके पश्चात इन्होंने एमबीबीएस गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज जबलपुर से सन 1998 में किया|
आप समाज की ऐसी डॉक्टर है जिन्होंने भारत से एमबीबीएस की शिक्षा प्राप्त की। श्री अतुल पटेल से शादी के पश्चात भारत से अमेरिका जाकर आप समाज की United States Medical Licensing Examination (USMLE, जो कि हर भारतीय डॉक्टर का सपना होता है) की परीक्षा क्लियर करने वाली पहिली महिला स्टूडेंट बनी। उसके बाद आपने (Univesity of Massachusetts) USA से एम डी मेडिसिन की डिग्री प्राप्त की व सुपर स्पेशलाइजेशन Rhematology में किया। आप वर्तमान में Stanford Health Care, Campbell, California में Rheumatologist हैं।

आपका अपने समाज से जुड़ाव हमेशा ही रहा। आप जब भी संभव हो परिवार व समाज के कार्यक्रमों में सपरिवार भाग लेती है। आप समाज के साथ साथ समूची मानव जाति के विकास के लिए उत्सुक रहती है। वहां से भी सभी के स्वास्थ्य एवम् जीवन की चिंता एवम् यथासंभव मार्गदर्शन करती रहती है।
भारत आने पर परिवार के साथ तो रहते ही है परन्तु कुछ दिन निकाल कर सभी से मिलने का प्रयास भी करते है। कितने ही रिश्तेदार उस दौरान उनके skills से लाभान्वित होते है। घर से, अपने देश से इतनी दूर रहकर भी उन्होंने अपनी जड़ों को मजबूत रखा है और वही अपने बच्चों में डालने के अविरत प्रयास करती है।
आपने अपनी उपलब्धियों से सभी महिलाओं और नई पीढ़ी की लड़कियों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

# डॉ. शेखर पटेल

प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

श्री शेखर पटेल : आपका जन्म वर्ष १९७३ मे वैज्ञानिक श्री मानिकलालजी पटेल के घर पुणे में हूआ था. आपके पिताजी वैज्ञानिक श्री मानिकलालजी पटेल, DRDO हैदराबाद मे कार्यरत होने की वजह से आपकी आपकी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा केंद्रीय विद्यालय कंचनबाग, हैदराबाद से हूयी। आपने B. Tech, Dairying, Tirupati, Andhra Pradesh Agricultural University से किया। बाद मे M.Tech, National Dairy Research Institute से किया। Biosystems Engineering में आपने Oklahoma State University, USA से PhD पूरी की। आपने Wharton Business School से Finance & Accounting में और Harvard Business School से Risk Management में प्रमाणपत्र प्राप्त किया है।

आपने वर्ष १९९९ में, L&T Niro में Trainee के रुप मे पहली नौकरी की शुरुवात की। बाद मे आप कई मल्टीनैशनल Pharma, Food, Diagnostics कोंपनियों में काम किया। जैसे PepsiCo के हेडक्वार्टर मे advance research मे R&D director के पद पर काम किया। यहां आपको केमिस्ट्री के नोबेल प्राईज विजेता Arieh Warshel के साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान में आप अमेरिका की USHydrations कंपनी में Senior Vice President and member of board of directors के पद पर कार्यरत हैं. साथ ही आप USHydrations company की sister company Ayvo Hydrations से भी जुड़े हैं . आप यहां CEO के पद पर भी कार्य कर रहें हैं।

आप अमेरिका मे रहकर सामाजिक एवं अंतराष्ट्रीय संस्थाओ के साथ सामाजिक कार्यों में भी आपका विशेष सहयोग है। आप RSS की अंतराष्ट्रीय संस्थान, ICCS (international center for cultural studies) के विश्व अध्यक्ष हैं. ICCS संस्था लगभग ३०देशों में आदिवासियों के बीच काम करती है। आप हिंदू युनिव्हरसिटी ऑफ अमेरिका, के बोर्ड ओफ़ ट्रस्टी भी है एवं The biophysical society की public Affairs committee के आप मेंबर भी रह चुके हैं. आप वर्ष १९९६ मे M.Tech करते समय RSS संस्था से जुड़े थे। आप B.Tech के दौरान स्टुडंट युनियन के अध्यक्ष होने के नाते आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और राज्यसभा में प्रश्न उठवाने की वजह से कांग्रेस और TDP से काफी परिचित थे।अमेरिका जाने बाद, आप अमेरिका मे Oklahoma state के RSS के विभाग कार्यवाह रह चुके है। आप २००३ मे ICCS के जनरल सेक्रेटरी एवं २०१३ में ICCS के अध्यक्ष बने। आपको ICCS में कार्य करते हूये राष्ट्रीय स्तर के अधिकारियों के साथ कार्य करने के अवसर मिलते रहे हैं . आप इसी बीच भारत में भी RSS के गुरुग्राम (गुडगाव, हरियाना) मे नगर कार्यवाह रह चुके है। आपके गायत्री परिवार से आत्मसंबंध है।

आप अमेरिका में रहते हुए भी अपने पैतृक गांव से बहुत अधिक लगाव रखते हैं . आपकी भविष्य की योजना अपने पिताजी के जैसे, गांव आकर रहने की है एवं गांव क्षेत्र में औद्योगिक विकास का उद्देश्य लेकर आप अमेरिका छोड गांव आने का निश्चय कर चुके हैं. आपने गांव मे घर का जिर्णोद्धार कर भव्य घर बनाया है। आप प्रतिवर्ष १ महिने के लिए अपने पैतृक गांव सोनेगाव (कटंगी) आते है। अभी आप इस कोरोना व्हायरस की वजह से अमेरिका की चीन की सप्लाय चेन को भारत की ओर मोडना चाहते है। एवं प्रदुषण करने वाली इंडस्ट्रिज से दुर रहकर environment friendly industries को अपने क्षेत्र मे लाना आपका सपना है। आप इसके लिए प्रयासरत है। आप अमेरिका से भारत लौटने पर समाज के लिए शिक्षा एंव हेल्थकेयर मे इन्वेस्ट करना आपका एक सपना है। आप समाज के लिए अनेक सपने लेकर कार्य करने की मंशा रखते है।

आप वर्ष २००३ के पुर्व समाज के लिए बहूत महत्वपुर्ण कार्य कर चुके है। आपने गांव-गांव जाकर समाज की जानकारीयां संकलित की है। एवं आपने powarbandhu.com, जो पोवार समाज की पहली वेबसाईट थी उसका निर्माण किया था। आपने भविष्य का डिजिटल समाज को भांपते हूये powarsamaj.org वेबसाईट का निर्माण किया है। आपका यह कार्य भविष्य के समाज के लिए नयी दिशा होगी। आपका जीवन आदर्शो से भरा पडा है, आप समाज के अनमोल रत्न एवं गौरव है। समाज के युवाओ के लिए आप निश्चित ही प्रेरणा स्वरुप है। अब हम आपके भारत आगमन का इंतजार कर रहे है, हमे गर्व होगा आपके साथ कार्य करने में.

***

**5.हायकु की प्रमुख विशेषता**

**5-1. अनुभूति काव्य :-** हायकु या अनुभूति की, संवेदना की कविता आय. येको मा लक कोनतो ना कोनते एखाद सत्य अभिव्यक्त होसे. हायकु या आपलो जीवन मा अनुभूत सत्य की कविता आय. सत्य को बिना हायकु साकार होनों असंभव से. हायकु मा कोनती ना कोनती सच्चाई रव्हनो आवश्यक से.

हायकु की सबसे खूबसूरत विशेषता या से कि येको मा कवि (हायकुकार) आपली गहण अनुभूति ला कमसे कम शब्दों मा सरलता व सहजता लक प्रस्तुत कर देसे. हायकु मा अनुभूति कसी अभिव्यक्त होसे येको एक उत्तम उदाहरण निम्नलिखित से

पोवारी भाषा
मधुर ह्रदयस्पर्शी
माय की वाणी

**5-2. चित्र काव्य :-** हायकु की तीन पंक्ति व्यक्ति को मन मा एक चित्र प्रस्तुत कर देसे.उदा .-

भाषिक क्रांति
हर घर पहुँची
अस्मिता जागी

**5-3.निसर्ग को मानवीकरण :-** हायकु मा निसर्ग को मानवीकरण करनों सहज संभव से. उदा. -

हिरवी साड़ी
सुशोभित पहाड़ी
शालिन नारी.

**5-4 .श्रव्य प्रतिमा (Image) :-** हायकु मा विभिन्न अलंकार, प्रतीक व परछाई , कहावत व मुहावरा इत्यादि को प्रयोग होसे . येको कारण येन् लहान सी कविता को रुप निखरकर अधिक उत्कृष्ट बन जासे. श्रव्य बिंब अथवा प्रतिमा को एक उदाहरण निम्नलिखिस से -

वारेव पान
पाय खाल्या आयेव
चकनाचूर

**5-5.भावों की अभिव्यक्ति ला महत्व :-** कौ नसीच तीन पंक्ति की कविता ला हायकु नहीं कहेव जाय. हायकु मा भावों की अभिव्यक्ति परम आवश्यक रव्ह् से .

हायकु येक नवी दुल्हन समान से , जेको अर्धो चेहरा घुँघट मा रहके भी कोनी भी वो को बचेव अर्धो सुंदर चेहरा की कल्पना कर लेसे. तात्पर्य , हायकु मा ज्या बात कहीं गयी से वोको महत्व त् सेच लेकिन ज्या बात नहीं कही गयी से वोला भी बहुत महत्व रव्ह् से . हायकु येव एक लहानसो दीपक समान से, जेव दिसननों मा लहान दिस् से परंतु संपूर्ण कमरा ला प्रकाश लक प्रकाशित कर देसे. येव त्रिपदीय काव्य , अनुभूति की तुलना की दृष्टि लक कौनसी भी मोठी कविता दुन कम नाहाय. येव लहानसो हायकु वाचक /पाठक को ह्रदय पर बहुत गहरी छाप छोडनों मा सफल से.

**5-6 . यमक को महत्व :-** हायकु मा लय अथवा काव्यात्मकता आवनसाती यमक जमनों भी आवश्यक से. हायकु मा अग्रलिखित तीन स्वरुप मा लक कौनसो भी एक प्रकार को येमक जमें पाहिजे.(1) पयललों व तीसरों पंक्ति मा यमक अथवा (2) दूसरों व तीसरों पंक्ति मा यमक अथवा (3) तिन्हीं पंक्तियों मा यमक.

**6.पोवारी साहित्य साती लाभदायक**

*****************

हायकु का गुण व विश्व मा येकी लोकप्रियता देखकर पोवारी साहित्यिकों न् भी येन् काव्यशैली को अंगीकार अवश्य करें पाहिजे. पोवारी भाषा व साहित्य मा हायकु ला अपनावन का प्रमुख फायदा अग्रलिखित सेती . - (1) हायकु को स्वीकार करेव लक पोवारी साहित्य ला एक नवीन लोकप्रिय अंग ( Aspect) प्राप्त होये . (2) पोवारी साहित्य अधिक समृद्ध होये. (3) पोवारी साहित्य को प्रति जन -मन को आकर्षण बढ़े. (4) पोवारी साहित्य मा हायकु को प्रचलन येव जनचर्चा को विषय बनें. परिणामस्वरुप पोवारी भाषा को प्रचार - प्रसार ला मदत मिलें. (5) पोवारी कवियों की काव्य कला मा अधिक निखार आयें. (6) पोवारी साहित्य मा आधुनिकता की अनुभूति होये . येको कारण पोवारी भाषा, साहित्य व समाज की एक चांगली प्रतिमा जनमानस मा साकार होये.

***

# हायकु : एक जापानी काव्यशैली

लेखक प्राचार्य ओ.सी.पटले इतिहासकार

---

**1.प्रास्ताविक**

*****************

मनोभाओ ला अभिव्यक्त व पाठकोंको मन ला उद्वेलित करने वाली शब्द रचना ला कविता (Poem) कसेती . प्रस्तुत लेखक को अनुसार " कविता को अभिप्राय से मनोभाव , विचार अना कल्पना की सुंदर अभिव्यक्ति. " विश्व की सभी भषाओ मा अलग-अलग प्रकार की कविता लिखी जासेती . कठोर ह्रदय मा करुणा व जीवन मा हार मान लेईसेस , असो व्यक्ति मा नवी उमंग को संचार करनेवाली कविता हर देश मा पायी जासेती.
जापान मा हायकु , ताँका , ससेदोका, चोका , हाइबन ये काव्य प्रकार अस्तित्व मा सेती . विश्व मा हायकु अधिक लोकप्रिय से. पोवारी साहित्यिकोंला हायकु की शास्त्रीय माहिती अवगत करावनों येव येन् लेख को प्रमुख उद्देश्य से .

**2.पोवारी साहित्य मा स्वागत**

*****************

हायकु येव आपलो लघु आकार , वोको मा निहित भाव संवेदना व विचारों को कारण बहुत प्रभावी ना लोकप्रिय से. भारत मा सर्वप्रथम गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर न् 1916 मा येव काव्य प्रकार बांग्ला भाषा मा आनीन . हिंदी साहित्य मा आता हायकु ला महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त भय गयी से . प्रस्तुत लेखक भी हायकु ला पोवारी भाषा मा प्रस्थापित करनो चाव्ह् से . अत: 2018 पासून पोवारी भाषा मा स्वरचित अनेक हायकु प्रकाशित करेव गया. पोवारी साहित्यिक येको स्वागत करन उत्सूक सेती . हायकु को कारण पोवारी साहित्य ला एक नवीन आयाम व एक नवी कीर्ति प्राप्त होये.

**3.हायकु को स्वरुप**

*****************

हायकु या तीन पंक्तियों की एक अत्यंत लहान असी कविता आय. गागर मा सागर वाली कहावत हायकु मा चरितार्थ होसे . येको मा केवल 17 अक्षर या वर्ण रव्ह् सेती . येकी पहली पंक्ति मा 5 , दूसरी मा 7 व तीसरी मा पुन: 5 वर्ण रव्ह् सेती .
येको लहान आकार येव् च येको प्रमुख गुण आय. लहान आकार को कारण येला "एक श्वासी काव्य * कहेव जासे .

**4.हायकु को मुख्य नियम**

*****************

हायकु की तिन्हीं पंक्ति अलग -अलग रहे पाहिजे. तात्पर्य, एकच पंक्ति ला तोडके 5- 7 - 5 को क्रम मा नहीं लिखें पाहिजे. हायकु को एक उत्तम उदा. निम्नलिखित से -

साहेब बन्या
बंगला बनाईन
पोवारी भुल्या

# आंबागढ किला
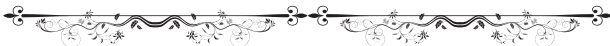
प्रस्तुती : सोनू भगत, अर्जुनी त. तिरोडा. जि. गोंदिया

वैनगंगा क्षेत्र में पोवार(पंवार) क्षत्रिय वंश के गौरवशाली अतीत से जुड़ा, आंबागढ किला भंडारा जिले के तुमसर तहसील में आता है। तुमसर से यह किला लगभग १० किमी दुर स्थित है। यहां पहूंचने के लिए निजी वाहन से ही पहूंचा जा सकता है। यह किला सतपुड़ा पर्वत श्रंखला की एक पहाडी पर स्थित है। इस किले पर लगे एक लेख से पता चलता है की इस किले का निर्माण गोंड शासक बुलंदशाह के सुबेदार राजाखान पठान ने जंगल मे शत्रु से बचाव के लिए वर्ष १७०० मे करवाया था।

इस किले का निर्माण बहूत ही कलात्मक रुप मे किया गया है। बख्त बुलंदशाह के पुत्र चांद सुल्तान की पत्नी रणकुंवर का वास्तव्य कुछ काल इस किले मे रहा, उनका स्नानघर भी हूआ करता था जो आज भी जर्जर हालात मे दिखायी देता है। गोंड राजाओ के बाद मे यह किला मराठाओ के अधीन चला गया, उस समय इस किले का उपयोग कैदखाने के रुप मे किया जाता था।

पवारी ज्ञानदीप पुस्तिका के अनुसार रघुजी भोसले के शासन काल मे आंबागढ किले का किलेदार, पोवार श्री मोतीप्रसादसिंह ठाकुर थे। उस समय इस किले का उपयोग कैदखाने के लिए किया जाता था। इस किले मे एक अंधारखोली भी है जिसमे कैदियो को रखा जाता था। इस किले मे एक कुंआ है जिसके बारे मे किले के बाहर लगे बोर्ड पर लिखा गया है की इस कुंए का पानी जहरीला हूआ करता था, खतरनाक अपराधियों को वह पानी पिलाया जाता था जिससे उनकी मृत्यु हो जाती थी.

इस किले के बारे मे स्थानीय लोग बताते हैं की इस किले से एक सुरंग ऐसी है जो सीधे नागपुर के किले मे निकलती है लेकिन हमारी खोज मे यह सुरंग हमे दिख नही पायी। शायद वही अंधारखोली से वह सुरंग होते हूये नागपुर निकलती होगी। यह किला गोंड, मराठा, ब्रिटिश काल में एक मुख्य किला हूआ करता था, ३२० वर्ष बाद यह किला अब जर्जर हो चुका है। लेकिन महाराष्ट्र शासन द्वारा इस किले को पर्यटन योग्य रुप दिया गया है। इस किले मे पर्यटक कम संख्या मे आते है इसलिए यहां आने पर शांती प्रतीत होती है। एक दिन की पर्यटन यात्रा के लिए यह किला परिपुर्ण है।

क्षत्रिय पोवारों ने विदर्भ के शासकों के साथ सैन्य भागीदारी की थी और इस किले पर लंबे समय तक किलेदार रहें इसीलिए इस किले के साथ हमारी आत्मीयता होना स्वभाविक है .

***

# पोवार समाज के विकास, कल्याण और उत्थान के लिए सिहांवलोकन

✍ नरेश कुमार गौतम
उपविभागीय अभियंता, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, मुंबई

विभिन्न धर्मों और समाजों, जातियों के संगठन, समूह, समाज, संघ और एकता मंच बने हुए हैं. सामाजिक स्तर पर सामूहिक रूप से विभिन्न आयोजन कार्यक्रम किए जाते हैं. विभिन्न आयोजनों में समाज, जाति और धर्म के संगठनों की एक विशिष्ठ भूमिका और योगदान होता हैं. सामाजिक स्तर पर अपनी जाति और समाज के उत्थान, विकास और एकजुटता के लिए जो शुरुआत कुछ समाजों में की गई हैं वह अनुकरणीय हैं.

लेकिन समाज और जाति के जो संगठन बने हैं वे मूलतः अपने समाज के विकास उत्थान के लिए बने हैं. ऐसे लोगों को सही दिशा में लाने और सकारात्मक दिशा में सोचने और आगे बढाने के लिए समाज के बुद्धिजीवी लोग आगे आते हैं, उन्हें सही रास्ता दिखाते हैं. अगर उनका निजी, अनैतिक गैर कानूनी हित लाभ उसके पीछे निहित नहीं होता हैं तो वे सही दिशा में आगे जाते हैं. वे अपने दायरे में जो करते हैं उनके लिए समाज कानून और व्यवस्था हैं. अगर संगठन अपने पास उपलब्ध दायरों के तहत, जिस दावे और जाहिर तौर पर कही जाने वाली बाते और उद्देश्य के लिए बनाए गए हैं उस हेतु वास्तव में संकल्परत, कार्यरत हैं या अमल करते हैं तो वे समाज संगठन कम से कम अपने दायरे और उपलब्ध संसाधनों से अपने परिवार, जाति, समाज, धर्म के लोगों का तो विकास और कल्याण कर ही सकते हैं, करते हैं और करना चाहिए तभी वह उद्देश्य सिद्ध होगा. इसी मापदंड के आधार पर निम्नलिखित आवश्यक मूलभूत विषयो पर संघटनों को कार्य करना चाहिए.

पोवार समाज के संगठन किस तरह से कार्य कर सकते है ताकि समाज के विकास, कल्याण और उत्थान के लिए सकारात्मक परिवर्तन किए जा सके.

1. पोवार समाज संघटनो द्वारा समाजिक स्तर पर प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित करवाए जाते हैं. यह समाज के स्तर पर काफी अच्छा कार्य हैं. समाज की प्रतिभाओं को और आगे लाने के लिए भी समाज अपने स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं.

2. समाज के समाजिक संगठन के द्वारा समाज के बच्चों को पढने के लिए प्रेरित करें, इसके लिए सामाजिक बैठकों में तय करें, विश्लेषण और सर्वे करें कि किसी परिवार के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने मे आर्थिक रूप से असक्षम हो तो उनको पढने के लिए आवश्यक मदत करने के विकल्प खोजें.

3. अगर किसी परिवार के पास बच्चों को पढ़ाने के लिए सिमित संसाधन हैं और आर्थिक कमी हैं तो समाज के संसाधनों और फंड से उनको आर्थिक और अन्य आवश्यक सहायता की जा सकती है.

जो कार्य समाज अपने स्तर पर कर सकते हैं उनमें से स्कूल-कोलेजों में पढने वाले विद्यार्थियों के लिए अलग से शिक्षण-प्रशिक्षण और ट्रेनिंग के कार्यक्रम कर सकते हैं.

इससे उनके विद्यार्थी जीवन में परीक्षा में बेहतर परिणाम के लिए लाभ मिल सकेगा और सरकारी निजी शिक्षण संस्थानों के सिमित दायरों के अध्ययन से आगे भी उनको ज्यादा सीखने को मिलेगा.

प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं को रोजगार के क्षेत्र में भी दिया जा सकता हैं. कई युवा बाहर हजारों, लाखों रूपए देकर नौकरी के लिए प्रशिक्षण लेते हैं. कुछ समाज अपने स्तर पर इस प्रकार के आयोजन और ट्रेनिंग करवा भी रहे हैं. यह अनुभव दूसरे समाज से प्रेरणा लेकर अपने संसाधनों के आधार पर अपने सदस्यों के युवाओं के लिए लागू कर सकते हैं.

4. समाज के स्तर पर जो समाज जो ऐसे प्रशिक्षण शाखा बनाते हैं वे युवाओं को सरकारी और निजी क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की जानकारी हेतु सूचना और डेटा रखें और उनको नियमित जानकारी प्रदान करे  जिन्हें ऐसी जानकारी की आवश्यकता हो.

5. कोरोना काल की विकट परिस्थितियों में समाज की ओर से ऐसे प्रकोष्ठ भी बनाए जाने चाहिए जो अपने समाज के युवाओं को लधु उद्यम, अपने स्वयं के द्वारा शुरू किए जा सकने वाले कारोबार और सेवा कार्यों के बारे में जानकारी दे सकें जिससे आजीविका के लिए उनके पास जो ज्ञान, स्किल, संसाधन और योग्यता हैं उसके अनुरूप उपलब्ध परिस्थितियों में वे कैसे रोजगार, काम शुरू कर सकें या जो उनकी योजना हैं उसे कैसे लागू कर सकें; जो कार्य उनके पास हैं,  उनके परिवार के पास हैं उसे कैसे बेहतर बना सकें.

6. समाज की ओर से सदस्यों को सरकारी योजनाओं की निरंतर जानकारी देने के लिए भी सूचना संसाधन इकाई बनानी चाहिए जो अपने समाज द्वारा संकलित किए डेटा व जानकारी से तथा दूसरे समाजों से मिली जानकारी से, अपने क्षेत्र में या दूसरे क्षेत्रों के कार्यरत स्वयं सेवी संस्थानों (N.G.O.) के पास उपलब्ध जानकारी लेकर उनको प्रदान कर सकें.

7. समाज अपने सदस्यों के विकास कल्याण के लिए उन सरकारी योजनाओं का उनको लाभ दिलवा सकते हैं वे दिलवाएं. निजी तौर पर व्यक्तिओं को सरकारी विभागों में जाकर वांछित कार्य करवाने और लाभ लेने में सरकारी व्यवस्था में बैठे कई अराजक और भ्रष्ट कर्मचारियों के कारण व्यवधान और अवरोध आते हैं. सामाजिक स्तर पर मदद करने से सरकारी विभागों से वांछित और योग्य व्यक्तियों को उनके जायज हक के अनुसार सरकारी योजना का उचित लाभ मिल सकेगा.

8. समाज में वैवाहिक आयोजन एक सबसे ज्यादा मुश्किल और खर्चे वाला मामला होता हैं. इसके लिए समाज अपने स्तर पर सामूहिक मिलन जैसे कार्यक्रम रखें और और समाज में एक ऐसी इकाई रखें जो वैवाहिक मामलों में जीवन साथी चुनने के लिए सर्वे, जानकारी, डेटा आदि रखें और सदस्यों में आदान प्रदान के लिए भी एक उचित माध्यम बनाकर रखें ताकि किसी परिवार और किसी व्यक्ति के लिए जैसा वांछित जीवन साथी उसी बिरादरी का चाहिए तो उनको चयन करने और ढूंढने में समाज की इस शाखा  के माध्यम से आसानी हो सके. इसके लिए समाज अपने दूसरे जिलों और राज्यों में भी सूचना और जानकारी का आदान प्रदान कर इसे और बेहतर बना सकत हैं.

9. सामूहिक रूप से विवाह समारोहों का आयोजन अनेक समाजो में चल रहे हैं. इसे बहुत से समाज भी लागू करते हैं ताकि परिवारों पर वैवाहिक आयोजन में होने वाले अनावश्यक खर्चों और दहेज़ के मसलों पर नियंत्रण और नियोजन में काफी सहायता मिलेगी. इस मामले में एक दूसरे समाज के प्रतिनिधि आपस में अपने समाज में किए जाने वाले सामूहिक वैवाहिक आयोजनों के बारे में अपने अनुभव बाँट सकते हैं ताकि दूसरे समाजों के अनुभव के आधार पर वे अपने समाज में और किस तरह से बेहतर या नियोजित रूप से समारोह आयोजित कर सकते है.

10. सामूहिक विवाह समारोह के उपरांत भी समाज के परिवारों में समरसता बनी रहे, सदस्यों का जीवन यापन बेहतर रहे, परिवारों की एकजुटता व मधुर सम्बन्ध बने रहे इसके लिए भी समाज अपने स्तर पर एक बेहतर कार्य कर सकता हैं.

समाज के परिवारों में परिवार के सदस्य सही तरह से मधुर सम्बन्ध बनाकर रखें इनके लिए समाज की ओर से पारिवारिक परामर्श सेवा केंद्र शुरू कर सकते है. परिवार परामर्श केन्दों में परिवारों में अगर कोई विवाद या समस्या का मामला हो, परिवार के सदस्यों में विवाद हो तो परिवार के सदस्यों या उनसे परामर्श कर समाधान किया जा सके. अगर परिवार का एक सदस्य दूसरे स्थान से हैं तो समाधान के आगे की दिशा में उस जगह के समाज के लोगों से भी बात कर विवाद या समस्या का समाधान समाज के स्तर पर ही करें. इस प्रकार के मामले नैतिक, सामाजिक और कानूनी दायरों में हो यह समाज के पदाधिकारी को ध्यान मै रखना चाहिए.

11. समाज अपने सदस्यों के विकास कल्याण के लिए सरकारी योजनाओं, सरकारी बैंकों से ऋण दिलवाकर जो लाभ दिलवा सकते हैं वे दिलवाएं. निजी तौर पर व्यक्तिओं को बैंकों में जाकर ऐसी कार्य करवाने में कई बार दिक्कतें आती हैं इसलिए सामाजिक स्तर पर मदद करने से बैंक से भी उनको उनके जायज हक के अनुसार लाभ मिल सकेगा.

समाज की ओर से इस प्रकार के बैंकों की जानकारी भी करवाई जाए जहाँ पारदर्शिता से उनको उनके जायज हक के अनुरूप असने से ऋण और अन्य लाभ मिल सकते हैं या उनके नियमों के तहत वांछित कार्य सहजता से हो सकते हैं.

12. समाज अपने संसाधनों से एक ऋण का कोष तैयार कर जरूरतमंदों को कानूनी और नैतिक दृष्टि से उचित आवश्यकताओं के लिए ऋण प्रदान कर सकते हैं.

13. कुछ समाज अपने स्तर पर स्वास्थ्य जाँच के लिए मेडिकल चेकअप कार्यक्रम करवाते रहते हैं, इस प्रकार के कार्यक्रम सामाजिक स्तर पर और व्यापक स्तर पर किए जा सकते हैं.

समाज के स्तर पर जिन लोगों के स्वास्थ्य का लाभ सरकारी अस्पतालों से मिल सके इसकी लिए सहायता इकाई बने और स्वयं सेवी संस्थानों ( N.G.O.) के मदद से अस्वस्थ लोग सरकारी अस्पतालों में कम खर्च में इलाज करवा सकें.

13. कई बार कुछ इलाज सरकारी अस्पतालों में नहीं होते हैं या महंगे होते हैं. कई इलाज निजी अस्पतालों में लाखों के खर्चे के होते हैं. ऐसे इलाज करने से लोगों के घर तक बिक जाते हैं.

स्थानिक समाज ऐसे कुछ मामलों में जहाँ आर्थिक सहायता की जरुरत हो,अपने समाज के उन सदस्यों को आर्थिक लाभ दे सकते हैं ऋण भी दे सकते हैं ताकि वे अपना महंगा इलाज आसानी से करवा सकें और स्वस्थ होने के बाद राशि लौटा सके.

14. कुछ निजी अस्पताल मुफ्त में और कम से कम खर्चे में भी इलाज करते हैं समाज के स्तर पर ऐसे अस्पतालों की जानकरी सदस्यों को करवाई जा सकती हैं. समाज स्वयं सेवी संस्थानों (N.G.O.) से सभी उनके क्षेत्र के ऐसे अस्पतालों की जानकरी लेकर रख सकते हैं.

15. समाज में कई वृद्ध ऐसे होते हैं जिनके परिजन नहीं होते हैं या मदद नहीं कर सकते हैं. ऐसे वृद्धजनों के लिए पूर्णकालिक या अंशकालिक वृद्धाश्रम भी समाज बनवा सकते हैं. जो वृद्धाश्रम बने हुए हैं उनके यहाँ उनको रेफर कर सकते हैं, जानकारी दे सकते हैं. कई वृद्ध संसाधन रखते हैं लेकिन उनकी सहायता के लिए कोई व्यक्ति उनके परिवार में नहीं होता हैं. ऐसे वृद्धों को मदद देने और प्रेरित करने से वे वृद्ध अपना अतिरिक्त जमा धन और संसाधन समाज को दे सकते हैं ताकि समाज उस राशी और संसाधनों से उनके लिए, उनके जैसे दूसरों के लिए और समाज अपने अन्य सदस्यों के लिए कुछ कर सके.

16. हमारे देश समाज में अन्य जातियों के जरूरतमंद मेहनती लोगों के लिए भी कुछ लोग आर्थिक सहायता कर सकते हैं. इस प्रकार के संगठनों में संपन्न व्यक्तिओं के समूह और कुछ व्यापारिक संस्थाएं भी आ सकती है जिसमें व्यापर या कार्य से जुड़े सदस्य हों. ऐसे संगठनों में विभिन्न समाज और धर्म के लोग भी जुड़े रहते है इस लिहाज से भी वे जन कल्याण और सहायता की दिशा में अपने मापदंड तय कर मदत कर सकते है.

***

# मेंढक का विच्छेदन
## DISSECTION OF RANA TIGRINA

डॉ. किरण बिसेन, भा.व.से

"30 जून, 1993 बुधवार"

**मेंढ़क राजा नमस्ते।**

प्रात:काल का समय था। बाल सूर्य की शीतल किरणें चारों ओर फैल चुकी थीं। उस दिन मेरा पदमा एकादशी का व्रत था। इस एकादशी को देवशयनी एकादशी भी कहा जाता है। मैं चारपाई पर बैठी कुछ गुनगुना रही थी। तेरह वर्षीय मेरी छोटी बहिन नजदीक ही बैठी थी। तभी मुझे एक सपना आया। यह एक दिवास्वप्न था। जो सपने दिन में देखे जाते हैं; वे दिवास्वप्न कहलाते हैं। जब मैं यह दिवास्वप्न देख रही थी, उसी समय एक अभागा मेंढ़क, अभागे कौवें के द्वारा मेरे आंगन की छोटी दिवार एक पर लाया गया। मेंढ़क को अभागा इसलिए कहना होगा, क्योंकि मैंने उसका विच्छेदन किया जिसके कारण उसे तड़फ-तड़फ कर अपने प्राण त्यागने पड़े। कौवे को अभागा इसलिए कहना होगा क्योंकि वह मेंढक को ग्रहण करने की दृष्टि से लाया था, किंतु दुर्भाग्यवश उसे पा न सका और मेरे इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहा। जब कौआं मेंढ़क को अपनी चोंच के द्वारा प्रताड़ित करता तब वह अजीब सी आवाज निकालता, उसकी आवाज न तो मेंढ़क की तरह लग रही थी न ही गिरगिट के जैसे लग रही थी। वह टोर-टोर की आवाज निकाले जा रहा था। उसकी आवाज सुनकर मैं चौंकी और उस ओर देखने लगी जिस ओर से टोर-टोर की आवाज आ रही थी। तभी तुरंत मैंने अपनी छोटी बहन जिसका नाम मोनू है, उसे भेजा तथा उसका निरीक्षण करने को कहा। उसके द्वारा निरीक्षण करने पर पता चला कि वह एक मेंढ़क है। मेंढ़क उचक-उचक कर इधर-उधर हरकत कर रहा था। वह कुल मिलाकर बचने का उपाय खोज रहा था। उसका कहना था कौवे से तो मैं मुक्त हो गया हूँ, अब मुझे कोई नहीं मार सकेगा, किंतु मेंढ़क के भाग्य ने शायद साथ नहीं दिया और मुझमें उसके विच्छेदन की इच्छा जाग्रत हो गई, परन्तु मई थोड़ा असमंजस में थी। मैंने अपनी बहन, मोनू से राय ली कि मेंढ़क का विच्छेदन किया जाय या न किया जाय, मोनू तो मुझसे ज्यादा साहसी निकली उसने विच्छेदन के लिए तुरंत हामी भर दी। अब विच्छेदन की तैयारियां आरंभ हुई। किंतु मेंढ़क नियंत्रण में नहीं था। वह स्वयं का नियंत्रण खो बैठा था और दिवार पर से बार-बार नीचे गिर जाता था। उसे मरने के भय से अधिक बचने की चिंता थी, क्योंकि वह अब तक भांप गया था कि अब वह इन देवियों से बच नहीं सकेगा।

मेंढ़क का अब निरीक्षण किया गया। मुझे भय सताने लगा कि एक मेंढ़क जहरीला भी हो सकता है, शायद यह मेंढ़क जहरीला ही न हो। मेंढ़क के दो - तीन प्रकार होते हैं। एक राना टिग्रीना, और दूसरा बुफो या टोड, जो कि जहरीला होता है, तथा बाल मेंढ़क टैडपोल कहलाता है। कुछ वाचन करने पर पता चला कि यह भारतीय मेंढ़क राना टिग्रीना है, जो कि जहरीला नहीं होता। इसके पश्चपादों में पांच अंगुलिया पायी जाती हैं, तथा इसमें पतली झिल्लियाँ ढकी रहती हैं। अग्रपादों में चार-चार अंगुलिया पायी जाती हैं। इसका थुथन तिकोनाकार होता है। यह तो रही इसकी बाहरी बनावट किंतु मेरा उद्देश्य था आंतरिक अंगों का विच्छेदन, अत: अब भावी कार्य जो कि काट-पीट से संबंधित था, किया जाना निश्चित था। मेंढ़क के शरीर से अजीब तरह की बदबू आ रही थी, इससे यह मालूम पड़ता था कि वह किसी उथले गंदे गड्ढे से उठाकर लाया गया है। उस समय वह बदबू, खुशबु की भाँति महसूस हो रही थी, क्योंकि विच्छेदन का उत्साह, आवेग बदबू को खुशबु में बदल रहा था। अब मेंढ़क को एक पानी भरे बर्तन में डाल दिया गया, जिससे उसके शरीर की बाहरी धूल एवं मैल साफ हो गई, तत्पश्चात् उसे एक साफ-स्वच्छ प्लास्टिक पर लिटाया गया, किंतु वह अब भी जीवित था और जीने की कोशिश कर रहा था, अत: बार-बार उस स्थान से उचक-उचक कर स्थान परिवर्तित कर लेता। किंतु बचना शायद उसके नसीब में था ही कहा; वह तो मेरे पंजों में आ चुका था और मैं विज्ञान विषय के पंजों में आ चुकी थी अत: अब उसका विच्छेदन अनिवार्य हो गया था।

इस कार्य के लिए देरी इसलिए प्रतीत हो रही थी क्योंकि मुझमें दो शत्रुओं का निवास था उसमें से एक था पदमा एकादशी व्रत और दूसरा था सन्देह। मुझे सन्देह इसलिए हो रहा था क्योंकि मैं अपने स्वार्थ के लिए एक मेंढ़क राजा (राना टिग्रिना) की जान ले रही थी। "खैर" शब्द ने मुझे संतोष दिलाया। उसने मुझसे कहा-तू इस ज्ञानार्जन हेतु एक ही आत्मा को तड़पाएगी किंतु तुझे अनेकों तड़पते हुई जानों का आशीर्वाद प्राप्त होगा, क्योंकि तू इससे उनकी रक्षा हेतु शिक्षा प्राप्त करेगी। कहा जाता है, कि मेंढ़क के शरीर की आंतरिक संरचना मानव की आंतरिक संरचना से मिलती-जुलती है, अत: मेंढ़क का विच्छेदन किया जाता है।

मैंने मेंढ़क के विच्छेदन का कार्य आरंभ किया। एक नई सी धार-दार ब्लैड (पत्ती) लिया तथा उसकी बाह्य त्वचा को चीरकर पिन के द्वारा फैलाकर अटैच कर दिया। उसके बाद उसके आंतरिक अंगों को अलग-अलग किया तथा प्रत्येक के बारे में कुछ मोटी-सी जानकारी ली, तथा पेट को चीरकर देखा मेंढ़क ने एक केकड़े को निगल रखा था जो सड़न क्रिया को अपना चुका था। सड़े केकड़े के कवच से पिन चुभाना और भी आसान हो गया था।

मेंढ़क का विच्छेदन करते समय मैं पूर्णरूप से शांत नहीं थी। विचारों के उधेड़ बुन में पड़ी थी। विचार थे मेंढ़क के श्राप देने के। रह-रहकर यह संदेह हो रहा था कि मेंढ़क को उपवास के दिन तड़पाना कितना उचित है?

आधे शरीर का विच्छेदन हो चुका था किंतु अब भी मेंढ़क के प्राण-पखेरू नहीं उड़े थे। अब भी उसका हृदय धक्-धक् कर रहा था। प्यार में नहीं, व्यथा में। वह धक्-धक् व्यथा की थी। जिसकी प्रत्येक धड़कन में हजारों कष्ट समाये थे। मेंढ़क तड़प रहा था उसके हाथ-पैर पिन की सहायता से अटैच्ड हो चुके थे। किंतु अब भी वह हलकी सी मस्ती के साथ फुदकता और व्यथा के शूल से चारों खाने चित्त हो जाता।

मैंने उसे बेहोशी की दवा नहीं दी थी अत: वह जीवित और सचेत अवस्था में सारी व्यथा को सहन कर रहा था। मुझे भय इसलिए लग रहा था क्योंकि वह बेहोशी की हालत में नहीं था।

अब उसके चीथड़े निकल चुके थे। उसके प्रत्येक अंग अलग-अलग किए जा चुके थे। जैसे ही उसने हल्की-सी उछाल लगाई उसके प्राण चल बसे। अब मेंढ़क के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। वह स्वर्ग सिधार चुका था। मैंने ईश्वर से प्रार्थना कि उसे स्वर्ग में अच्छा स्थान मिले, उसकी आत्मा को शांति मिले, क्योंकि लोग अपनों के लिए बलिदान देते हैं, किंतु मेंढ़क राजा ने मेरे ज्ञानार्जन के लिए अपना शरीर न्यौछावर कर दिया।

मैं एक रोचक बात तो बताना ही भूल गई कि मैंने मेंढ़क को थोड़ा नियंत्रित कैसे किया। विच्छेदन के पहले वह बहुत उछल कूद कर रहा था। ब्लैड चलाने पर झन से कूद जाता था। मैं बहुत देर तक उसकी इस नटखट प्रवृत्ति को सराहती रही। किंतु विच्छेदन के मनोवेग ने कुछ अनर्थ ही कर डाला। मैंने प्लास्टिक पर उसे लिटाकर छोटी छड़ी से बाजू में मुंह करके बहुत पिटाई कर डाली, किंतु यह समस्त पिटाई उस पर लागू न हो सकी कुछ छड़ी धरती पर भी पड़ीऔर कुछ मेंढ़क पर। बेचारी धरणी को मेरी सह-भागिनी बनना पड़ा।

अंतिम जून को मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अब मुझे जिसकी अंतिम तारीख 30, को विच्छेदन दिवस के रूप में याद रखना होगा। प्रतिवर्ष 30 जून को मैं मेंढ़क की आत्मा की शांति के लिए विच्छेदन दिवस मनाऊँगी।

मैं छोटे से छोटे कीट से डरती थी, उसके घर में प्रवेश कर लेने पर जोर से चीखती और तुरंत उस स्थान से टसक जाती थी किंतु इस दिन मैं मेंढ़क जैसे प्राणी को काट-पीट किया, मेरे लिए यह बहुत साहस का काम था। जैसा कि कहा गया है, बाप न मारे मेंढ़की, बेटा तीरंदाज। उस दिन को तीरंदाजी ही कहूँगी जिस दिन मेरा कीड़े-मकोड़े से संकोच का बांध टूट पड़ा था, वह दिन था 30 जून, बुधवार।

**याद रहेगा यह दिन, मेंढ़क तेरी याद में।**
**भूल न जाना, एहसान तेरा चुका दूंगी।**
**प्राणों की बूंद सींच-सींच।**
**तेरी व्यथा में मेरा दिल, जाता है, हमेशा मीज-मीज।**

# पद्य विभाग : पोवारी काव्य रचनायें
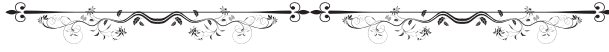
**पोवारी गीत:-बोलो पोवारी बोली**
(चाल:- भातुकलीच्या खेळामधली...)

वंशज आमी राजाभोज का,
माता से गडकाली
पोवारी को करो संवर्धन
बोलो पोवारी बोली।। धृ।।

मानपानको घगरा भरीसे
पोवारी की रीती,
पैसा आयेव अडका आयेव
नोको करो वकी माती
पोवारी से खाण आमरी
गहर् ज्ञान की खोली।। १।।

मीनच का भाऊ जिम्मा लेयेव,
नोको बोलो अशी भाषा
सजन आपलो बैरी होये
नोको पाडोजी रेषा
रिश्ता नाता पक्को करसे
मोरी पोवारी बोली ।। २।।

पोवारी को झरा झरनदेव
झरे पोवारी माया
आपसमा तुमी बोलो पोवारी
पुलकित होये काया
संस्कृतीकी बाग लगावो
बनो पोवारी माली।। ३।।

मोर् लच का काम अडसे
सोच पडसे भारी
पोवारी ला देवो बढावा
लेये उची भरारी
गाव शहरमा नारा लगावो
अनमोल मोरी बोली।। ४।।

**डॉ. शेखराम परसराम येळेकर**
**नागपूर**

***

**पोवारी गीत :- चलत रव बेटा**
(चाल:- देहाची तिजोरी..)

आयेस जगमा, गडे तोला काटा
चलत रव बेटा आब् चलत रव बेटा
।।धृ।।

गरीबीमा पैदा भयेस, रोवत नोको बसू
पुस तोरा डोरा आब, काडू नोको आसू
गरीबीच् गुरू आये, संत कसेत बेटा।।
१।।
चलत रव बेटा..

तोर् साठी तोरो बाप, हाय हाय राब्
दुनियाक् चक्कर मा, भुलू नोको खाब
आवसेती संकट सबला, भिऊ नोको
बेटा।। २।।
चलत रव बेटा..

जब असो लगे तोला, टुटसेका खाब?
कच नोको खाऊ बेटा, जरा जरा राब
मेहनत करनसाठी, नोको फोडू
फाटा।। ३।।
चलत रव बेटा..

तोरो मन बिचकावन, बहू तोरा साथी
जीवन तोरो अनमोल, नोको करु माती
मोठे नाव होये तोरो, कहेत वाह बेटा।।
४।।
चलत रव बेटा..

आब् तोर् बचपनमा, बाप को आधार
बाप आये बचावनला, सोड दे बिचार
एक दिवस नही रहे, कसो करजो
बेटा।। ५।।
चलत रव बेटा..

दुनिया क् सर्कसमा, संभलकन रव
दुनिया क् बुराईला, देऊ नोको भाव
खुदकीच लढाई रे, खुद लढ बेटा।।
६।।
चलत रव बेटा..

बसेवच् नोको रहु, कर काम धाम
भलाई से मेहनतमा, कव् शेखराम
प्रेरणा की जोत मनमा, पेटन दे रे
बेटा।। ७।।
चलत रव बेटा..

**डॉ. शेखराम परसराम येळेकर**
**नागपूर**

***

## पोवारी भारुड

फू बाई फू फुगडी फू
आब् तरी पोवारी बोलनाव तू
व बोलनाव तू।। धृ।।

मराठीना हिंदीसंग इंग्रजी को मारा
माय पोवारी को आब् भयोव
कोंडमारा
आब् फूगडी फू

काम धंदा साती आमी शहरमा आया
भुल गया पोवारी ला नही आयी दया
आब् फूगडी फू

मायबोली पोवारी से मधुरताकी खोली
पोवारीमा बोलो आब् भरो वकी झोली
आब् फूगडी फू

मायबोली पोवारी से पहचान मोरी
पोवारीको प्रसार करो बनो धुरकरी
आब् फूगडी फू

संगठन करन साती समाज भाई जोडो
पोवारी क् संग आब् रिश्ता नोको तोडो
आब् फूगडी फू

खासर गयी बंडी गयी गाडी आयी घर
कुटुंब संग संभाललेवो पोवारी को भार
आब् फूगडी फू

शेखर कव सिको तुमी मोठो करो नाव
दुनिया भरमा मोठो करो पोवारको
नाव
आब् फूगडी फू

- डॉ. शेखराम परसराम येळेकर
नागपूर

***

## आमरी माय वैनगंगा

मुंडारा सिवनी लक जन्मी से
पावन नदी वैनगंगा !
सिवनी लक बालाघाट को क्षेत्र
मा जासे वैनगंगा !!

गोंदिया अना भंडारा की भूमि
ला करसे या पावन !
प्राणहिता नाव लक समावसे
गोदावरी मा वैनगंगा !!

सतपुड़ा न विदर्भ की गंगा
असि से मोरी वैनगंगा !
आपला पंवार पोवार की
पहचान से मोरी वैनगंगा !!

आपलो पुरखा गिनना जंगमा
मराठा को देईन साथ !
वीरता को मान मा मिल्यो
वैनगंगा क्षेत्र उनको हाथ !!

खेती किसानी मा दक्ष होतीन
आमरा पुरखा पंवार !
वैनगंगा को आँचल मा
फल्या फूल्या आमी पंवार !!

सिवनी लक बालाघाट,
गोंदिया लक भंडारा जिला !
क्षत्रिय संस्कार को रंगमा
रंगीसे योव पोवारी किला !!

सिंचित करसे उनला
आपली पावन माय वैनगंगा !
पोवार बसीसेत वहां
जहां लक बोहोसे माय वैनगंगा !!

- ऋषि बिसेन
नागपुर

***

## कौन हैं अग्निवंशीय पँवार

धर्म से ज्ञान तक, ज्ञान से कर्म तक ।
कर्म से कर्तव्य तक, सजक है पँवार । ।

घर से समाज तक, समाज से देश तक ।
देश से पृथ्वी तक, संरक्षक है पँवार ।।

प्राणी मात्र से, सबके कल्याण तक .
मानवता से ब्रह्मांड तक, रक्षक है पँवार ।।

क्षत्रिय धर्म से ब्रह्मक्षत्रिय धर्म तक ।
गुरु वशिष्ठ के आशीष में बढ़ा है पँवार ।।

राजा प्रमार से, विक्रमादित्य के शौर्य तक ।
आबू से उज्जैन तक चला है पँवार ।।

राजा उपेंद्र से राजा मुंज की शक्ति तक ।
राजा भोज के कल्याण से शोभित है पँवार
।।

दुश्मनों की तलवार से, राज्य खोने तक ।
कभी न डरा, वो क्षत्रिय वीर है पँवार ।।

धर्म की रक्षा से , अपने हर संस्कार तक ।
कभी न अडिग हुआ, वो योद्धा हैं पँवार ।।

हे वीर क्षत्रिय, इतिहास से आज तक ।
धर्म को धारण किये हुआ तू हैं पँवार ।।

महाकाल के पावन क्षेत्र से नगरधन तक ।
माँ वैनगंगा के आँचल में बढ़ा हैं पँवार ।।

मन से, कर्म से सनातनी धर्म तक ।
पोवारी संस्कारों में समाहित हैं पँवार ।।

- ऋषि बिसेन, नागपुर

***

## मोरो गणपति देवा

आशीष मिली से तोला होवन को
प्रथमपूज्य देवा !
नवी शुरुवात मा लेषेत तोरो नाम अय मोरो
देवा !!

असो त हर पल करा सेजन याद तोरी
गणपति देवा !
पर येनो दस दिवस मा होवसे विशेष पूजा
मोरो देवा !!

गणेश चतुर्थी ला घर मा तोरो आगमन
होवसे देवा !
जीवन मा होवसे असो तरंग न उल्लास मोरो
देवा !!

टुरु पोटु ल सदा बड़ो प्रिय से आमरो गणेश
देवा !
येनो बरष भी कर रही सेत वेय पूजा मोरो
देवा !!

पार्थना करसु मि देय समृद्धि सबला मोरो
देवा !
पुरो धरा ला देय हरियाली न खुशहाली मोरो
देवा !!

येनो बरष मा फैली सेय येव जानलेवा
कसो रोग !
मिटाय देय येला न कर खुशहाल सबला
मोरो देवा !!

दश दिवस की सबकी प्रार्थना ल सफल
कर देवा !
हर पल होवसे तोरी अर्चना मोरो प्रभु
गणपति देवा !!

येनो दिवसमा मूरतरूप मा तोला पासेजन
मोरो देवा !
जावन को तोरो बेरा जवरसे आता मोरो
गणेश देवा !!

पर आवनवाला बरषमा अखिन आवजोश
मोरो देवा !
असी आश ला राखकर अखिन बाट देखु
मोरो देवा !!

- ऋषि बिसेन, नागपुर

***

## पोवारी दिवारी

दीप पुजन संस्कृती
वंदनीय आमला से
सण मा सण दिवारी
धार नगरी शान से

ओतप्रोत भरेव से
खुशी को कलश जसो
सण दिवारी को मोरो
राजाभोज महान से

सहवास भेटजासे
परिवार को सप्पाई
सण दिवारी को मोरो
शब्दसुख ज्या खाण से

दुर होये अज्ञानता
दिवो कोच उजाडोमा
सुख समृद्धी भेटे गा
लक्ष्मी को विद्यादान से

लगायके मस्त दिप
स्तुती सुमन पसरे
अलौकिक जगमा से
दिव्य ज्योती को ज्ञान से

✍वर्षा पटले रहांगडाले
बिरसी आमगांव
जि.गोंदिया

***

## लाख्तखाड

आई आई लाख्तखाड, बेटी बाट देखसे
आनन आये मोरो भाई,याच आस ठेवसे।।

खाजो धाडे मोरी माय,चिवळा,खुरमी,लाळू
मामा घरको खाजो खाये,मोरो लाडको बाळू।।

खारी दोरी भरके भयी,धुरा पलायके भया
पऱ्हा धरनको पयले,भाई भोवजाई आया।।

माय बाप की जागा,लेयेत भाई भोवजाई
लाख्तखाळ की बेरा,कसी पसाऊ सेवई।।

माच परका आंबा सऱ्या,जांभूर पीकी लटालोंब
टोरी सपा झळ गयी,नाहाय काही हाकबोंब।।

खात फेकके भयेव खेतमा,बगराऊ कशी कशी
सरप,बिच्चु ओन ढगमा,मोठा मोठा धस्या सेती।।

माय घर जाऊ कसु,रस रोटी खाऊ कसु
मायापीरत लका मायघर,दुय दिवस रहू कसु।।

- वर्षा पटले रहांगडाले
बिरसी( आमगांव)

***

## पहाट (सकार)

भय गई सकार ,मीट गयव सब अंधकार,
सूरज न कर देइस ,लालिमा की बौछार।
सकार की या बेला बड़ी मधुर लग से मोला,
पाखरुहीनको लगी से मोरो गांव मा मेला।
हिवरी धरती पर पसरी से ओस की चादर,
आई माई हिटी सेत धर - धर कर घाघर।
सकार सुकार बजसेत मन्दिर की घँटी,
धावत धावत जाय रह्या सेत सोनू - बन्टी।
दुबट्टा पर होय रही से काकाजी की मांदी,
कोनी आन सेत खेत लका गवत की पेंडी।
गायकी जाय रही से धर के गाय को गोहन,
नाव से गायकी को श्याम ना मोहन।
धुवार से असी जसी जरसे धु-धु सिगड़ी ,
वा देखो आय रही से फूफा बाई बड़बड़ी।
पहाट को दव(ठंडी)लगसे बडो मजेदार ,
असी होसे मोरो गांव की सकार।

- स्वाति कटरे तुरकर

***

## कान्हा मोरो सखा

नीलवर्ण लका तू रंगेस
मुरलीधर कान्हा चराचर मा शोभसेस
मनमोहक रूप तोरो रे कान्हा
गोकूलमा बदमाशी तू करसेस।।

बाललीला तोरी होती मनोहर
मनमोहना तू,केशव,माधव तू
देवकी नंदन,ललना यशोदाको
गौळनीनला सतायेस कान्हा तू।।

सुदामा जीवलग मीत्र तोरो
राजा,रंक को नही भेद
गौळनीनकी मटकी फोडके
करेस तून वहा रे छेद।।

पुतना को संहारक तू
शिशूपाल को तारक तू
प्रकांड शक्तीदायक तू
रणभूमी मा पार्थ को सारथी तू।।

कर्ता,धर्ता गीतासारको
विश्वमूख को धारक तू
प्रचंड शक्ती दाता तू
सहस्त्र स्त्रींको तारक तू।।

कान्हा सुंदर नीलमेघ तू
देवकीनंदन कुलभूषण तू
मीराको मेघश्याम रे तू
राधासाठी कान्हा,सखा तू।।

नटखट लीला तोरी न्यारी
खेल पूरो कर आता मूरारी
तोरा पाऊल पडता पावन भयी
कान्हा द्वारका नगरी रे सारी।।

मोरपीस शोभसे डोईला तोरो
मी भक्ती मा लीन भयी रे
तुच पालनकर्ता मोरो
तुच कान्हा मोरो सखा रे।।

चीरहरण द्रौपदी को भयेव
धायके आयेस बंधु बनके
लाज ठेयेस स्त्री जातकी
प्रणाम करूसु वयनी होयके

**- सौ.वर्षा पटले रहांगडाले, बिरसी आमगाव**

## मायबोली पोवारी

**(चाल :-तेरे मेरे ओठोपे)**

माय बाप पोवार sss पोवार जात मोरी।
मी पोवार को टूरा sssमायबोली पोवारी ॥धृ ॥

धारानगरी को राजा भोज ओका आमी वंशज।
सुवर्ण युग की सुरूवात मालवा पर होतो राज ॥
जेको शासन काल मा सुखी होती जनता सारी।
मी पोवार को टुरा sss माय बोली पोवारी ॥१॥

छ-तीश कुर आमरी सेती वैनगंगा क तटपर।
अंबुले,कटरे,कोल्हे,गौतम,चव्हाण, तुरकर ॥
जैतवार,ठाकरे,टेंभरे,डाला,पटले ना चौधरी।
मी पोवार को टुरा sss माय बोली पोवारी ॥२॥

पारधी, पुंड ना फरीद,बिसेन,बघेले,परीहार।
भगत,भैरम, राजहंस, येळे, रंदिवा ना भोयर॥
रहमत, राणा ना राउत,राहांगडाले सेती भारी ।
मी पोवारको टुरा sss माय बोली पोवारी ॥३॥

सोनेवाने, हरिणखेडे,क्षिरसागर ना शरनागत।
रिनाईत,सहारे,बघेले,बोपचे छ-तीसवी हनवत ॥
मोठो जात से पसारो मोठी आमरी बिरादरी।
मी पोवार को टुरा sss माय बोली पोवारी ॥४॥

अग्निकूल राजपूत वंश क्षत्रिय पंवार/पोवार।
कुलदेवी माय कालिका करुन स्मरण बारम्बार ॥
गोड् बोली पोवारी जागो सबजन आतातरी।
मी पोवारको टुरा sss माय बोली पोवारी ॥५॥

- डी.पी. राहांगडाले
गोंदिया

***

## पोवार

यह धरती से अलबेली जहां वैनगंगा की धार
हवा मा गुंजायमान सेती यहा शौर्य का गान।
अग्निवंशीयको शौर्य की गाथा गावसे हर पात
माता गढ़कालिकाको से आशिर्वादको हात।।

आबूपर यज्ञ करीन मुनिन प्रगट्या क्षत्रीय पोवार
अग्निकुंड लक प्रगट भया नाव उनको परमार।
शस्त्रधारी क्षत्रिय प्रतापी चमकसे हातमा तलवार
वध करसे दुस्टो को जनजीवन को बनेव आधार।।

उज्जैनी महान विक्रमादित्य भरतरी लक विख्यात
दसवीं सदीमा बसाइस बैरीसिहन सुंदर नगरी धार
मालवामा मूंज भोज न करिन साम्राज्य विस्तार
भोजशाला बनाइस करिस ज्ञान को प्रचार प्रसार।।

विदर्भपर राज करीन मालवाधिस पोवार सरदार
आया धारलक जगदेव पोवार चालुक्यको दरबार।
विरयोद्धा जगदेव पोवार बन्या चांदा का महाराज
शासनमा उनकी जनता होती बड़ी सुखी खुशाल।।

मालवा पर आक्रमण करीन मुगल न जनता बेहाल
संकट आयेव भारी बिखऱ् गया मालवा का पोवार।
वैनगंगा किनारा पर आया सोड देईन नगरी धार
जंगल काटीन खेती करस्यार बन गया किसान।।

- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी
सिहोरा

***

## "मोरी पाटी"

सुगंध मोरों माटी की ।
पुजा मोरों पाटी की ।।

कसम बाराखाडी की ।
गुरुजी को डाट्न डाटी की ।।

महत्व बेल को तीन पत्ता की ।
जरुरत मोगरा का दुय् तीन फुल की।।

आरती सरस्वती माता की।
गुरुजन को गाथा की।।

कथा जीवन को सुरवात की।
'टिम वर्क' को पाठ की।।

दोस्ती को साँठगाँठ की।
ना तर्क ना वितर्क को याद की।

साथ मोरो माय-अजी की।
उमर सपना देखन की।।

जिद पहलों आवन की।
गुरुजी की शाबाशी खान् की।।

सुगंध मोरों माटी की ।
पुजा मोरों पाटी की ।।

तुमरो संगी -
डॉ.विशाल जियालाल बिसेन
नवी मुंबई (देवसर्रा)

***

## गवळणी

कान्हा सोड पीच्छा तु मोरो आता
फोडेस मटकी तुन रे जाता जाता।।

माय यशोदाला मी नाव सांगु
अज तोरी खोडी मी जीराऊ
अशी उधळूस नोको रे शब्दलता
फोडेस मटकी रे तून जाता जाता।।१।।

नोको कान्हा असो परेशान करू
गौळणीन का कपडा नोको चोरू
नोको धरू कान्हा अशी निर्लज्जता
फोडेस मटकी रे तून जाता जाता।।२।।

यमुना को तट पर खेल तोरो
सखा संगी रे कान्हा तोरा ग्वाला
गाय ढोर से कान्हा तोरी पुरी मालमत्ता
फोडेस मटकी रे तून जाता जाता।।३।।

सखा रे घायाळ भयी मी तोरो भक्तीकी
दर्शन आता तु दे रे का्हा मोला
फुल चढाउसु मी तोला प्राजक्ता
फोडेस मटकी रे तून जाता जाता।।४।।

**- सौ.वर्षा पटले रहांगडाले,**
बिरसी आमगाव

***

## महल

राजा रानी क रव्हन साती, पहले होता महल,
आम आदमी वहॉं जानला, जात होता दहल.

राजमहल मा भरत होतो, राजा को दरबार,
दरबार मा जमा होती, मंत्री,जमीदार ना सरदार.

राजा रानी क् सेवामा, दास दासी, नौकर चाकर,
राजा को दिल बहलावन, दरबारी ना जोकर.

राजेशाही खतम होयेल्, महल भय गया सुनसान,
गाव का लोक करसेती, राजा को गुणगान.

आता महल देखन साती, लोक कहाळसेती सहल,
वोक् लका पुरान् महल मा, रव्हसे चहल पहल.

***

**रचना - चिरंजीव बिसेन**
परमात्मा एक नगर, सुर्याटोला वार्ड, गोंदिया.

## मामा गाव

मस्त आंबाको रस
उ बेहेर को पाणी
आजीमाय सांगत होती
बडी बढीया कहाणी
बडी याद आव से

चीच की चीचोनी
बोर की बोरोनी
पीकेव आंबाको माच
अना आंबा की आंबोनी
बडी याद आव से।।

मोहू की मोठी पार
तरा को पोटमा
बोडूंदा ,फुटी खाजन
जंगलकरको तरामा
बडी याद आव से।।

बेला को झुला
करंजी को झाडको
चना को हूड्डा
खोपडी मा खानको
बडी याद आव से।।

मामी को हातकी
चुलो परकी घीवारी
मामा को घरकी
वा कारी नावकी गोर्ही
बडी याद आव से।।

मोहू की राब अना
हातपरका गाकड
लाटीव बेलना का
निंगरा परका पापड
बडी याद आवसे

हतार का पापड
परसा को पानपरका
सेलवट को रायतो
उबल्या चना हांडीका
बडी याद आवसे

मामा को दुलार
मामी को प्यार
माय की माया
अजी का संस्कार
बडी याद आवसे

वय खेल तपनका
थंडो पाणी करसा को
दुपारी जाय के
नदी मा पोव्हन को
बडी याद आवसे।।

दिवस गया लहानपण का
वापस नही आवत
लहानपण की मस्ती
बचपन की यारी दोस्ती
बडी याद आवसे।।

**- सौ.वर्षा पटले रहांगडाले,**
बिरसी आमगाव

***

## पोवारी सकार

आय गई से पयली सकार,
यकोलक से सबला प्यार ||

नवकल्पना की से दरकार,
आता करो सपन साकार ||

पोवारी सत्याग्रह की नवी सकार,
पोवार समाज ला भेटेव उपहार ||

बनावो बोली-भाषा की माला,
स्वागत करो जो सेत पोवारी का मतवाला ||

पोवारी जागरण की आय सकार,
सब पोवार करो सपन साकार ||

पोवारी कविता की नवी सकार,
बोधकथा,लेख लक साहित्य होये साकार ||

पोवारी ज्ञान परीक्षा लक बढ़े बुद्धि ज्ञान संसार,
चारोड़ी अना समाज मंथन लक जागे नवीन
सकार ||

इतिहास सांगे उत्कर्ष परिवार,
याच आय साहित्य की नवी सकार ||

जागो जागो बंधु सब पोवार,
आय गयी से नवी सकार ||

पोवारी लेखनी लक जागे पोवार,
आय गयी से भाऊ नवी सकार ||

**- प्रा.डॉ.हरगोविंद चिखलु टेंभरे**
मु.पो.दासगाँव ता.जि.गोंदिया

***

## !!पोरा झळती!!

झळझळती पाणी पळती
मोरो बैलको पुढ आरती ।।
सांग सांग रे तु सत्तरसोळा
बेलपात्ती तोरण का झाडा।।

लाहान मोठो होती गां सेरी
बांधीसेत गां मांडो को डेरी।
वोव खासेत पाला पाचोला
तोरो गुरू आय मोरो चेला ।

लाहानशी टटास टसटस कर्
पंख झाडसे गां वारेव वृक्षपर !!
कोणीला भेट्या एक एक पंख
मोरो बल्कीला भेट्या पाँच पंख !!

बैलपोरा को आयेगा मोठो सण
आंगणमा करो सडा सारवण!!
आई बहिणी त सिंगार करसेती
मोरो बैलकीच करो गां आरती !!

**प्रस्तुति- सरोज सिंह बिसेन**
निवास- मोहगांव खुर्द
जिला- बालाघाट
कसोतंत्र-८२२४८१३९३६

***

## ओवी

पहिली मोरी ओवी बाई मातापिता को चरणों मा
सेवा करो तुमि उनकी बाई धावरे बाळ विठ्ठला।

दूसरी मोरी ओवी बाई, पूजनीय गुरूजनला
दूर करिन अज्ञानला ,धावरे बाळ विठ्ठाला।।

तिसरी मोरी ओवी बाई, पंढरी को पांडुरंगला
जनी संग दरण दरीस ,धावरे बाळ विठ्ठला।।

चवथी मोरी ओवी बाई, राम लक्ष्‍ुमनला
आज्ञाकारी भाई बनो धावरे बाळ विठ्ठला।।

पाचवी मोरी ओवी बाई अंजनी को सुतला
लंकादहन करिस वोन धावरे बाळ विठ्ठला।।

सहावि मोरी ओवी बाई तुलसी वृन्दावनला
दिओ लगाओ रोज बाई धावरे बाळ विठ्ठला।।

सातवी मोरी ओवी बाई गढ़कालिका माताला
कुलदेवी आय आमरी धावरे बाळ विठ्ठला।।

आठवी मोरी ओवी बाई राजा विक्रमादित्यला
न्यायप्रिय राजा बाई धावरे बाळ विठ्ठला।।

नववी मोरी ओवी बाई आमरो राजा भोजला
ग्रंथ लिखिन चौऱ्यांसी  धावरे बाळ विठ्ठला।।

दहावी मोरी ओवी बाई निसर्ग माताला
झाड़ लगाओ आता बाई धावरे बाळ विठ्ठला।।

**- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी**
सिहोरा

***

## श्रावण

हासरो नाचरो थोडोसो लाजरो
नाचत आयेवं श्रावण साजरो।। ध्रु।।

सोनो को पायकी ढग की चाळ बज्
मातीमा सुगंध दाटं जसो कस्तुरिको
मेघमा दिससे कारो निळो घनश्याम
टीप टीप बज पाणी सुर बासुरिको।।१।।

रमत गमत रान हिवरो फुलावत
धराला शालू शोभ् नक्षीदार येवं
लपत छपत आयेव् अमृत शिपत
श्रावण मोरो लग् जसो कृष्ण देव ।।२।।

आइसे इंद्रधनू येव अभार रंगण
बांधीसेस देवरायान सतरंगी तोरण
ढुक ढुक देखसे तिरीप कमान धरन
आईसे श्रावण जीव धराला फोळण।।३।।

नदीला आयेव पुर नाचत वा चल्
रूनझुन करत झरा मतवालो झरं
पक्षी को किलबिल मधुर गुंजण
घार वा आकासमा भरारी मारं।।४।।

हिवरी भई खेती किसान हरसायेव
सन त्योहार लेकर श्रावण आयेव
दिससे बरसात मा ज्योतिर्गमय देव
मनमयूर नाचं मोरो आनंद छायेव।।५।।

**- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी**
सिहोरा

## “ मोरी माय "

मोरो माय न नही शिकाई रहेस
मोला धंधाकाम
पर यव शिकाइस बेरा आयी त
कसो करण सब काम ।।१।।

मोरो माय न नही शिकाई रहेस
रोटी बनावनला
पर रस्ता देखाइस, आपलो
मेहनत की रोटी कमावनला ।।२।।

मोरो माय न नही शिकाई रहेस
दरुजा पर चौकचांदन काढनला
पर यव शिकाइस् की
दरुजा पर कोनिभी आयव, त उनको मान
सन्मान करनला।।३।।

मोरो माय न नही शिकाई रहेस
शिलाई बुनाई करनो
पर यव शिकाइस की
रिश्तोनातो की दोरीला
कसो मजबुत ठेवनो ।। ४।।

मोरो माय न नही शिकाई रहेस
येन जमानो मा कसो रव्हनो
पर यव शिकाइस की कोनिपर जुलुम नही करन
अखिन आपलोपर भयव त
चुप भी नही रव्हन ।।५।।

**- सौ. श्रुती टेंभरे बघेले**

***

## आरती -माय गढ़कालीका की
(चाल: ओम जय जगदीश सहारे)

जय कालीका माता, मैया गडकालिका माता ।।
आरती करू माय तोरी ,तू सेस सुखदाता ।।धृ ।।

ब्रम्हांड़ की रखवाली तू माता, धारानगर आयी ।।
धारानगर को राजा भोज, उनकं मन भायी ।।जय।।

तू कालिका तूच भवानी, तूच दुर्गा माता।।
सुख दायनी माय मोरी,तूच सेस दुख हर्ता ।।जय।।

राजा भोज का वंशज, पोवार की जाती।।
शरनमा आया तोर,करू तोरीच आरती ।।जय।।

सुंदर सिंहासन तोरो, झलके माणिक मोती।।
ध्यान लगज़ासे तोरो सुधबुध बीसर जाती ।।जय।।

बेलफुल नरीयल चढावुन, अगरब-ती संगमा।।
कृपा होय जाय तोरी, रंगू न भक्ती क रंगमा ।।जय।।

वैनगंगा क ओटामा बस्या, पोवार,छतीश कुर।।
सबको कल्याण करजो माय,नोको करजो दूर।।जय।।

भक्त तोर चरनमा आया,मैया भक्ती करसेती।।
करजो सबपर छाया,मैया करून तोरीच आरती॥जय।।

**- श्री. डी. पी. रहांगडाले**
गोंदिया

***

## माय गडकालिका

(चाल:- मां ज्वाला तेरी )

जय अंबे माय गड कालिका नमन तोला बारम्बार
भक्त की तू रखवाली से २ //
सिंहासन पर चढी भवानी कर सोळा सिंनगार SS
महिमा अजब निराली से //धृ //महिमा........

कोणी कसेती माय दुर्गा कोणी कसेती भवानी /
धारानगरी मा आसन तोरो चंडिका कसेत कोणी //
भक्त आया तोर चरनमा करदे बेडापार SSSS
तोर बिन कोन वाली से २ //१//सिंहासनपर......

राजा भोज की कुलदेवी जेका आम्ही वंशज आजन /
पोवार जाती आय आमरी सेवा तोरीच कर सेजन //
तोर द्वार पर मस्तक ठेऊ ना बेलफुल चढावू SSSS
हात आरतीकी थाली से २ //२// सिंहासनपर......

वैनगंगा मा ओटामा बसीसे पोवार की जाती/
रातदीन वय गावसेती माय तोरीच आरती //
नोको दुरावजो माय आमला गुण गावुन तोरो SSS
पोवारी च मायबोली से २ //३//सिंहासनपर.......

धरती क कोना कोना मा बसी पोवारकी जाती/
बोलसेत वय पोवारी ना करसेती तोरीच आरती //
आशीर्वाद सबला देजो करूसू बीनती बारम्बार SSS
तुच भक्त की रखवाली से २ //४//सिंहासनपर.....

**- श्री. डी. पी. रहांगडाले**
गोंदिया

***

## माय बोली

पोवार को वंशज आव, मी पोवार जात मोरी।
सबदुन प्यारी सबदुन न्यारी,माय बोली पोवारी।।
धारानगरी आमरी, राजा भोज का आमी वंशज।
सुवर्ण युग होतो,तब पुर मालवा पर होतो राज।।

वैनगंगा क तटपर बस्या,आमरी छतीश सेत कुर।
खुदला पोवार कसेजन ना मायबोली पासुन दुर।।
बाहेर की सोळो, घरमा भी पोवारी नही बोलजन।
याचका आमरी मायबोली नसलो ढोल पिटसेजन।।

शाळा मा सीकसेजन हिन्दी, इंग्लिश ना मराठी।
चलो उठो ना आग्रह धरो पोवारीच बोलनसाठी।।
आमी पोवार खुप सीक्या, अधिकारी बनगया।
अलगलग बोली बोलन बस्या,पोवारी भुलगया।।

शहद दुन मिठी ना बोलनला सोपी से मायबोली।
आमीच आपली बोली बिस-या कोन रहे वाली।।
हरदम आपली बोली बोले पाहीजे रवं घरं या दार।
तबच होय सकसे आपलो मायबोली को उद्धार ।।

मायबोली पोवारी देवो मान नहीत होये पच्याताप ।
समोर आवनेवाली पिढी नही करन की माफ।।
मनून शिकावो पोवारी,बोलो पोवारी,मनमा भाये।
पर बिश्वास से माय बोली पुर भारतमा बोले जाये।।

**- श्री. डी. पी. रहांगडाले**
गोंदिया

## गवळण

(चाल..खेल खेले हरि कुंज...)

वृन्दावनमा  बज् बासरी
राधा आयकनसाठी बावरी।।धृ।।

नाद वेनूको मन मोहसे
जितन उतन मोहन दिससे
वकनादमा् रवसे हरि।।१।। राधा...

बडो निरालो प्रेम वको
उनक् प्रेमला टोको नोको
दिव्य प्रेमला जपो उरी।।२।।राधा...

दहिदूधको मोल सांगीस
वकसाठिच मटकी फोडीस
वकि चोरीबि होती बरी।।३।।राधा..

कान्हाकि गोडी सबला होती
वकि लिलामा् सेवा होती
कान्हाकि बात निकली खरी।।४। राधा..

एकएक गवळण ज्ञानी होती
वकी भक्तीकि आस होती
बात समजो उनकि नरनारी।।५।।।
राधा------

**- पालिकचंद बिसने**
*** सिंदिपार(लाखनी)

## मोर(चाल-नाच रे मोरा)

चल रे बंड्या ,गावखारीमा
मोर आया देखनला चल//धृ//

मोरयकि फेरी आयि से
अमराईखाल्या नाचसे
पिसारो देखन,तुराबि देखन २
चल रे लहानस्या चल$$ //१//
चल रे बंड्या----

राष्ट्रीय पक्षी आमरो रे
कानाक् मुकुटमा मोरपिस रे
रंगीत डोरो,पुस्तकमा् न्यारो २
पिस् धरनसाठी चल //२//
चल रे बंड्या--

बादलमा खुशी, होसे वला
वकवानि सुंदर ,पिस आमला
उडतो मोरयको रुप,उड्यानखटुलोको२
पक्षीको राजा, देख चल$$//३//
चल रे बंड्या----

जंगलमा् संकट बढीसे
पिसयसाठी वकि, सिकार होसे
मोठाआमी होबीन,सरकारमा् जाबिन२ अमराई
बचावन चल$$ //४//
चल रे बंड्या---

पोवारक् आमी टुराटुरी
निसर्गराजाकि आस भारी
शारदामायको मोर,देये बुद्धिला जोर २
संस्कृती बचावन चल$$//५//
चल रे बंड्या ,गावखारीमा
मोर आया देखनला चल।।

**- पालिकचंद बिसने**
*** सिंदिपार(लाखनी)

# पोरा

मोर् भारत कि ,बात निराली
संस्कृती से, सबदुन न्यारी
पोरामा् बैल,गायकि दिवारी
हर सण सेती, मुल्यलक भारी //

खेतमा्बैल ,राबराब राबसे
कास्तकार उपकार ,पोराला फेडसे
शिंगला बेगड ,झुल घा्लसे
घोल्लर गरमा् मल्हार गावसे//

कवळीकि माळ गरामा् सोबसे
सर्जाराजाको तोराच चोवसे
गावमा् फेरी ,गजबज लगसे
बंड्याक् टोपीला रंगच चळसे//

पुरणपोळी करंजीको
बैलको पाउनचार
पत्राळीमा् खासे राजा
खुशीलक् मनला बार//

कृतज्ञता भुतदया,
समाजिकरणबि मुल्य
रक्षा करो सणयकि
झळती से साहित्य,//

**- पालिकचंद बिसने**
सिंदिपार(लाखनी)

***

# आमरी मायबोली पोवारी

धाकड़ जात आम्ही पोवार
मायबोली पोवरी आम्हरी शान
बोलताना लगसे मायको दुलार
चारी दिशा करु मी गुणगान

मायबोली मोरी पोवरी
एकता को गुंफसे मोती
समाज कल्याण को महामंत्र
हर जन मा प्रकाशित ज्योती

आपुलकी को सुगंध
समाजहीत को अंकूरीत बीज
मायबोली पडता कानपर
सामनेवाला नही लग दूज

धरती मायको गोदमा
रुझावसे हर एक जीव
मायबोली पोवारीको गोदमा
हर एक पोवार शिव

सूरज की सोनेरी किरण्
पुरो सौरमंडल को अभिमान
तसो हर पोवार साठी
मायबोली पोवरी को स्वाभिमान

**शेषराव वासुदेव येळेकर**
सिंदीपार

## बिसरो

पोवारी कविता(दशाक्षरी)

बिसरो पेहराऊ भाषाला
आवसे सुंदरता साजरी
सरी, कुंडल, चिताईत मा
नारी दिससे मोठी गाजरी ।।

प्रज्ञा, करुणा, शील त्रिगुण
अंतर्मनला से गुणकारी
सोनो-चांदी बिसरो कि हाव
जीवन होसे प्रलयकारी ।।

तमयुगला काटनसाठी
उजारो होसे मोठो जरुरी
इनसानियत से बिसरो
तीन लोक मा बिचारधारी ।।

रास्टभक्ती भरेव हिरदा
बिसरो से येव हितकारी
सर्वधर्म समभाव देसे
एकी को भाव अखंडकारी ।।

साप, मोरपंख को बिसरो
परमपिता परमेश्वरी
बिसरो इन को बिसरो से
सुंदर बोलीभाषा पोवारी।।

**- वंदना कटरे**
"राम-कमल" गोंदिया

***

## माय वैनगंगा

(तर्ज: एक परदेशी मेरा दिल ले गया...)

पुळ्होकी सोचो असी आमला कव्हंसे
माय वैनगंगा नितनेम बव्हंसे ॥धृ॥

कहीं उथर कहीं खोल बहाव नागमोडी
कहीं चर्हाटभर तं कहीं कोसभर चौडी
कहीं बडी शांत कहीं भरधाव से ॥१॥

जंगल खेत दरी माल् जासे झुळझुळ
ममताभर्या गीत गासे मंजूळ मंजूळ
नदीनाला समावत पुढो धावंसे ॥२॥

भेद नई करं कोणी कसाबी रवत
तृप्त भया खेत पशू झाड ना गवत
तहानेव जीव यहां पानी पिवंसे ॥३॥

ढोर कपडा गाळो धोवनो खेल खेलनो
रेती पानी गिट्टी माती घर बनावनो
येको तीर पर बसेव मोरो गाव से ॥४॥

पकं सेती फल फूल भाजी ना कठान
काठ येको बजार ना जतरा को स्थान
पासना वरीकी संस्कृती समावंसे ॥५॥

कमी नई पड़ येको पानी बारोमास
येको कोर्यामा आवंसे सबला उल्लास
पयसिंधू वैनगंगा सबला पावंसे ॥६॥

**(१. पासना वरी की संस्कृती = नदी को उगम पासना तोंडवरी को काठ पर की संस्कृती**
**२. पय = नीर अना क्षीर : यहां नदी को नीर ला माय को दुध वाणी महत्त्व विशद होय रही से)**

**- डॉ. प्रल्हाद रघुनाथ हरिणखेडे (प्रहरी)**
उलवे, नवी मुंबई

***

# राजा भोज आल्हा

करुसु वंदन श्री गणेश ला,
सरस्वती ला करू प्रणाम,
गड़काली माता ला सुमरू,
राम-सिया ला करू प्रणाम,
भुल, चुक ज्याभी होय जाये,
करन क्षमा बड़ेत गुनगान,
असो पराक्रमी भयो ना कोई,
फुलराज पटले करसे बखान,
श्रोतांगण को चरणमा आवू।।

धार नगर का राजा होता वय,
उज्जैन जन्म भूमी रही,
चक्रवर्ती सम्राट बन्या जो,
राजा भोज कव सेती यहां,
इतिहास मा नाव से इनको,
कुल भयो क्षत्रिय पोवार,
इनको जसो नहाय जगमा,
विद्वान लका भरयो दरबार,
धार नगर का राजा होता वय।।

सिंधुराज का बेटा होता वय,
माताजी सावित्री रही,
मुंजदेव होता काका उनका,
मोठो भाई द्रूशल ला कहाय,
लीलावती होती पत्नी उनकी,
महाकवी कालीदास ला हराय,
कवयित्री होती राज दरबार की,
शास्त्र वाद विवादों मा हराय,
सिंधुराज का बेटा होता वय।।

राजा भोज की कीर्ति से जगमा,
येको जसो कोई दुसरो नहाय,
चौरासी ग्रंथ लिखीन इनन,
संगीत कला का प्रेमी कहाय,
भोजप्रवंधनम आत्मकथा से,
भोजनाथ धर्मनिष्ठा प्रतीक,
भोज शाला को निर्माण करीन,
वांगदेवीला करसेत प्रणाम,
केतरी लड़ाई लड़ीन इनन।।

पंद्रह वर्ष मा राजा बन्या वय,
मालवा मा राज्यअभिषेक भयो,
होता शुरवीर अन परम दानवीर,
शिवाजी का भक्त कहलाय,
सरस्वती माता का उपासक,
बुद्धिमानी राजा कहलाय,
सरस्वती न ग्यान देईसेस,
महाधिराज परमेश्वर कहाया,
बहुत नाव लक होता अलंकृत।।

पोवार का जो राजा बन्या ता,
राजा भोज से उनको नाव,
चार दिशा मा राज्य फैलाईस,
चक्रवर्ती मीली पहचान,
सत्य, प्रेम का होता पुजारी,
ज्ञान, दान का वय सरताज,
भोपाल मा से प्रतिमा उनकी,
भोजपाल ला भोपाल कहाय,
पोवार का जो राजा बन्या ता।।

**- सौ. लता पटले**
दिघोरी, नागपुर

***

## ।। जय राजाभोज ।।
## । आराधना गीत।।

(चाल-देव तुजला मानिते ताल- रुपक )

राजा तुम्हला मानुसू मी,पोवार समाजको प्रतापी विर
राजा जानुसू मी।।धु।।

माता तुम्हरी सावित्री रानी
पिता सिंधुलराज देव ज्ञानी
बुद्धिवान गुनवान ,सौर्यवान मानुसू मी।।१।।

८४शीं मंदिर को निर्माता
८४शीं देवी की भक्ती कर्ता
चौऱ्याशी ग्रंथ को ,रचियता मानुसू मी।।२।।

आम्ही पोवार धारकर
आम्हरी संस्कृती से सुंदर
ज्ञानवंत किर्तीवंत, परमार वंशला मानुसू मी।।३।।

श्रम प्रतिष्ठा को बलशाली
असो आम्हरो राजा बली
दानसुर जनउधारक, प्रजापती मानुसू मी।।४।।

पोवर समाजकं प्रगतीसाठी
विषमता दुर करनसाठी
मा गडकाली यश देय,असी क्रुपा मानुसू मी।।५।।

**यादोराव चिंधुलाल चौधरी**
(वाय सी चौधरी) गोंदिया

***

## !! विररस कविता!!

अब्रुदगीरी पर पोवार पँताका लहराता है,
हम पुजारी गडकालीका हमारी माता है!
राजाभोज के आदर्शो पर चलते हैं हम,
पोवार पंवार समाज के भाग्यविद्धात है!!

सात संमुदंर पार सुगंध जीसकी जाती है,
दुर दुर तक सुप्रसिद्ध जीसकी छाती है!
माहाराजा भोज की वंसावली के है हम,
अग्निवंशी पोवार पंवार हमारी जाती है!!

जो समाज बेसहारा की करे रखवावाली ,
दुसरो पर अन्याय होता देख दागे गोली !
भारत देश हमारा खेत खल्याण है यारो ,
उस खेत खलीयाण के हम सब है माली !!

बलिदान दिया पुर्खोने व्यर्थ नही जाने देगें,
समाज के खातीर तो अपना लहु बाहा देगें !
पोवार समाज ऊत्थान के लिए तो तैयार है,
सर कटवा सकते हैं पर ना कभी झुकने देगें!

पोवार समाज की गुंज दुर दुर तक जाती है,
सब दिनदुखीयो को साहारा देना भाती है!
पोवार समाज एकता परिवार एक झाड है,
हिरदीलाल ठाकरे उस झाड की पाती है!!

!!! कवी !!!
**श्री हिरदीलाल नेतरामजी ठाकरे**
पोवार समाज एकता मंच परिवार पुर्व नागपुर

***

# कास्तकार

सबकी भूख को निवालों की दरकार आंव,
मी भारत माय को बेटा, कास्तकार आंव!

बड़ीच कड़ी रहव से मोरी ड्यूटी,
नहीं रहव कोई तनखा, अना छुट्टी!
तीज तिहार अना सब दिन काम करूसु,
मी धरती पुत्र मेहनती कामगार आंव!

फसल लहलहाई मोरो पसीना को जल ल,
अन्नपूर्णा का सब भंडार भरिन मोरो हल ल!
मोरी मेहनत ल से येव जगत सब सम्पन्न,
मी यहाँ सब जिन्दगियों को दारोमदार आंव!

न कपड़ा लत्ता, न साजरा मोरा केशु,
धुल्ला ला बिछाय के तपन पंघर लेसु!
न कहीं घुमनों फिरनो, न कोई आराम,
मी अन्नधन का ढोला को पहरेदार आंव!

दुनियादारी की चकचौन्ध ल दूर सेव,
कभी सूखों, कभी बाढ़ ल मजबूर सेव,
लूट लेसेति कभी मोला सब सेठ ब्यापारी,
पुण्य की खेती को हाथ भयो लाचार आंव!

कसेति मोला अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी,
पर मोरो तन मा मांस नहाय, सेती बस हड्डी,
मोरो येन पौरुष की खबर जोकोमा भी छपी,
पुरो फाड़ दिय्यो गयो मि वू अख़बार आंव!

सबकी भूख को निवालों की दरकार आंव,
मी भारत माय को बेटा, कास्तकार आंव!

**- तुमेश पटले "सारथी"**
केशलेवाड़ा 【बालाघाट】

***

# मोरो देश

उत्तर मा बसी से उत्तुंग हिमालय ,
दक्खिन मा हिन्द महासागर से
पूरब बसी सेत सात बहिनिया
पश्चिम सोमनाथ को मन्दिर से ।।

शून्य को खोज आमी करया
जग ला सभ्यता को पाठ पढ़ाया
सूरज , पृथ्वी , ग्रह अना चंदा को
सबले पयले आमी दूरी बताया ।।

से विलक्षण प्रतिभा, येने देश मा ।
अनेकता मा एकता को विचार से
बच्चा - बच्चा मा श्रीराम बसी से
माय ,बहिन ,बेटी मा देवी की बहार से ।।

राम ,किशन , बुध्द को यहां जनम भयो
विक्रम ,सिन्धु , भोज यहां राज करी सेत
विवेकानंद , राममोहन संगा मिलकन
सनातन धरम को परचार करी सेत ।।

रामायण अना ,गीता वैदिक ग्रंथ मा
सकल जीवन को सार भरयो से
चाणक्य अना विदुर की नीति मा
धरम , करम को व्यापार रचयो से ।।

धन्य - धन्य ओ ! मोरी भारत भूमि
निछावर करसू तोला , मोरो तन , मन
तोरी माटी को कण - कण सोन्नो से
तोला पायके धन्य भयो आमरो जीवन ।।

**रचनाकार - पंकज टेम्भरे 'जुगनू'**
परसवाड़ा , बालाघाट ,म.प्र.
सम्पर्क - ७५८३८६०२२७

## कास्तकार
## विधा - गीत

आपरी माय को सीना चिर , कर देसे आर - पार
कसि विडंबना धरा पूत की, झर झर रोव् से काश्तकार।।

सूरज को पहिरे उठ जावसे
भरी तपन मा काम करसे
सब मौसम मा डट्यो रहवसे
कारी रात मा बी नइ डरावसे ।

विधाता को यो कसो न्याय से ,भूखो रवसे यो दानदार
कसि विडंबना धरा पूत की, झर झर रोव् से काश्तकार ।।

जिम्मेवारी को भार ढ़ोवसे
बाढ़, सूखो मा संयम रखसे
दूसर जन को पोट भरसे
ऊंचो समाज की इबारत लिखसे ।

राजनीति को येन शोर मा ,दब गइ ओ की चित्कार
कसि विडंबना धरा पूत की, झर झर रोव् से काश्तकार ।।

जमीन गिरवी रख मान बचावसे
आपरी बेटी को बिहाव रचावसे
आपरो हक की लड़ाई लड़वसे
आपरो सिना मा गोली खावसे ।

सेठ ,पूंजीपति अन सहूकर , सब जन करसेत अत्याचार
कसि विडंबना धरा पूत की, झर झर रोव् से काश्तकार ।

साल भर लक मेहनत करसे
रुपया पर ,आना चार मिलसे
डोस्की मा हाथ धर रोवसे
मजबूर होव् फांसी फंदा चूमसे ।

अन्नदाता की नहाय चिंता , कसो मच गयो हाहाकार
कसि विडंबना धरा पूत की, झर झर रोव् से काश्तकार ।।

**रचनाकार - पंकज टेम्भरे 'जुगनू'**
परसवाड़ा , बालाघाट ,म.प्र.

***

## अजी जहेर खाओ नोको

दुख मन पर लेओ नोको
पाठ संसार ला देखाओ नोको
तुमरो संग मा आम्ही सेजन ना अजी
जहेर खाओ नोको ||१||

भई बिह्या लायक मोठी बाई
दहेज साठी नाहात पैसा काही
असा लाचार होवो नोको
टोपी गहान ठेवो नोको
बाई तैयार से ना, लड़न साठी अजी
जहेर खाओ नोको ||२||

कर्ज धरकर दिवारी आई
पर यन साल भी फसल नही भई
नवा कपड़ा लेवो नोको
काही खानला देवो नोको
पाणी पिय कर दिवारी करता ना अजी
जहेर खाओ नोको ||३||

से संग मा सोनो सारखी खेती
घाम निकालकर पिकावता मोती
तीर्थ यात्रा ला जाओ नोको
चुनो खीसा ला लगाओ नोके
आमरो रुप मा देव ला देखो ना अजी
जहेर खाओ नोको ||४||

दुख मन पर लेओ नोको
पाठ संसार ला देखाओ नोको
तुमरो संग मा आम्ही सेजन ना अजी
जहेर खाओ नोको

**संतोष बिसेन (सोनु)**
मु. दासगॉव खुर्द (गोदिया)

***

## कायला देयात दारुड्याला

बेटी कसे बापला,
आयको तुम्ही मोरो बात ला
सांगु गर्हाना कोनला,
कायला देयात दारुड्याला

किस्मत मोरा फुट्या,
गणगोत सब रुठ्या
असो लग से मोला,
हाथ-पाय मोरा टुट्या

तुम्ही कसेव सुखी रव्ह,
मारपीट मिन् सहेव
पर येको घर आय के,
मोरो जिव को नाश भयेव

कसो सांगु मोरो दुखड़ा,
नाहात टुरा-पोटा ला कपड़ा
दिनभर तपन मा,
वय फिर सेत उघड़ा

एकटी को कमाई पर,
येव चल से परीवार
नाहाय अजी मोला,
येको थोड़ो सो भी आधार

कसो चले येव संसार,
असी भई मी लाचार
येला नाहाय अजी,
मंग-पुढ् को बिचार

काम धंदा काही नही कर,
निस्तो सोयेव रव्हसे
काही कसु येला त,
मोला मारन धावसे

**संतोष बिसेन (सोनु)**
मु. दासगॉव खुर्द (गोदिया)

***

## कोरोना, कोरोना, कोरोना...!

कोरोना कोरोना कोरोना कोरोना।
जित उत देखो रोना से रोना ॥
जरा सी राखो तुम्ही सावधानी,
नोको येला भाऊ मोरो डरो ना ॥

आपरो ख्याल तुम्ही खुद राखो,
बाहेर कि कोनी चीज नोको चाखो।
दूरी बनाओ जी सब लक भाऊ,
जागो जगाओ अन नही तुम्ही सोना।
जित उत देखो.............
कोरोना कोरोना...........

आपरो हाथ ला साफ साफ राखनो,
भीड़ भाड़ मा नहाय से जावनो।
गरारा गरम पानी को दुई बार कर ल्यो,
राखो साफ धूप मा डाको बिछोना।
जित उत देखो..........
कोरोना कोरोना........

डेटाल फिनाइल को पोछा लगाओ,
बुखार खोखला मा डॉक्टर ला दिखाओ।
हिम्मत ला राख ल्यो सबर नहीं खोना ।
जित उत देखो.........
कोरोना कोरोना.......

हाथ नोको धरो मास मटन ला,
हिस्सा बनाओ घर को कढ़न ला ।
जहर मिले असो बीज काहे बोना ।
जित उत देखो..........
कोरोना कोरोना..........

**अलका चौधरी**
बालाघाट

***

# कलयुग में देवता
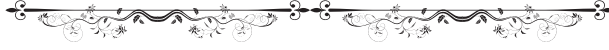
मेरे नाम पर-रोज ये होते दंगे फसाद
कहीं निकलती तलवारे,
और कल कल बहता खून
बच्चे हुए अनाथ, पत्नी हुई विधवा,
जिन्दा जलते इन्सान,
इन्सान बना हैवान II

मेरा घर बसाने के लिए, मेरा ही घर तोड़ा,
और उठा राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद विवाद

मंदी के दौर में भी,
मेरे नाम लोगो का चलता गोरख धंधा
क्योंकि ये जग अँधा II

इतने रावण अब इस धरा पर,
कि राम कहाँ से आएंगे
अब दिन दूर नहीं कि रावण ही रावण को मारेंगे II

मेरे नाम पर शुभ दीपावली
अब शुभ कहाँ,
पटाखों से ध्वनि का शोर,
वायु में प्रदूषित गैसों का जोर,
ग्रीन हाउस जैसे बढाकर,
ग्लोबल वार्मिंग की ओर II

मिटटी की मूरत बनाकर,
एक, दो और नव दिन तक पूजते है मुझे I
साम्प्रदायिक सौहाद्र बढाते, मनोरंजन करते,
सुख शांति और विश्व शांति की प्रार्थना करते I
इन त्योहारों की धूम में, पंडालों में जगमगाती रौशनी
बिजली की चोरी और फिजूल खर्ची,
कहाँ से होगी इसकी भरपाई
कोई तो हल बता दे मेरे भाई II

तालाबो, पोखरों, नदियों आदि में
मूर्ति विसर्जन करने जाते,
लाखो जीव जंतु, इस मूरत के
जल प्रदुषण से मर जाते II

बी.ओ.डी. का जल में बढता स्तर
लेड-पेंट और केमिकल्स की भरमार,
मछली और जलीय जंतु का साँस लेना दुभर II

मेरे नाम पर कितने पशुओ की चढ़ती बलि
अस्थि विसर्जन, फूल- माला, पवित्र स्नान
आज हर नदियाँ होती मैली II

मेरे नाम पर ही होता ये सारा कारोबार,
और अंत में मुझे ही कहा जाता I
हे भगवान, हे अल्लाह, हे गाड, हे वाहेगुरु,
अब तू ही इस जग का मालिक है II

**डॉ.दिनेश बिसेन**
(आई. आर. एस.)

# मोवई

लाख्तखाल को घात मा
डोबरा जवर होता ढोकरू.
आमी जाजन बांधी बांधी,
कुदत धरनला सोनपाखरू.

खेत को बांधी को धुरोला
देखजन मोवई को झाड,
से का वोकोपर- बसेव्ह वू
हिरवो पाना को मुजाड.

माचीस की डबी खिसामा
गोयेव रव्ह वॊला सूत.
सोनपाखरू को आस मा
लंग-लंग फिरजन बहुत.

बडी रच जन व्यूहरचना
धरुनसात वॊला एकटोला,
भरकन पानासंग डबीमा
मग गोवजन वोको गरोला.

कधी कधी भेट जाय मोठो
त् होत होती खुशी अपार.
असो होतो लहानपन को
आमरो खेलन को संसार.

कवि
**श्री देवेंद्र चौधरी, तिरोडा**
मो. 9923141263

# बलिदान

अठरासव् सतावन् मा प्रतिरोध की शाई.
बहुत लढ्या तात्या टोपे अना लक्ष्मीबाई.

जन्मसिद्ध से मोरो हक् स्वातंत्र्य को खास,
वू भेटावूनच नही सोडन् को मी काही.

नेताजी सुभाष संग वा लक्ष्मी सहगल,
सुरू करीन आजाद हिंद फौज की लढाई.

अहिंसा की बनाय् शस्त्र आयेव जब गांधी,
त् घर-घर जग्या दिप देन् फिरंगीला बिदाई.

भगतसिंग सुखदेव ना राजगुरुको बलिदान,
हरदम याद ठेवो जी हिंदुस्थान का भाई.

उन्नीसव् बेचालीस मा कहीन चली जाव्,
पाच साल बाद आजाद भयी भारत माई.

कवि
**श्री देवेंद्र चौधरी, तिरोडा**
मो. 9923141263

# दीपोत्सव विशेष अष्टाक्षरी काव्य

## दिपावली

दिपावली सुनेहरी
खुशी मोहक निराली
चौक चांदन रंगोली
प्रकाशित ज्योती वाली

हर घर लिपापोती
रंग रंगोटी निराली
राम पधारे अंगना
योव दिस् दिपावली

मन ज्योती जलाकर
बाधा कों नापते चलु
पुजा करु प्रकाशकी
दिल दरवाजा खोलु

ध्येय की पुर्व पताका
हारु कभी ना जीवन
नव उत्साह जगाके
प्रफुल्लित ठेवू मन

दिप मनमा जलाके
खुशहाली भरुसू मी
दिपावली की सबला
देसू शुभकामना मी

**शेषराव वासुदेव येळेकर**
सिंदीपार भंडारा
दि 03/10/2020

## दिवारी

पाच दिनको एकच
त्योहार से भारत मा,
नाव वोको से दिवारी
खुशीच खुशी मन मा.

धनतेरस पहिलो
पहाटला होसे स्नान,
नरकचतुर्दशी ला
साफ सफाई मकान.

तिसरो दिवस होसे
धन संपत्ती की पूजा,
येन दिन करसेती
सब घर लक्ष्मी पूजा.

दीपोत्सव बी कसेती
करसेती बली पूजा,
बळीराजा वानी नही
भयेव जगमा दूजा.

भाई दूज त्योहार को
पाचवो दिन रव्हसे,
आखरी दिन बहीण
बंधूराया ओवाळसे.

**- चिरंजीव बिसेन**
गोंदिया
मो. नं. ९५२७२८५४६४

## पोवारी दिवारी

पाच दिवस मनाओ
घरमा आनंद भारी
सब त्योहार को राजा
सण पोवारी दिवारी ॥धृ॥

धनतेरस सुदिन
भरभराट धन की
सुख सेहत सुबत्ता
समृद्धी सब जन की ॥१॥

नवचैतन्य की आभा
नरकासुर मर्दन
घरदारकी सफाई
दु:ख दैन्य को हरण ॥२॥

वाणी गण लक्ष्मी पूजा
वस्त्र दिवा नक्षी रंग
जल्लोष आतिशबाजी
गोड पक्वान्न खमंग ॥३॥

खेलं गोधन मंडई
पूजा बळी गोवर्धन
भाऊ बहिण को नातो
माया अतूट बंधन ॥४॥

**प्रा. डॉ. प्रल्हाद रघुनाथ हरिणखेडे (प्रहरी)**
उलवे, नवी मुंबई
मो. 9869993907

## पोवारी दिवारी

सण आयेव दिवारी
करो घर झाळा झाळी
घर करो साफ सुफ
लगावो दिवोकी ओळी

संस्कृती चली आयी
पाच दिवस दिवारी
पोवारीको बलीराजा
जनाव सेती डोकरी

गोधन पुजा, मंडई
पोवार की ललकारी
राजा भोजका वंशज
माय बोली से पोवारी

मंग भाऊबिज आयी
भाई ओवाळ से बाई
कर्ज फेळसे राखीको
खुश मनमा वा भई

होसे दिवोको उजाळो
अंधारो पराय जासे
बढसे धन संपदा
जिवन खुशाल होसे

**डी. पी.राहांगडाले**
गोंदिया

***

# दीपोत्सव विशेष अष्टाक्षरी काव्य

## दिवारी

रावणला मारकन
अयोध्यामा आया राम
लक्ष दीप जर उठया
इंधारोको नहीं काम

पाच दिवसको सन
खुशिमा रमसे मन
लक्ष्मी माता पूजसेत
वर्षा होसे पैसा धन

गायखुरी को चौऊक
जातो, उखरी, घरमा
गोधनकी होसे पुजा
गावंमाको आखरमा

बळीराजा घोनाडको
राणी घड्या दाभटकी
पूजा डोकरी की कन्या
खीर नवो चाऊर की

लक्ष ज्योतीकी आरास
भाई बहीण को प्यार
ज्ञान व्यापसे आकाश
दूर होसे अंधकार

**- सौ. छाया सुरेंद्र पारधी**

## उत्सव

आयो दिवारी त्योहार
दिवोकी ज्योती लगावो।।
बांधो  पताका तोरन
घर आंगन सजावो।।

चौक रंगोली बनावो
लक्ष्मी पाऊल चलावो।।
डोकरी पुजा करावो
अशी दिवारी मनावो।

दिवारी ऊत्सव छान
प्रसन्न रव्हसे  मन।।
नवा कपडा़ टाकनं
मंडई मेला  देखनं।।

नरक चतुर्थी भयी
लक्ष्मीकी पुजन आयी।।
गोवर्धन गौ खेलायी
बली राजा,पुजे भायी।

दिवारी या सत्यताकी
विकास ज्योती मनमा।।
बढ़ावो शक्ती विद्या की
समाज किर्ती जगमा।।

**- यादोराव चिंधुलाल चौधरी** (वाय सी चौधरी)
गोंदिया

## दिवारी / दिपोत्सव

कार्तिक अमावस ला
रामजी को स्वागत मा
प्रजा नं मनाईतीस
दीपोत्सव अवध मा

लिपा-पोती ना रंगोली
बंधिसे आंबा तोरण
धनतेरस को बाद
नरक चतुर्थी दिन

लक्ष दिप आरास मा
जोडा लक्ष्मी पूजसेत
पाहुणचार लाडू को
पटाखा बी फूटं सेत

गायखुरी को चउक
घर जातो सील पर
खेलावं सेत गायला
गाव को आखर पर

डोकरी-बलीपुजा मा
नैवद्य सुरण-खीर
भाऊबीज ला बहीण
ओवारं सें माय घरं

**- शारदा चौधरी भंडारा**

## दिवारी

दिवारीक् दिवसमा
होसे सडा सारवण
मंग आंगण सजसे
होसे चऊक चांदन

लक्ष्मी पुजाक् दिवस
होसे प्रफुल्लित मन
चऊकलका शोभसे
घर घर को आंगण

सोवावती बलीराजा
चवसुंबी खाटपर
लगावती एक दिवो
मुसरक शेंडापर

भाई बिजको त्यौहार
भाई बहिनको प्यार
बाई ओवारसे भाई
भाई देसे ऊपहार

दिवारीक् दिवसमा
दिवो दिवो को प्रकाश
मीट जाये अंधकार
नव चेतना की आस

**- डॉ. शेखराम परसराम येळेकर नागपूर**

      

***

# ओम मेडिकल स्टोर्स

7887441954, 8698218895

## डॉ. योगेश बंग

9921035558 / 9764915522

पांचुदे कॉम्पलेक्स के सामने
रेलटोली गोंदिया

दिपक भगत

ज़िंदगी के साथ भी, ज़िंदगी के बाद भी

# सौ. सरिता नरेश गौतम

## इन्शुरंश एडवाईज़र एवं फायनासियल प्लानर
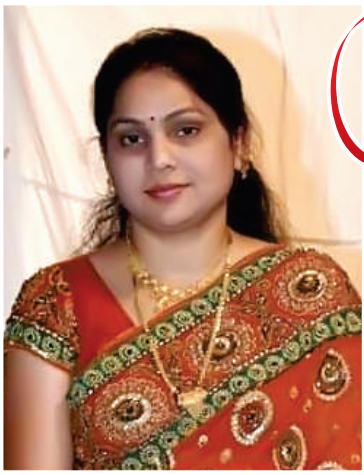
शुभ दिपावली

1. पुरानी पॉलिसी मे पता परिवर्तन, नॉमिनी प्रवर्तन व अन्य सुधार
2. बंद पॉलिसी चालू करवाना तथा परिपक्वता मे सहायता प्रदान करना
3. समय समय पर प्रिमियम जमा करने मे सहायता प्रदान करना
4. पॉलिसी की मॅच्युरिटी पर राशी भुनाने मे सहायता करना
5.आवश्यकता अनुसार पॉलिसी पर लोन दिलवाना
6. मृत्यु तथा दुर्घटना क्लेम मे सहयोग प्रदान करना
7. पॉलिसी स्थानांतरित कराने मे सहायता प्रदान करना
8. नई योजनाओ की विस्तृत जानकारी देना व निवेश करने मे सहायता
9. इन्वेस्टमेंट से संबंधित सभी प्लानिंग की विस्तृत जानकारी देना

Add. D-3/508, Rudraksha Park, Phase II, Near Extol College, E-8 Extn.
Bawadiya Kalan, Bhopal (M.P) **Mobile No. 9630662202**

मुस्कुराते हँसते दीप तुम जलाना, जिवन में नई खुशियों को लाना,
दुख दर्द अपने भूल इस दिवाली, सबको प्यार से गले लगाना !

# शुभ दिवावली

## हेमेंद्र शरणागत

एव्म परिवार की ओर से दिपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ